बुद्ध-वचनामृत

[अट्ठकथा, व्याख्या एवं मूल पालि सहित

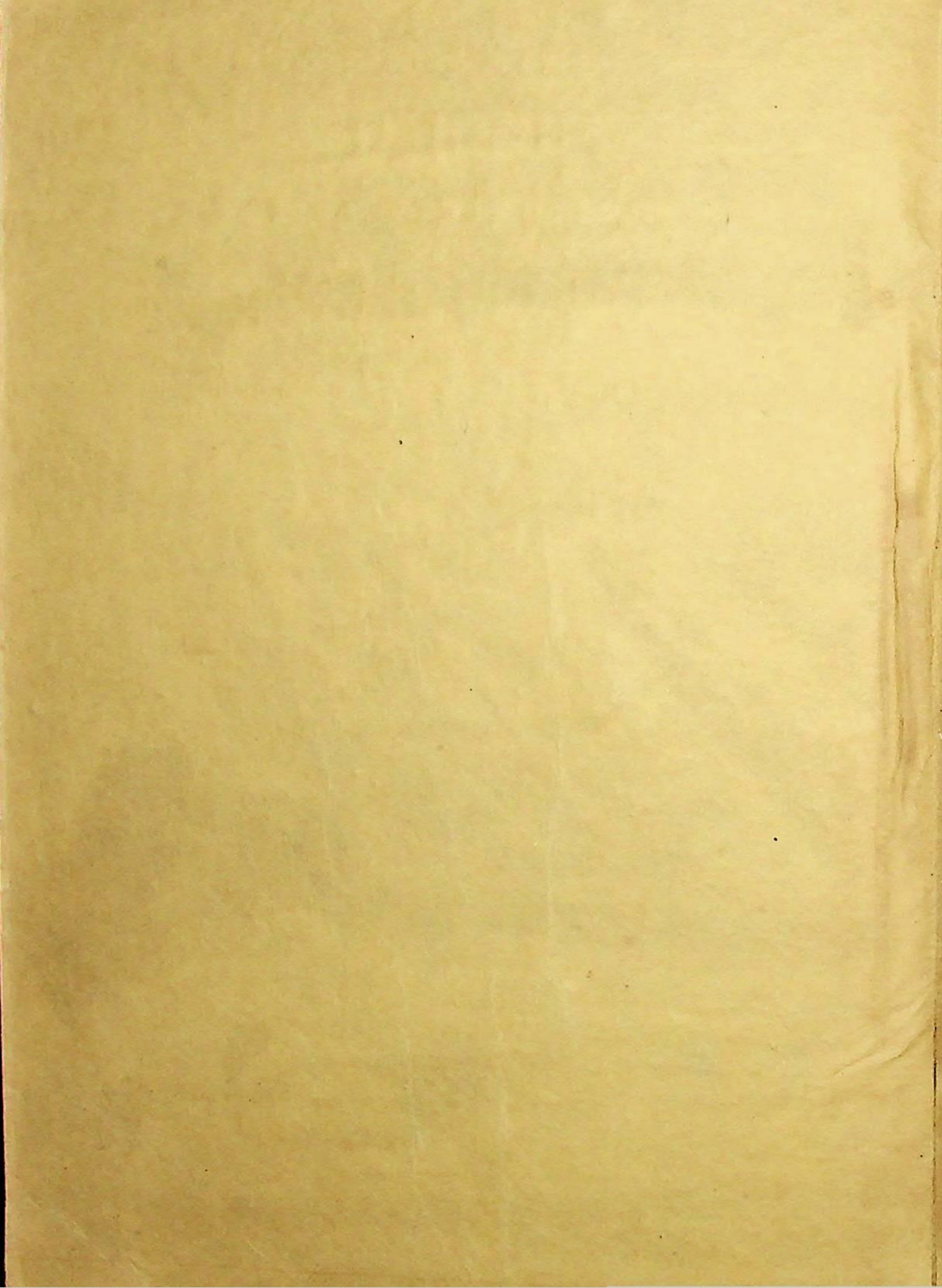
धम्मपद का

हिन्दी-काव्यानुवाद]



कवि-व्याख्याकार—

प्रो० प्रफुल्ल चन्द्र राय 'हर्षेन्दु'




MAHA BODHI BOOK AGENCY
SARNATH VARANASI

बुद्ध-वचनामृत

[अट्ठकथा, व्याख्या एवं मूल पालि सहित

धम्मपद

का

हिन्दी-काव्यानुवाद]

कवि-भाष्यकार—

डा० प्रफुल्ल चन्द्र राय 'हर्षेन्दु'

स्नातकोत्तर विभाग—

(प्राचीन भारतीय एवं एशियायी अध्ययन)

मगध विश्वविद्यालय प्रांगण, बोधगया

विपुल प्रकाशन

मगध विश्वविद्यालय प्रांगण, बोधगया

विपुल प्रकाशन

मगध विश्वविद्यालय प्रांगण, बोधगया

प्रथम संस्करण —

बुद्ध पूर्णिमा—१८ मई १९८१

प्रतियाँ — १०००

मूल्य — [illegible]

मुख्यवितरक–महाबोधि सोसाइटी बोध–गया

मुद्रक -- लक्ष्मी प्रिन्टर्स

जी० बी० रोड गया

समर्पण

शील, स्नेह एवं प्रज्ञा के साक्षात प्रतीक

श्रद्धेय पूज्य महाथेर डा० भदन्त फ्रा धम्ममहावीरानुवत्र

के

श्री चरणों में सादर, सप्रेम तथा सभक्ति समर्पित



महाथेर डा० भदन्त फ्रा धम्म महावीरानुवत्र

(विहाराधिपति, थाई महाविहार, बुद्धगया)

भूमिका

धम्मपद भगवान सम्यक् सम्बुद्धका श्रीमुख-निसृत उपदेश है। नाना घटनाओं में विभिन्न व्यक्तियों को उपलक्ष करके ये उपदेश भगवान बुद्ध ने दिया था। मानव के अध्यातम जीवन की ऐसी कोई समस्या नहीं है कि उसका समाधान धम्मपद में न मिले। गम्भीर मनोयोग से अध्ययन करने से यह प्रतीत होगा कि ढाई हजार वर्ष पहले उन भविष्य द्रष्टा महामानव ने हमारे मन के गोपन भाव, अध्यातम जीवन की प्रधान बाधाओं एवं साधना मार्ग के सब बाधा विपत्तियों का अनुसंधान करते हुये उनके विनाश करने का उपाय प्राञ्जल भाषा में व्यक्त किया। मूल मानव प्रकृति देश-काल निरपेक्ष है। अतीत में धम्मपद जिस प्रकार मानवीय आत्मशुद्धि तथा सत्योपलब्धि का सहायक था, वर्त्तमान में भी ऐसा है, तथा भविष्य में भी ऐसा ही रहेगा।

धम्मपद की प्रत्येक युक्ति सुसंगत है। इसकी उपमायें यथार्थ एवं साधारण मनुष्यों के दैनिक जीवन से संगृहीत की हुई हैं, इसलिये ये पद अनायास बोधगम्य हैं। कोई दुर्बोध दार्शनिक तत्व का स्थान इसमें नहीं है। इसलिये धम्मपद शीघ्र मानव हृदय को स्पर्श करता है एवं शान्तिकामी मावन समाज के लिये उपादेय है।

पालि सुत्तपिटक के पाँच भाग हैं, जिस में पाँचवाँ है खुद्दक निकाय। खुद्दक निकाय में १५ पुस्तकें हैं जिसमें दूसरी पुस्तक का नाम धम्मपद है।

धम्मपद के बारे में भदन्त आनन्द कौशल्यायन ने अपना मन्तब्य प्रकट करते हुये कहा है कि यदि कोई किसी एकमात्र पुस्तक को सारे

जीवन का साथी बनाने की इच्छा करता है तो विश्व के ग्रन्थागार में धम्मपद से उत्कृष्ट पुस्तक मिलना असम्भव है । अर्थात वह पुस्तक सिर्फ धम्मपद ही है ।

प्रो॰ A. J. Edmunds ने धम्मपद की भूमिका में लिखा है "एशिया महादेश में यदि कभी कोई अमर ग्रन्थ रचित हुआ तो वह है धम्मपद ।'

बौद्ध साहित्य का सबसे सुन्दर सबसे महत्वपूर्ण एवं काव्यमय भाव का परिचय मिलता है धम्मपद की सुभाषित पदावलियों में ।

History of Sanskrit Literature P. 370

धम्मपद में रहस्य या तत्व विचार पर अधिक बल नहीं दिया गया है इसके फलस्वरूप यह दुनिया के श्रेष्ठ धर्मग्रन्थों में असाधारण रूप से विशिष्टता प्राप्त ग्रन्थ हो गया । तत्वविचार के स्थान पर यहां मिलता है केवल व्यवहारिक बुद्धिका प्रयोग, जो आत्मप्रत्यक्ष और जीवन की सर्वविध वास्तविकता की दृढ़ भित्ति पर प्रतिष्ठित है,—The Buddha, Way of Virtue (**1912**) Preface P. 16.

विश्वभारती विश्वविद्यालय के प्राध्यापक डा॰ प्रबोध चन्द्र सेन महाशय ने अपने 'धम्मपद परिचय' में लिखा है—अन्तराष्ट्रीय महत्व के विचार से धम्मपद के साथ भारतवर्ष के दूसरे किसी ग्रन्थ की तुलना नहीं की जा सकती । गीता-उपनिषद कभी भी धम्मपद के समान विभिन्न जातियों की श्रद्धा और प्रीति अर्जन करने में सक्षम नहीं रहे । वस्तुतः धम्मपद ग्रन्थ से संसार में भारतवर्ष की जो मर्यादा प्रतिष्ठित हुई वह

अन्य किसी दूसरे ग्रन्थ से नहीं हुई है । यही कारण है कि धम्मपद को ही भारतवर्ष का सर्वोत्तम ग्रन्थ कहा जाता है।

राहुल सांकृतायन, जगदीश काश्यप, आनन्द कौशल्यायन एवं धर्मरक्षित आदि पंडित भिक्षुओं ने हिन्दी भाषा में धम्मपद का विविध प्रकारों से अनुवाद किया। लेकिन किसी ने अभीतक संक्षिप्त कहानी के साथ काव्यरूप में नहीं किया यह प्रथम अवसर है जब कि प्रोफेसर डा० प्रफुल्ल चन्द्र राय 'हर्षेन्दु' ने 'बुद्ध-वचनामृत' नाम से सरस काव्य में धम्मपद का अनुवाद किया है। इनका यह अनुवाद सरल प्राञ्जल और सहजबोध्य होने के कारण सर्वसाधारण के लिये अतीव हितकारी होगा। कविता में होने के कारण पढ़ने में, आवृत्ति करने में एवं याद रखने में यह आनन्दमय और सुखमय होगा। "आवृत्ति सर्वधर्म्मानां बोधादपि गरीयसी" का महत्व प्रतिपादित होगा। अन्त में मूल पालि-गाथा रहने से अनुवाद के साथ मिला कर अर्थ ग्रहण करने में पाठकगण सहज रूप से सक्षम हो सकेंगे सबसे अन्त के परिशिष्ट भाग में कवि ने संक्षेप में अपने ढंग से बौध धर्म के महत्वपूर्ण विचारों को व्यक्त किया है।

मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक सभी हिन्दी-भाषी जन के लिये मंगलदायक होगी। मैं इस पुस्तके के अधिकाधिक प्रचार और प्रसार की कामना करता हूँ। इस कृति के लिए कवि टीकाकर हर्षेन्दु को आशीर्वाद देता हूँ। इति

अखिल भारतीय भिक्खु संघ	त्रिपिटक वागीश्वर
अस्थायी कार्यालय	भदन्त आनन्द मित्र महाथेर
थाई महाबिहार	संघनायक
बुद्धगया	अखिल भारतीय भिक्खु संघ
२०--२--१९८१	

सूची

ACKNOWLEDGEMENT

I am thankful to the following men and women for giving me voluntary donations for the publication of this poetic Hindi Commentary on Dhammapada –

Sri Jiten Snyam, Chala Buddhist TempleCha lapathar Silbesagar Assam India. 101 Rs.

P. M. Witoon Pasunnachit wat Benchamabo: pitr. Bangkok. Thailand 100 Rs.

Phara Kruplad Viravatra (Boonmi) Wat Ampawan Bangkok 3. Thailand. 100 Rs.

P. M. Santi Phliphol Wat Yaisrisupan, Bangkok 6, Thailand. 100 Rs.

P. M. Samrueng Samercnit Wat Samphraya, Bangkok 2, Thailand. 100 Rs.

P. M. Prakob Vongpornimitr Wat Chanasongram. Bangkok 2, Thailand. 100 Rs.

P. M. Dheerapong Vongphakdee Wat Mai a.mata ros, Bangkok 2, Thailand. 100 Rs.

P. M. Pratheep Inapas, Wat Mahathatu Bangkok 100 Rs.

Miss. Pradhum Inprom, Wat Chanasongram. Bangkok 9, Tnailand. 100 Rs.

P. M. Surasith Jamsawang Wat Rajaburana Bangkok 2 Thailand. 100 Rs.

P. M. Suthon Kamluechai, Wat Phrasri Mahadha- tu Bangkok Thailand 100 Rs.

P. M. Niyom Soontornprueksa 9, Wat Prayurwongsawas, Bangkok 9, Thailand 50 Rs.

निवेदन

हिन्दी के कवियों ने अपनी लेखनी से भगवान बुद्ध के प्रति अपनी श्रद्धांजलि कुछ सीमातक अर्पित की है। उन्हीं कड़ियों में मेरी यह श्रद्धांजलि है। इस पुस्तक में लोगों के लिए कल्याणकारी संदेश हैं। महाकवि अश्वघोष के विचारों के अनुरूप ही मैं अनुभव करता हूँ कि मनुष्यों के हित और सुख के लिए न कि विद्वता या काव्य कौशल दिखाने के लिए यह काव्य रचा गया है।

मेरे दृष्टिकोण में धम्मपद विश्व की महानतम रचना है। धम्मपद के मनन करने से मैं बुद्धधर्म के अत्यधिक समीप आता जा रहा हूँ। लगता है मैं बौद्ध हो गया हूँ। इस रचना के बाद एक संतोष का अनुभव करता हूँ कि मैं सम्पूर्ण समाज, बौद्ध धर्म तथा राष्ट्रभाषा हिन्दी की कुछ सेवा कर सका हूँ।

पूज्य धर्मरत्नजी तथा ज्ञान जगत जी के आशीर्वाद से मैं बड़ा ही लाभान्वित होता हूँ। हिन्दी के महान कवि श्री रामेश्वर शुक्ल अंचल का बड़ा ऋणी हूँ जिन्होंने मेरे दुखके क्षणों से लेकर अबतक मुझे स्नेह भेजा और रचना के लिए प्रोत्साहित किया। संट जेवियर हजारीबाग के प्राचार्य डवलु जे० ड्वायर का संपर्क मिलना बड़ा ही सुखद और प्रेरणा दायक है अपने विभागाध्यक्ष प्रो० उपेन्द्र ठाकुर, संगमन के अध्यक्ष, प्राचार्य विश्वनाथ सिंह, गया कालेज के प्राचार्य डा० विश्वनाथ प्रसाद का स्नेह सदा मिलता रहता है। लक्ष्मी प्रिन्टर्स के मालिक श्री प्रहलाद प्रसाद ने छपाई में काफी सहयोग किया।

प्रफुल्ल चन्द्र राय 'हर्षेन्दु'

वन्दना

बुद्धम शरणम गच्छामि

सत्य ज्ञान मुक्तिः के हित में, बुद्धम शरणम गच्छामि
धम्मम शरणम गच्छामि, संघम शरणम गच्छामि
सकल विश्व के नरसुख हितमें, बुद्धम शरणम गच्छामि
धम्मम शरणम गच्छामि, संघम शरणम गच्छामि

कण कण भव के शोक भरा है
जन्म जरा मरणान्त धरा है
तीनों का बस प्रतिफल लगता
कष्ट कष्ट सब कष्ट भरा है

तभी सोच मैं अपने हितमें, बुद्धम शरणम गच्छामि
धम्मम शरणम गच्छामि, संघम शरणम गच्छामि

मृग मरीचि वैभव दुनिया है
प्राणी सब पल की चिड़िया है
काल शक्ति के आगे नर भी
मिट्टी कागज की गुड़िया है

ऐसे में मैं अपने हित में, बुद्धम शरणम गच्छामि
धम्मम शरणम गच्छामि, संघम शरणम गच्छामि

नश्वर भव में एक सफर है
बुद्ध धर्म की अष्ट डगर है
स्वर्ग मोक्ष पुण्यों के खातिर
बुद्ध मार्ग ही स्वच्छ सफर है

यही सोच मैं अपने हित में बुद्धम शरणम गच्छामि
धम्मम शरणम गच्छामि, संघम शरणम गच्छामि

पंचशील का व्रत मैं धरता
नहीं किसी की हिंसा करता
चोरी झूठ से चित हटाकर
मिथ्याचार सुरा मत गहता

तभी सोच मैं सब के हित में, बुद्धम शरणम गच्छामि
धम्मम शरणम गच्छामि, संघम शरणम गच्छामि

भव के सब नर मित्र बनाऊँ
तुष्टि प्रेम का गेह रचाऊँ
दया भाव ले कर नर सेवा
शांति शांति का पाठ पढ़ाऊँ

यही सोच खुद सबके हित में, बुद्धम शरणम गच्छामि
धम्मम शरणम गच्छामि, संघम शरणम गच्छामि

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स

बुद्ध-वचनामृत

यमक वर्ग—१

कुंडलिया संख्या		मूल धम्मपद संख्या
१	अगुआ मन चित-धर्म का, मन सब वृत्ति प्रधान मनमय सब अनुभूतियाँ, मन कर चित निर्माण मन कर चित निर्माण, सुगत यह तथ्य बुझावे नर यदि दुष्टित भाव, वचन या कर्म दिखावे दुख पीछे त्यों जाय, पैर वृष वाहन पहिया शोक नहीं छुट पाय, साथ चल मानस अगुआ	१
२	अंधा चक्खु पाल जभी, प्रातः टहले जाय कीड़े दबकर जेतवन, चरण लगे मर जाय चरण लगे मर जाय, भिक्षु लख भगवन पूछे सुगत भिक्षु बतलाय, चक्खु तो अर्हत ऊँचे अर्हत न जीव मार, भिक्षु कह कैसे अंधा प्राप्त थेर अर्हत्व, बने क्यों हिंसक अंधा	१ कथा
३	सुगत कह पूर्व जन्म में, चक्खु पाल भिखु वैद्य इक स्त्री की आँख को, फोड़ दिया बन वैद्य फोड़ दिया बन वैद्य, आँख जब स्त्री बिगड़ी बनूँ बाल सह भृत्य, कही यदि आँखें सुधरी दवा वैद्य कर ठीक, स्त्री पर झूठ बिलखती आँखें और खराब, वचन से मुकर फटकती	१ कथा

कु० सं०		ध० सं०
४	पुनः वैद्य अति क्रोध सें, दूजा मलहम डाल लो अच्छी दवाई यह, ठीक करे तत्काल ठीक करे तत्काल, आँख में जभी लगाई बिलकुल दृष्टि बिलुप्त, नार यों आँख गमाई गाथा कह भगवान, पाप वह चक्षु सतावे पाप नहीं छुट पाय, रूप वह सहज दिखावे	१ कथा
५	अगुआ मन चित-धर्म का, मन सब वृत्ति प्रधान मनमय सब अनुभूतियाँ, मन कर चित निर्माण मन कर चित निर्माण, सुगत यों तथ्य बुझावे नर यदि हर्षित भाव, वचन या कर्म दिखावे सुख पीछे त्यों आय, साथ ज्यों साया चलुआ स्वच्छ चित्त दे मोद, हर्ष ले मन जों अगुआ	२
६	कृपण विप्र श्रवस्ती के, अदीन पूर्वक नाम इकलौता था सुत उसे, मट्ठ कुण्डली नाम मट्ठ कुण्डली नाम, उसे जब रोग दबावे महा कृपण पर बाप, खर्च ना दवा करावे मरणासन हो पुत्र, बुद्ध लख नमः पुकारे कर प्रसन्न मन बुद्ध, तवंतिस स्वर्ग सिधारे	२ कथा
७	अपने मन में मनुज यदि, व्याकुल हो ले क्षोभ उसने मुझे डाँट दिया, मार लूट का क्षोभ मार लूट का क्षोभ, असुक ने जीता सोचे उनका वैर न शान्त, अगर जो पकड़े सोचे कह भगवन समझाय, वैर मन वैर बढ़ावे जो पाले मन क्षोभ, द्वेष को और चढ़ावे	३

कु० सं० ध० सं०

८ अपने मन में मनुज यदि, मत व्याकुल तज क्षोभ ४
डाँट बोध सब त्याग दे, मार लूट तज क्षोभ
मार लूट तज क्षोभ, अमुक मत जीता सोचे
उनका वैर सुशान्त, नहीं जो पकड़े सोचे
कह भगवन समझाय, क्षोभ जो पूर्ण हटावे
पूर्ण शान्त रख चित्त, वैर सब घृणा मिटावे

९ आस चचेरा बुद्ध के, थुल्ल तिस्स शुभ नाम ३-४ कथा
वृद्धम बन दीक्षित हुए, जेतवनम विश्राम
जेतवनम विश्राम, नहीं वे आदर करते
अग श्रावक वर भिक्षु, सहज अपमानित करते
आगन्तुक कुछ भिक्षु, थुल्ल को डाँट सुनावे
थुल्ल रोय कह बुद्ध, बुद्ध तब बोध बुझावे

१० वैर शान्त न होय कभी, वैरी कर संसार ५
वैर शान्त मित भाव से, धर्म सनातन सार
धर्म सनातन सार, पुरातन तथ्य कहावे
अवैरी प्रीति भाव, मात्र भव वैर मिटावे
कह भगवन समझाय, वैर तो वैर बढ़ावे
मित्र भाव गह मित्र, मित्र गुण शत्रु मिटावे

११ कुल कन्या यक्षीण हो, सौत बीच बहु डाह ५ कथा
जन्म जन्म कई लड़तीं, खत्म नहीं पर डाह
खत्म नहीं पर डाह, अन्त में बुद्ध मिटावे
सुगत शान्त कर सौत, द्वेष यह जन्म छुड़ावे
गाथा कह समझाय, यक्षिणी द्वेषम डाहो
कुल कन्या के पुत्र, नहीं तुम अब खा पाओ

क्र० सं०		ध० सं०
१२	झगड़ालू न जानते, वे न रहें संसार इसका जो विचार करे, शान्त कलह भंडार शान्त कलह भंडार, लोग तब शाँति कमावे कर झगड़ा शठ लोग, परस्पर द्वेष बढ़ावे कह भगवन समझाय, कोई न भव रह पावे जो कर इसका ध्यान, कलह सब कष्ट मिटावे	६
१३	घोषितराम विहार में, भिक्षु रहे दो झुंड विनयधर औ धर्मकथित, नेता दोनों झुंड नेता दोनों झुंड, उभय लड़ बिगड़े ऐसे सुगत बात मत मान, परस्पर झगड़े ऐसे सुगत अरण्यम जाय, वृष्टि पल वहीं बितावे उपासक जभी जाय, गाथा तब मुनि सुनावे	६ कथा
१४	विहारी शुभ देख सभी, भव जो करे विहार इन्द्रिय संयम ना रखे, नहीं माप आहार नहीं माप आहार, नहीं कर श्रम व धंधा काम चोर यों जीव, फसे गिर मारक फंदा ज्यों दुर्बल तरु शीघ्र, झोलकर वात गिरावे त्यों नर भोगम लिप्त, शीघ्र ही मार गिरावे	७
१५	अशुभ देख विहार करे, संयम इन्द्रिय ध्यान उद्योगी श्रद्धालु जो, भोजन मात्रा जान भोजन मात्रा जान, उसे मत मार डिगावे जैसे अंधड़ ठोस, शैल को नहीं हिलावे कह भगवन समझाय, अशुभ लख जेहि विहारी बने ठोस ज्यों शैल, मनुज कह सुधी विहारी	८

क्रं० स०　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　ध० सं०

१६ कोशलपुर सेतव्य के, चूल काल महकाल ७-८ कथा
वणिक भाई दीक्षित हो, अर्हत ले महकाल
अर्हत ले महकाल, चूल पर भोग विलासी
पकड़ स्त्रियाँ चूल, वस्त्र ले उजला फाँसी
महाकाल पर प्रात, जाल ना स्त्री आवे
ऋद्धि बल से छूट, सुगत लख तथ्य सुनावे

१७ करे न चित मल दूर जो, पहने पर काषाय　　　९
सत्य विहीन असंयमित, योग्य न पट कहलाय
योग्य न पट कहलाय, पीत पट तथ्य जनावे
जो नर सयम हीन, वस्त्र यह व्यर्थ धरावे
कह भगवन समझाय, शुद्ध जो मन कर पावे
वही भिक्षु सच सन्त, पीत क्या अर्थ जनावे

१८ जिसने त्यागा चित्त मल, बैठ शील आधार　　　१०
संयम सत्यम युक्त जो, पीत वस्त्र अधिकार
पीत वस्त्र अधिकार, पीत पट तथ्य जनावे
जो त्यागे चित मैल, वस्त्र तब पीत धरावे
कह भगवन समझाय, सत्य जो संयम लावे
गहे तभी काषाय, स्वच्छ जब अन्तः पावे

१९ राजगीर वासी सभी, उपासक सभी लोग ९-१० कथा
सारिपुत्र उपदेश सुन, संघम भोजन भोग
संघम भोजन भोग, सेठ महार्घ चढ़ावे
अगर दान घट जाय, बेच यह वचन सुनावे
देवदत्त ले वस्त्र, पहन कर लोग दिखावे
जान भिक्षु से बात, सुगत पद तथ्य सुनावे

कुं० सं० घ० सं०

२० समझे सार असार को, सार: कहे असार ११
पड़ मिथ्या संकल्प नर, नहीं पाय सच सार
नहीं पाय सच सार, मूर्ख यों भ्रमित फिरावे
मूढ़ झूठ कह सांच, सांच को झूठ बतावे
कह भगवन समझाय, ज्ञान जो नर ना अरजे
झूठ धारणा लाय, सार नहीं सार समझे

२१ समझे सार: सार को, अरू असार असार १२
जो सम्यक संकल्प युत, जान पाय सच सार
जान पाय सच सार, विज्ञ सच तथ्य उठावे
सुधी झूठ कह झूठ, सांच को सांच बतावे
कह भगवन समझाय, धारणा सच जो अरजे
कहे झूठ को झूठ, सार को सारम समझे

२२ मौदगलायन सारि कभी, पहुँचे संजय पास ११·१२ कथा
संजय उनके पूर्व गुरु, कहा चलें मुनि पास
कहा चलें मुनि पास, तड़क कर संजय बोला
मैं न चलूँ बुध पास, अकड़ कर संजय बोला
पंडित तेरा बुद्ध, सुधी पर होते थोड़े
शठ आवे मम पास, पड़ूँ ना बुद्ध बखेड़े

२३ मौद सारि चल फिर कहे, संजय की तब बात ११-१२ कथा
भगवन सुनकर शिष्य से, गहे न दुख आघात
गहे न दुख आघात, पुनः वे शिष्य बुझावें
झूठ धारणा तथ्य, शिष्य को बोध बुझावें
कह गाथा भगवान, ठीक ना संजय समझे
मिथ्या ले संकल्प, झूठ को सत्यम समझे

कु० सं० धं०सं०

२४ जैसे वृष्टि बून्द सहज, कुच्छादित घर जाय १३
वैसे विगलित चित्त में, राग सहज घुस पाय
राग सहज घुस पाय, अविकसित राग उठावे
चंचल मन के जीव, लोभ के चक्र फिरावे
कह भगवन समझाय, राग घुस शठ में वैसे
फटा पुराना धाम, जाये जल वृष्टि जैसे

२५ जैसे छाय घर कुशल, जल वृष्टि नहीं जाय १४
वैसे विकसित चित्त में, राग नहीं घुस पाय
राग नहीं घुस पाय, सुभावित राग हटावे
सुदृढ़ मन के जीव, लोभ को दूर भगावे
कह भगवन समझाय, सुधी रोक राग वैसे
सुन्दर छादित धाम, वृष्टि जल रोके जैसे

२६ भ्रात मौसेरे बुद्ध के, थेर नन्द शुभ नाम १३-१४ कथा
पत्नी की स्मृति लिए, उदासीन धम नाम
उदासीन धम नाम, सुगत नन्दम को लाये
देख नन्द यह स्वर्ग, अप्सरा को दिखलाये
तुम यदि इनको चाह, व्रत ब्रह्मचर्य उठाओ
चन्द दिवस में नन्द, देख अर्हत तुम पाओ

२७ पापी दोनों लोक में, पावे अति ही शोक १५
इह लोक रह शोक करे, अपर लोक जा शोक
अपर लोक जा शोक, कर्म लख नीच दुखावे
अपने मैले कर्म, देख वह कष्ट उठावे
कह भगवन समझाय, शोक सब पावे पापी
यहाँ वहाँ सब शोक, शोक ही पावे पापी

कु॰ सं॰ | ध॰ सं॰

२८ चुन्द सूकरिक नर सदा, सुअर मार भर पेट १५ कथा
अन्त समय दुर्गत उठा, भू सतहों पर लेट
भू सतहों पर लेट, सुअर सम वह चिल्लावे
मर कर जाय अवीचि, नरक में तन दहकावे
जीवन भर कर पाप, तभी ना होश उघावे
अन्त क्षण यही जीव, बहुत ही शोक उठावे

२९ पुण्यवान प्रमोद करे, भुवन लोक परलोक १६
अपने कर्म विशुद्ध लख, मोद करे द्विलोक
मोद करे द्विलोक, हर्ष पर हर्ष उठावे
नर जो कर भव पुण्य, उभय भव मोद कमावे
कह भगवन समझाय, पुण्य नर देख जुड़ावे
भुवन लोक ले मोद, पुन: मर तुषितम पावे

३० श्रावस्ती धार्मिक लिए, गाथा कह भगवान १६ कथा
जीवन भर पुण्यम करे, कर्म कुशल ले ध्यान
कर्म कुशल ले ध्यान, पड़े जब मृत्यु शय्या
देखे रश्मि प्रसन्न, शांति सुख मरणम शय्या
मरण समय विधि सोच, नर अग्र जन्म कमावे
यों धार्मिक पुनवान, जन्म तुषित बीच पावे

३१ पापी कर सन्ताप भव, अपर लोक सन्ताप १७
यहाँ वहाँ सन्ताप सब, उभय लोक सन्ताप
उभय लोक सन्ताप, दुर्गति व कष्टम पावे
मैंने कीया पाप, सोच सन्ताप उठावे
कह भगवन समझाय, पाप जब आंके पापी
नर्क लोक में जाय, कष्ट से कांपे पापी

कु० सं० ध० सं०

३२ देवदत जीवन सकल, वैर सुगत से लाय १७-कथा
कई बार तो देव ने, चाहा मार गिराय
चाहा मार गिराय, अन्त में वह पछतावे
वृद्ध होय अति जीर्ण, सुगत से मिलन पठावे
बीच राह पर डूब, बुद्ध से मिला न पापी
पुस्करणी धँस डूब, नरक में पहुँचा पापी

३३ पुण्यव्रती सुख भोगकर, भुवन लोक परलोक १८
उभय लोक प्रमोद करे, सत्कर्मी जो लोग
सत्कर्मी जो लोग, सोच आनन्द उठावे
मैं कर पाया पुण्य, सुगति गुन लाभ उठावे
कह भगवन समझाय, सफल जो पुण्यव्रती
तुषित लोक में जाय, प्रमोद भव दोनो व्रती

३४ सेठ अनाथः पीण्ड की, कन्या सुमना नाम १८ कथा
सकदागामिनी बन वहीं, पहुँची झट सुरधाम
पहुँची झट सुरधाम, सेठ तब रोये बिलखे
जाय सुगत के पास, शोक कह अपने उर के
सेठ सुगत तब पूछ, दशा क्या सुमना पायी
भगवन सेठ बुझाय, तुषित गति सुमना पायी

३५ कोई भले पाठ करे, बहुत संहिता ग्रन्थ १९
पड़े अगर प्रमाद वही, करे न विरचित ग्रन्थ
करे न विरचित ग्रन्थ, मात्र वह बन चरवाहा
गिने अन्य की गाय, ज्ञान धन लापरवाहा
कह भगवन समझाय, पढ़ै ही त्रिपिटक कोई
ग्रन्थ पाठ कर सिर्फ, बने श्रमन नहीं कोई

कु० सं० धं० सं०

३६ कोई भले पाठ करे, मात्र अल्प ही ग्रन्थ २०
आचरण पर धर्म करे, राग द्वेष तज पन्थ
राग द्वेष तज पन्थ, मुक्त चित बने सचेता
अनासक्त द्विलोक, श्रमण बन लाभम लेता
कह भगवन समझाय, अल्प ही जाने कोई
करे आचरण धर्म, तुल्य तब और न कोई

३७ श्रावस्ती के मित्र दो, दीक्षित गुन उपदेश १९,२०कथा
एक शीघ्र अर्हत गहे, अन्य वही गत भेष
अन्य वही गत भेष, भिक्षु गुरु रहे पढ़ाते
अर्हत ले सब शिष्य, किन्तु गुरु रहे पढ़ाते
भगवन कर कुछ प्रश्न, नहीं पर गुरु कह पाये
अर्हत जो ले मित्र, शीघ्र ही सभी बतावें

अप्रमाद वर्ग–२

कुंडलियां मूल
संख्या धम्मपद संख्या

३८ अप्रमाद अमृत तरह, मृत्यु सम है प्रमाद २१
अप्रमादी नहीं मरते, मरते लेय प्रमाद
मरते लेय प्रमाद, अर्थ रस भाव उठावे
अप्रमाद वह तत्व, नर चिर जीवित बनावे
कह भगवन समझाय, जीय कर मरे प्रमादी
मरकर जीये जीव, प्राणी जो अप्रमादी

३९ पंडित अप्रमाद विषय, अच्छा से ले जान २२
सब बुद्ध के दिये धरम, लिप्त करे स्व प्राण
लिप्त करे स्व प्राण, पुनः वे प्रमुदित होते
अप्रमाद आनन्द, परम ले भाषित होते
कह भगवन समझाय, भोग बस पंडित भोगे
पूर्ण अखंडित भोग, और न कोई भोगे

४० अभ्यासी चिर ध्यान नित, पराक्रमी औ धीर २३
परम पद निर्वाण गहे, पुरुष जेहि दृढ़ वीर
पुरुष जेहि दृढ़ वीर, वही योग क्षेम पावे
अविद्या दीठि काम, और भव सब को डाहे
कह भगवन समझाय, निर्वाण जो प्रत्याशी
गुण उत्तम सब लाय, ध्यान का बन अभ्यासी

कुं सं॰ ध॰ सं॰

४१ कौशाम्बी के भूप का, उदयन सुन्दर नाम २१,२२,२३कथा
मागन्दिय सामावती, दोनो रानी नाम
दोनो रानी नाम, समा थी बुद्ध भक्तिनी
मागन्दि बुद्ध बैर, चित की परम पिशाचनी
मागन्दिय ले बैर, महल में सभी जलायी
सखियाँ सह सौ पाँच, सब को जीवित जलायी

४२ कौशाम्बी के भूप तब, दौड़े भगवन पास २१,२२,२३कथा
पूछेय सामा की गति, पीड़ित हृदय हताश
पीड़ित हृदय हताश, सुगत तब भूप बतावे
मर कर ले अमरत्व, स्वर्ग में सुगति बतावे
कुछ बन श्रोतापन्न, कुछ बन सकृदागामी
अनागामी बन कुछ, शांत सुन नृप कौशाम्बी

४३ उद्योगी सचेत पुरुष, कर पवित्र जो कर्म २४
संयत धर्मम जीविका, सोच करे ज़ो कर्म
सोच करे जो कर्म, प्राणी जो अप्रमादी
वही करे यश प्राप्त, प्रतिष्ठित सुख बहुभागी
कह भगवन समझाय, कीर्ति का वह बन भोगी
कर पवित्र जो कर्म, ध्यान ले बन उद्योगी

४४ राजगीर में सेठ सुत, कुम्भाघोषक नाम २४-कथा
अहिघातक के रोग से, मातु पिता सुरधाम
मातु पिता सुरधाम, कुम्भ जब बालक छोटे
धन चालिस करोड़, पिता पर रख कर छोड़े
नहीं भोगकर द्रव्य, कुम्भ स्व जन्म बितावे
कर सब स्व उद्योग, दमाद नृप बन हर्षावे

कु० सं० ध० सं

४५ मेधावी को चाहिये, गढ़े एक यौं द्वीप २५
संयम दम उद्योग अरु, अप्रमाद का द्वीप
अप्रमाद का द्वीप, अडिग बन बाढ़ हरावे
अपने हित यह द्वीप, पुरुष गढ़ उचित बनावे
कह भगवन समझाय द्वीप यों गढ़ मेधावी
जो न बहे बहु बाढ़, उचित गढ़ नर मेधावी

४६ राजगीर के वेणुवन, युगल भाई सुनाम २५-कथा
महापन्थ चुलपन्थकम, भाई दोनो नाम
भाई दोनो नाम, महा झट अर्हत पावे
चुल पन्थक मतिमन्द, पाठ कर याद भुलावे
लेकर कह उपदेश, शीघ्र वह पाठ सुनावे
शास्ता सुन उपदेश, सुपद वह तादि उघावे

४७ अनाड़ी जो मूढ़ पुरुष, सुमग्न रहे प्रमाद २६
सुधी श्रेष्ठ धन की तरह, सुरक्षे अप्रमाद
सुरक्षे अप्रमाद, अर्थी रस भाव उठावे
मूढ़ मस्त होमत, कुपथ में मग्न फिरावे
कह भगवन समझाय, अप्रमाद हुँडी गाढ़ी
बुद्धिमान रख जोग, तजे मद मूढ़ अनाड़ी

फंसो नहीं प्रमाद में, मतरत होओ काम २७
कभी न होओ लिप्त तुम, कुकाम रति जो काम
कुकाम रति जो काम, पुरुष जो नहीं प्रमादी
करके मन में ध्यान, बने अति सुख का भागी
कह भगवन समझाय, प्रमाद पूर्ण भगाओ
मूर्खे फंसे प्रमाद, नहीं तुम सुधी भुलाओ

०कुं सं० धं० सं०

४९ बाल नक्षत्र घोषणा, श्रावस्ती में फाग २६,२७कथा
भिक्षु उपासक सब लिए, दुष्कर सुप्त व जाग
दुष्कर सुप्त व जाग, सात दिन छिप घर काटे
दिवस आठठाँ प्रात, संघ को भोजन बांटे
सभी उपासक क्षुब्ध, कान फट सुनके गाली
लोग नहीं कुछ शर्म, बात यों नीच उछाली

५० लेकर अप्रमाद सुधी, त्यागे जभी प्रमाद २८
शोक रहित बन वह लखे, चढ़ प्रज्ञा प्रासाद
चढ़ प्रज्ञा प्रासाद, दुखी जन जो अज्ञानी
खड़ा शैल चढ़ देख, भूमि ज्यों वस्तुम प्राणी
कह भगवन समझाय, धीर नर वैसे देखे
नर अज्ञायी जीव, सुधी ले प्रज्ञा देखे

५१ थेर महाकस्सप गुने, ऋद्धि बल के ज्ञान २८-कथा
अप्रमादी प्रमादी के, मरण जन्म लें जान
मरण जन्म लें जान, वहां तब भगवन आये
महा कस्सप को तब, यही उपदेश सुनाये
कह भगवन कस्सप, और न पंडित ऐसा
जन्म मृत्यु जन जान, एक यों बुद्धम ऐसा

५२ अप्रमादी पुरुष कहें, पुरुष प्रमादी बीच २९
जैसे जागृत नर बुझें, सोये नर के बीच
सोये नर के बीच, सुधी यों आगे दौड़े
जैसे दुर्बल बीच, अश्व जो तेजम दौड़े
कह भगवन समझाय, मूर्ख जो सुप्त प्रमादी
सुधि ले ज्ञानी जाग, पुरुष वही अप्रमादी

कुं०स०　　　　　　　　　　　　　　　　ध० सं

५३ श्रावस्ती के जेतवन, रहे दो भिक्षु मित्र २९कथा
भगवन से प्रव्रजित हो, चले वनम दो मित्र
चले वनम दो मित्र, एक पद अर्हत पावे
दूजा तापे आग, मौज में समय बितावे
उनसे मिल भगवान, आलसी स्वयं सराहे
बनके स्वयं प्रमत्त, वचन कटु सुधी सुनावे

५४ इन्द्र देवता श्रेष्ठ बने, लिये जो अप्रमाद ३०
अप्रमाद सराह सभी, निन्दे सदा प्रमाद
निन्दे सदा प्रमाद, अर्थ रस भाव उठावे
सभी देवता बीच, इन्द्र ही श्रेष्ठ कहावे
कह भगवन समझाय, मनुज सब समझे इसको
अप्रमाद गुण श्रेष्ठ, प्रशंसे हर जन इसको

५५ कूटागार विहार में, करे महाली प्रश्न ३० कथा
भगवन से सुरराज हित, पूछ अनेकों प्रश्न
पूछ अनेको प्रश्न. सुगत तब उसे बतावे
अप्रमाद ले इन्द्र, देव में इन्द्र कहावे
अप्रमाद गुण द्रव्य, इन्द्र वर ढेर जुटावे
सभी आर्य जन बुद्ध, इन्द्र यों देख लुभावे

५६ अप्रमाद जो भिक्षु रत, जो प्रमाद भय खाय ३१
आग तरह लघु बंध को, जला अग्र बढ़ जाय
जला अग्र बढ़ जाय, अर्थ रस भाव उठावे
अप्रमाद जो लाय, बंध से मुक्त फिरावे
कह भगवन समझाय, प्रमादम दूर भगाओ
अप्रमाद धन जोग, शोक से मुक्त फिराओ

कुं० सां० धं० सां०

५७ भिक्षु एक भगवान सों, गहले कर्मस्थान ३१ कथा
भगवन से उपदेश ले, करे वनम प्रस्थान
करे वनंम प्रस्थान, सुफल न ध्यान निहारे
लौट भिक्षु आरण्य, आग लख पुनः विचारे
आर्य मार्ग का ज्ञान, भिक्षु का ज्ञानम खोले
तभी आय कह बुद्ध, सत्य तुम भिक्षुम बोले

५८ अप्रमाद जो भिक्षु रत जो प्रमाद भय खाय ३२
उसका कभी पतन नही, निर्वाणम सट आय
निर्वाणम सट आय, अर्थ रस भाव उठावे
अप्रमाद जो लाय, निर्वाण शीघ्र जुटावे
कह भगवन समझाय, प्रमाद नर जो हटावे
अमृत पद फल पाय, अप्रमाद यदि जुटावे

५९ श्रावस्ती निकटस्थ में, निगम नाम इक ग्राम ३२-कथा
तिस्स थेर प्रवजित हो, निगम वही रह धाम
निगम वही रह धाम, वहीं ही भिक्षा करते
कहीं दूर मत जाय, वहीं रह हर्षित रहते
भिक्षु जान यह बात, सुगत को जाय सुनावे
सुगत जान सब बात, तिस्स को सही बतावे

चित्तवर्ग—३

कुंडलियां मूल

संख्या धम्मपद संख्या

६० चित्त क्षणिक चंचल अधिक, वश रख रोक असाध्य ३३
चित्त निवारण भी कठिन, मानव चित असाध्य
मानव चित्त असाध्य, करे पर सीध मेधावी
ज्यों निर्माणक वाण, ठीक कर चित मेधावी
कह भगवन समझाय, उचित चित वश में रखना
इच्छाचारी न बन, क्षणिक मन चंचल कसना

६१ जैसे छटपट मीन थल, सर निकाल यदि फेंक ३४
त्यों तड़फड़ यह चित्त है, मार फंद दें फेंक
मार फंद दें फेंक, अर्थ रस भाव उठावे
चित पर मार प्रहार, चित को जो दहकावे
कह भगवन समझाय, मीन थल छटपट जैसे
मार फंद में वास, चित है हरदम वैसे

६२ नगर चालिका बीच में, चालिक नाम पहाड़ ३३,३४कथा
एक समय भगवान मुनि, चढ़ कर करें विहार
चढ़ कर करें विहार, टहल कर मेघी सेवा
किमिकाला तट जाय, टहल तज छोड़े सेवा
सुगत लाख समझाय, मेघी पर कुछ न माने
इच्छाचारीम बन, करे जो मन में ठाने

कु' सं०	ध० सं०

६३ जिस मन का निग्रह कठिन, जो हल्का स्वभाव ३५
जँह चाहे झट चल पड़े, यों जिसका स्वभाव
यों जिसका स्वभाव, दमन कर चित्तम ऐसे
दान्त बने जो चित्त, बने सुखदायी जैसे
कह भगवन समझाय, मनुज जो चंचल मनका
करे चित्त वह शान्त, तभी हो दर्शन सुखका

६४ कोशल में पर्वत निकट,मातिगाम इक ग्राम ३५ कथा
रहती एक उपासिका, चित्त पुरुष ले जान
चित्त पुरुष ले जान, भिक्षु तब भोजन पावे
एक भिक्षु तँह जाय, नारी लख टिक न पावे
भगवन भिक्षु बुझाय, पुनः तुम वहीं पधारो
और नहीं तो चित्त, स्वयं ही यहाँ संवारो

६५ जिस मन की परखन कठिन, जो मन अति चालाक ३६
जँह चाहे झट चल पड़े, बिन अंकुश मन चाक
बिन अंकुश मन चाक, चित्त यों रक्षे ज्ञानी
सुरक्षित जेहि चित्त, सुखद तब भोगे प्राणी
कह भगवन समझाय, चित्त की परखन दुष्कर
वश में कर यदि चित्त, भोग कर जीवन सुखकर

६६ श्रावस्ती का सेठ सुत, उत्कण्ठित हो जाय ३६ कथा
पुनः भिक्षु से बोल वह, घर में धर्म कराय
घर में धर्म कराय, सुगत तब बोधे उसको
यदि कठिन सभी जान, सिर्फ तुम वश लो मन को
अगर चित्त वश आय, पूर्ण हो धर्मम तेरा
विनय धर्म सब ठीक, बाद में होवे तेरा

कु० सं० ध० सं०

६७ दूर अति मन गमन करे, विचरे मन एकान्त ३७
निराकार गुहाश्य चितम, सयम कर जो शान्त
संयम कर जो शान्त, मार वंधन छुट पावे
जो नर मन कर शान्त, वही नर मार हरावे
कह भगवन समझाय, चित्त पर संयम लाओ
मार फंद कर छिन्न, मनुज तुम मुक्त फिराओ

६८ श्रावस्ती में भागिनेय, संघरखित एक थेर ३७ कथा
दान रूप द्वि वस्त्र को, गहे कहीं वह थेर
गहे कहीं वह थेर, थेर गुरु चाचा होवे
भागिनेय ले वस्त्र, चरण गुरु चाचा देवे
करें न वे स्वीकार, तभी वे निद्रा लाये
भागिनेय तँह बैठ, गुरु को पंख झलाये

६९ पंख झेल के काल ही, भागिनेय मन आय ३७ कथा
क्यों न वस्त्र यह बेचकर, भेड़ कुछ कीन लाय
भेड़ कुछ कीन लाय, धनी बन स्त्री लाऊँ
अगर न माने बात, राह में स्त्री मारूँ
सुत औ स्त्री साथ, थेर फिर दर्शन पाऊँ
गिरे पंख गुरु चोट, जभी कह ऐसे मारूँ

७० जिसका मन चंचल अधिक, सद्धर्म नहीं जान ३८
श्रद्धा जिसकी चंचला, पूर्ण नहीं हो ज्ञान
पूर्ण नहीं हो ज्ञान, अर्थ रस भाव उठावे
चंचल मन के जीव, नहीं प्रज्ञान जुटावे
कह भगवन समझाय, सद्धर्म वह नर जाने
मन में श्रद्धा लाय, धर्म में निष्ठा माने

कु० सं० ध० सं०

७१ जेहि मन में राग नहीं, चित्त दोष से मुक्त ३६
पाप पुण्य से हीन नर, जागृत रह भय मुक्त
जागृत रह भय मुक्त, अर्थ रस भाव उठावे
जिसके चित्त न लोभ, सजग वन अभय फिरावे
कह भगवन समझाय, पाप जो पुण्यम त्यागे
सब तृष्णा से हीन, तेहि नर भय सब भागे

७२ श्रावस्ती में चित्तहथ, नामक एक किसान ३८ ३९ कथा
बैल ढुंढ़ते एक दिन, भटके विपिन किसान
भटके विपिन किसान, भिक्षु तँह भात खिलावे
दीक्षित हो तब चित्त, बदन काषाय चढ़ावे
पुनः लौट घर आय, पुनः वह मन्दिर धावे
अन्त सातवीं बार, धर्म पद अर्हत पावे

७३ जैसे घड़ा अनित्य है, इस शरीर को जान ४०
यह शरीर रक्षित उचित, सुदृढ़ नगर समान
सुदृढ़ नगर समान, बाद फिर करो लड़ाई
प्रज्ञा ले हथियार, मार से जीत लड़ाई
मार जीत उपरान्त, करो फिर अपनी रक्षा
होय आसक्ति हीन, उचित नित अपनी रक्षा

७४ श्रावस्ती में पाँच सौ, भिक्षुम दीक्षा पाय ४० कथा
कर्मस्थान ग्रहण कर, दूर विपिन में जाय
दूर विपिन में जाय, देवगण वहाँ सतावे
भय भैरव से भीत, लौट वे सुगत सुनावे
भगवन भिक्षु बुझाय, पाठ कर करणीय मेत्ता
सभी कष्ट हो दूर, निडर यह सूत्तम करता

कु० सं० ध० सं०

७५ हाये तुच्छ शरीर यह, शीघ्र चेतना जाय ४१ पद कथा
काष्ठ निरर्थक की तरह, पृथ्वी पर पड़ जाय
पृथ्वी पर पड़ जाय, कथा रस भाव उठावे
तिस्स पूति गत गात, सड़न दुर्गन्ध उठावे
नहा खाट धर बुद्ध, भिक्षु को यों तब बोले
शुष्क बना तन काठ, प्राए ना इसमें डोले

७६ श्रावस्ती का एक नर, दीक्षा धम्मम पाय ४१ कथा
श्रद्धा से नर धर्म ले, नाम तिस्स पड़ जाय
नाम तिस्स पड़ जाय, तिस्स को फूटे फोड़े
नहीं दवा सुन पाय, सहायक उनको छोड़े
पड़ा भिक्षु वह खाट, घृणित कराह उठावे
भिक्षु देह कर स्वच्छ, वचन यह बुद्ध सुनावे

७७ जितनी हानि शत्रु करे, कर शत्रु पर प्रहार ४२
वैरी की वैरी करे, द्वेष भाव आधार
द्वेष भाव आधार, कहीं बढ़ अधिक बुराई
झूठ मार्ग चल चित्त, हानि हो अधिक बुराई
कह भगवन समझाय, शत्रु ना अधिक सतावे
जितना जाय कुमार्ग, मनुज का चित्त दुखावे

७८ श्रावस्ती अनाथ रखे, नन्द नाम गोपाल ४२ कथा
गोरस पंचम दान दे, भगवन को गोपाल
भगवन को गोपाल, सातवाँ दिन जब लौटे
देकर भगवन पात्र, व्याध पथ मार घसीटे
भगवन भिक्षु बुझाय, मरा ना मेरे चलते
नन्द चित्त अति तुच्छ, मरा है जिसके चलते

कुं०सं० धं० सं०

७९ भलाई नहीं कर सके, मातु पिता सम्बन्ध ४३
चल सच जितनी राह पर, चित्त करे प्रबन्ध
चित्त करे प्रबन्ध, अर्थ रस भाव उठावे
चलना सत्य सुमार्ग, मनुज को सही बचावे
कह भगवन समझाय, करे ना अन्य भलाई
मातु पितु नहीं अन्य, चित्त ज्यों करे भलाई

८० नगर सोरेय सेठ सुत, रथ पर हुआ सवार ४३ कथा
अन्य बहुत के साथ हो, स्नान हित विहार
स्नान हित विहार सेठ कात्यायन देखे
चीवर पहने काल, सुवर्ण तन भिक्षु देखे
सेठ पुत्र चित काम, काश यों पत्नी होती
मन में ज्यों यह चाह, देह बन स्त्री होती

८१ स्त्री सदिश सेठ वही, तक्षशिला को जाय ४३ कथा
कर विवाह इक सेठ सुत, पुत्रम द्वि जन्माय
पुत्रम द्वि जन्माय, मित्र मिल कथा सुनावे
महाकात्यायन लाय, क्षमा कर पुरुष बनावे
सभी भिक्षु चिड़काय, पुत्र हैं कबके प्यारे
सुगत भिक्षु समझाय, पुत्र मम त्यागे सारे

--:o:--

पुष्पवर्ग—४

कुंडलियां संख्या		मूल धम्मपद संख्या
८२	पृथ्वी यह संसार जो, जीत सकेगा कौन देव सहित यमलोक को, विजय करेगा कौन विजय करेगा कौन, कौन नर कुशलः ऐसे चुने धर्म उपदिष्ट, ठीक से पुष्पम जैसे कह भगवन समझाय, गुनो सब मनकी पृथ्वी नर मिट्टी जो तत्व, समझ सब तन की पृथ्वी	४४
८३	पृथ्वी को शैक्ष्य जीते, सहित देव यमलोक कुशल शैक्ष्य पुष्पम तरह, चुन धर्मम श्लोक चुन धर्मम श्लोक, अर्थ रस भाव उठावे ज्ञानी वर जो शैक्ष्य, शैक्ष्य भव जीत हरावे कह भगवन समझाय, शैक्ष्य वह श्रावक होवे अर्हत पद के पूर्व, वही स्त्रोता पति होवे	४५
८४	आसन शाला जेतवन, भिक्षुम करे विचार लौट चारिका सांझ पहर, बैठे करे विचार बैठे करे विचार, अमुक कह ऐसी पृथ्वी अमुक जगह की श्याम, अमुक कह पीली पृथ्वी सुगत भिक्षु सुन बात, बतावें पृथ्वी सोचो नर तन गुन आध्यात्म, मनुज तन पृथ्वी सोचो	४४-४५ कथा

८५ जानो तन यह फेन सम, मृग मरीचि समान　४६
मार फंद को तोड़ कर, यम से दूर प्रयाए
यम से दूर प्रयाए, अर्थ रस भाव उठावे
तोड़ मार के फद, मनुज यम दृष्टि छिपावे
कह भगवन समझाय, देह यह फेनम मानो
मृग तृष्णा सम झूठ, देह को क्षयमय जानो

८६ सुगत से श्रावस्ती में, गहले कर्मस्थान ४६ कथा
अर्हत हेतु भिक्षु वही, वन को करे प्रयाण
वनको करे प्रयाण, बहुत प्रयास जुटावे
करके लाख प्रयत्न, पद नहीं अर्हत पावे
लौट छोड़ सब यत्न, बैठ तट राप्ती सोचे
मान मनुज तन फेन, बूंद लख मिटती सोचे

८७ चुनते भोगम पुष्प जो, पुरुष आसक्ति युक्त　४७
धरे मृत्यु ज्यों गाँव को, बाढ़ बहाती सुप्त
बाढ़ बहाती सुप्त, अर्थ रस भाव उठावे
नर जो भोगम लिप्त, मरण झट आय दबावे
कह भगवन समझाय, मनोरथ पुरुष न फलते
काम भोग जो लिप्त, मृत्यु औ नाशम चुनते

८८ प्रसेनजित दासी सुतः, धरे विड़ूडभ नाम ४७ कथा
शाक्यों के विनाश लिए, सोचे प्रातः शाम
सोचे प्रातः शाम, बार त्रि करे चढ़ाई
सुगत रोक जा मार्ग, कहें ना उचित लड़ाई
चौथी बार न रोक, विड़ूडभ शाक्य सतावे
शाक्यम कर उच्छिन्न, बाढ़ निश प्राण गमावे

कु॰ सं॰ धः सं॰

८९ चुनते कामम पुष्प जो, मनुज आसक्ति लिप्त ४८
निज मृत्यु वश बीच करे, काम न जब हो तृप्त
काम न जब हो तृप्त, अर्थ रस भाव उठावे
मरण बीच कर अन्त, तृप्ति ना मनुज जुटावे
कह भगवन समझाय, रखे नर अतिशय तृष्णा
वयस किन्तु नर अल्प, तृप्त ना मानव तृष्णा

९० श्रवस्ती बुद्ध-भक्तिनी, पतिः पूजिका नाम ४८ कथा
पुण्य कर्म कर आश धर, पास चलूँ पति धाम
पास चलूँ पति धाम, शाम में मरी विचारी
प्राण अचानक छूट, रटन ले जान विसारी
भगवन भिक्षु बुझाय, आयु तो होती थोड़ी
फिर भी नर भव लिप्त, मृत्यु तक तृष्णा दौड़ी

९१ जैसे मधुप पुष्प रसे, वर्ण गंध बिन खाय ४९
वैसे साधु भीख गहे, गाँव गाँव में जाय
गाँव गाँव में जाय, मर्म रस भाव उठावे
भ्रमर पुष्प रस खाय, पुष्प ना हानि उठावे
कह भगवन समझाय, भिक्षु भिक्षा कर वैसे
श्रद्धा सुजन बढ़ाय, मधुप रस चाखे जैसे

९२ राजगीर के पास में, निगमम सक्खर नाम ४९ कथा
वहीं एक कंजूस अति, सेठी कोसिय नाम
सेठी कोसिय नाम, एक दिन पूआ खाये
मंजिल सप्तम जाय, सेठ मलपूआ खाये
मौदगलायन जाय, सेठ से दान करावे
सुनके यह सब बात, सुगत यह कथन सुनावे

कु० सं० धं० सं०

९३ गुनो न परके कटु वचन, अन्य न कृत्या कृत्य ५०
अवलोकन केवल करो, अपना कृत्या कृत्य
अपना कृत्या कृत्य, अर्थ रस भाव उठावे
नर लख अपने आप, वचन कटु अन्य भुलावे
कह भगवन समझाय, कर्म तुम अपना सोचो
कर्कश पर की बात, भूलकर अपनी सोचो

९४ श्रवस्ती गृहस्वामिनी, सुगत कीर्तिसुन नाम ५० कथा
एक दिवस संघम सहित, करे भात का दान
करे भात का दान, वहीं आजीवक आवे
पाठिक उसका नाम, दान लख गाली गावे
उपासिका भय खिन्न, सुगत तब बचन उचारें
नहीं ध्यान दो बात, उदान तब मुनि उचारें

९५ जैसे चारु रंग कुसुम, निर्गन्धिम बेकार ५१
त्यों वाणी विरुद्ध चलन, मधुर वाक बेकार
मधुर वाक बेकार, मर्म रस भाव उठावे
वास हीन ज्यों पुष्प, मुकर मधु वाक जनावे
कह भगवन समझाय, धर्म यह पुष्पम जैसे
जो न धम्म सुँघ पाय, निर्गन्ध निरसम जैसे

९६ जैसे सुन्दर वर्ण युत, पुष्प गंध अभिभूत ५२
त्यों वचनम सदृश्य चलन, वाणी सफलीभूत
वाणी सफलीभूत, सुभाषित बन वह वाणी
करे कथन अनुसार, उसी की उत्तम वाणी
कह भगवन समझाय, धर्म कह पुष्पम जैसे
जो धम्मम सुँध पाय, सुगंधित सरसम जैसे

कु० सं० धं० सं०

९७ वासमखतिया मल्लिका, रानी दोनो नाम ५१-५२ कथा
प्रसेनजित की रानियाँ, कौशल राज सुधाम
कौशल राज सुधाम, युगल आनन्द पढ़ावे
किसका कितना ध्यान, सुगत आनन्द सुनावे
आनन्द कहे सुगत, मल्लिका पढ़ती रानी
वासमखतिया मन्द, सुफल ना उसकी वाणी

९८ जैसे फूलों से गुथे, मनुज अनेकों हार ५३
वैसे जन्मे जीव को, उचित पुण्य गुथ हार
उचित पुण्य गुथ हार, अर्थ रस भाव उठावे
हर नर कर अति पुण्य, पुण्य का महल बनावे
कह भगवन समझाय, पुण्य की हार गढ़ाओ
कर जीवन में नेक, मनुज तन सुफल बनाओ

९९ अंग राष्ट्र भद्धिय नगर, धनन्जय एक सेठ ५३ कथा
विशाखा सुपुत्री उसे, सभी प्यार दे सेठ
सभी प्यार दे सेठ, बनी वह बुद्ध भक्तिनी
सात वर्ष में धर्म, बनी वह धर्म भक्तिनी
श्रावस्ती में ब्याह, स्वामी निर्ग्रन्थ माने
वर्द्धन पूर्ण कुमार, समय बित बुद्धम माने

१०० विशाखा मन एक प्रहर, स्मृति मन उद्गार ५३ कथा
दान पुण्य पर ध्यान जा, कह उदान मन सार
कह उदान मन सार, वचन यों मधुरम भावे
भिक्षुम सुन मन भान, गीत सम बचन सुहावे
कह भगवन समझाय, मधुर सब पुष्पम लोरी
पुण्य विशाखा हार, हार ज्यों गुथ मलहोरी

कु० सं०		ध० सं०
१०१	पुष्पों की सुगन्ध नहीं, जाती वायु विरुद्ध चन्दन तगर चमेलियाँ, वास न वायु विरुद्ध वास न वायु विरुद्ध, गंध पर सज्जन उलटी बह सत्पुरुष सुगन्ध, दिशा सब सीधी उलटी कह भगवन समझाय, गंध वर सज्जन उत्तम सन्त गंध अनमोल, श्रेष्ठ बढ़ गंधम पुष्पम	५४
१०२	जूही या चन्दन तगर, कमल गंध से उच्च शीलों की सुगन्ध परम, सबसे बढ़कर उच्च सबसे बढ़कर उच्च, शील वर व्यापक उत्तम सदाचार ही शील, उचित यह ग्रहणम उत्तम कह भगवन समझाय, गंध गुल बहती यूंही नहीं तुल्य ये शील, तगर हो चाहे जूही	५५
१०३	एक दिन आनन्द उठे, ज्योंही आसन ध्यान भगवन के सम्मुख पहुंच, नमः करे सम्मान नमः करे सम्मान, शिष्य तब प्रश्न उचारे फूल गंध जड़ गंध, बहे किमि प्रश्न विचारे मूल प्रश्न कह शिष्य, गंध ये सीधी बहती कौन गंध यह लोक, विरुद्ध जो वायु बहती	५४ ५५ कथा।
१०४	चन्दन तगर सुगन्धियाँ, अल्प मात्र रह फैल शीलवान की गन्ध तो, देव बीच रह फैल देव बीच रह फैल, गन्ध वह उत्तम होती शील गन्ध अति श्रेष्ठ, गन्ध पर तुल्य न होती कह भगवन समझाय, गन्ध पर काश्यप सज्जन इन्द्र हृदय में चाह, शील बढ़ गन्धम चन्दन	५६

कु० सं० ध० सं०

१०५ राजगीर में एक दिन, काश्यप छोड़े ध्यान ५६ कथा
सात दिवस तक ध्यान कर, भिक्षा हेतु प्रयाण
भिक्षा हेतु प्रयाण, दीन से भिक्षा चाहे
तन्तुवाय बन शक्र, थेर को भीख उगाहे
जान इन्द्र दे भीख, थेर तब कारग जाने
मैं भी चाहूँ पुण्य, इन्द्र कह ध्येय बखाने

१०६ शीलवान आलस रहित, वे जो करें विहार ५७पद कथा
सही ज्ञान ले मुक्त जो, राह न पकड़े मार
राह न पकड़े मार, मार को अदिश दिखावे
ऐसे नर के मार्ग, मार को पता न आवे
भगवन कह तुम मार, मार्ग ना गोधिक जानो
तुम सम कई हजार, जन्म ना गोधिक जानो

१०७ राजगीर इसिगिल शिला, गोधिक भिखुकर ध्यान ५७ कथा
एक रोग प्रकोप से, टूट टूट गिर ध्यान
टूट टूट गिर ध्यान, अन्त कर ली खुद हत्या
पर अर्हत क्षण पाय, थेर ने की जब हत्या
सुनकर ऐसी बात, भिक्षु थल बुद्ध पधारे
पुनर्जन्म हित जान, मार भी वहाँ विहारे

१०८ जैसे बड़ी सड़क निकट, फेंक कूड़ के ढेर ५८-५९
वासित सुन्दर फूल यदि, खिल उठे वही ढेर
खिल उठे वही ढेर, कूड़ सम अन्ध जनों में
सम्यक संबुध शिष्य, फबे ले ज्ञान जनों में
कह भगवन ग्रह दिन्न, ठगो मत भिक्षुम वैसे
श्रावक चक्षुम ज्ञान, नहीं ये अन्धे जैसे

कु॰ सं॰		ध॰ सं
१०९	सिरिगुत गरहदिन्न उभय, श्रावस्ती मित वास सिरिगुत बुद्ध भक्त परम, दिन्न निर्गन्था आश दिन्न निर्गन्थ आश, सिरि निर्गन्थ छकाये गरहदिन्न सम चाह, मात पर संघ बुलाये अग्नि कुंड में डाल, भिक्षु को मनः विचारे आज छकाऊँ बुद्ध, दिन्न यों हर्ष उचारे	५८-५९
११०	जैसे भगवन भिक्षु सह, अग्नि-कुंड सट आय त्यों ही अग्नि कुंड पलट, पद्म पुष्प उग आय पद्म पुष्प उग आय, दिन्न लख अचरज पावे झट भगवन पद पूज, चरण रज शीश लगावे भोजन कर भगवन, दिन्न को बोध बुझावे बुद्ध भिक्षु सब ज्ञान, अन्य ना इसको पावे

बाल (मूढ) वर्ग—५

कुंडलियां मूल

संख्या धम्मपद संख्या

१११ लम्बी लगी रात उसे, जाग रहे जो रात ६०
थका हुआ जो आदमी, योजन लम्ब दिखात
योजन लम्ब दिखात, जो न सद्धर्मं जाने
ऐसे नर ज़ो मूढ़, लम्ब संसार बखाने
कह भगवन समझाय, जगे की रातें लम्बी
धर्म हीन जो मूढ़, भुवन की चक्की लम्बी

११२ कोशल नृप प्रसेनजितः, काम वासना आय ६० कथा
सेवक की स्त्री लिए, सेवक चह मरवाय
सेवक की चह मरवाय, भृत्य को दूर पठावे
ठीक समय पर लौट, नहीं तो दंड सुनावे
नगर द्वार लख बन्द, भृत्य पर सोया गहरा
प्रसेन चक्षु न नींद, काम में लिप्तम ठहरा

११३ विचरण करते काल यदि, संगी मिले न श्रेष्ठ ६१
या न स्वयं समान मिले, विचर अकेला श्रेष्ठ
विचर अकेला श्रेष्ठ, मित्रता मूढ़ न अच्छी
अपने से नर श्रेष्ठ, मित्रता स्व तुल अच्छी
कह भगवन समझाय, मूढ़ ना मित्र बनाओ
अगर न संगी श्रेष्ठ, टहल एकान्त फिराओ

कु॰ सं॰ ध॰ सं॰

११४ राजगीर में एक दिन, काश्यप करें विहार ६१ कथा
शिष्य युगल में एक अति, दुष्ट नीच आचार
दुष्ट नीच आचार, विहारम आग लगावे
भिक्षाटन पर थेर, शिष्य पर मठः जलावे
श्रावस्ती भगवान, जान यह वचन उचारे
नहीं साथ रह मूढ़, श्रेष्ठ तब स्वयं विहारे

११५ मेरा सुत मम धन कहे, मूर्ख बने वेचैन ६२
जब नर अपना खुद नहीं, दे सुत धन क्या चैन
दे सुत धन क्या चैन, अर्थ रस भाव उठावे
होकर भोगम लिप्त, मूढ़ भव कष्ट उठावे
कह भगवन समझाय, कष्ट का कारण सारा
मनुज राग में लिप्त, भरम यह तेरा मेरा

११६ एक समय श्रवस्ती में, सेठ आनन्द नाम ६२ कथा
महाकृपण इस सेठ को, पुत्र मूलसिरि नाम
पुत्र मूलसिरि नाम, आनन्द मर कर जन्मा
पुनः श्रावस्तीपुर, गृहम चंडाल जन्मा
पूर्व जन्म ले याद, सेठ घर पुत्रम पैठा
चंडाल सुत विचार, पुत्र तब पिता घसीटा

११७ समझे अपनी मूर्खता, मूर्ख नहीं वह विज्ञ ६३
वही सही में मूर्ख है, मूढ़ कहे खुद विज्ञ
मूढ़ कहे खुद विज्ञ, अर्थ रस भाव उठावे
ज्ञान बिना ही मूढ़, स्वयं को सुधी जतावे
कह भगवन समझाय, ज्ञानी जब अन्य समझे
महामूर्ख वह मूर्ख, स्वयं जो पंडित समझे

कृ० सं० | ध० सं०

११८ श्रवस्ती में वास करे, गिरहकट्ट दो चोर — ६३ कथा
दोनो चोरी हित चले, जेतवनम की ओर
जेतवनम की ओर, उभय मित सभा पधारे
एक सुन बुद्ध धर्म, चोर गुण शीघ्र बिसारे
दूजा काटे गांठ, मौज में पाक बनावे
धार्मिक घर में फांक, वचन सुन बुद्ध सुनावे

११९ गहे मूर्ख न धर्म कभी, रह पंडित के साथ — ६४
जैसे कलछी ना रसे, सूप सदा रह साथ
सूप सदा रह साथ, मर्म रस भाव उठावे
मूढ़ न सीखे धर्म, भले मित विज्ञ बनावे
कह भगवन समझाय, मूढ़ बन मूढ़ बितावे
जीवन भर रह संग, विज्ञ क्षण व्यर्थ बितावे

१२० जेतवन की धर्मसभा, उदायी एक थेर — ६४ कथा
महा थेर जब जा चुकें, आसन ले ले थेर
आसन ले ले थेर, उदायी आसन अरजे
जैसे पंडित श्रेष्ठ, अकड़ कर बोले गरजे
अगर प्रश्न गंभीर, मूर्ख बन हँसे उदायी
मूरख हृ[illegible], मूर्ख की सदा हँसायी

१२१ सेवा पंडित की अगर, गुणी पुरुष कर पाय — ६५
एक मुहुरत अल्प समय, धर्मम झट बुझ पाय
धर्मम झट बुझ पाय, जीभ ज्यों स्वाद बुझावे
रखते जी पर पाक, लून का स्वाद जनावे
कह भगवन समझाय, गुणी गह झटपट मेवा
जाने धर्मम ज्ञान [illegible]धी की करके सेवा

कुं० सं०		ध० सं०

१२२ तीस भिक्षु पाठेय के, भद्दवर्गीय कहाय ६५ कथा
अनमतग्ग सुत पाठकर, तत्क्षण अर्हत पाय
तत्क्षण अर्हत पाय, वहीं आसन पर बैठे
देख बुद्धधम देन, भिक्षु में अचरज पैठे
कह भगवन समझाय, उचित कर पंडित सेवा
अल्प काल में ज्ञान, अगर कर पंडित सेवा

१२३ अपना शत्रु आप बने, दुर्बुध मूरख लोग ६६
पाप कर्म करते विचर, कटु फल करते भोग
कटु फल करते भोग, पाप के फल सब तीखे
नहीं कुफल छुट पाय, तथ्य यह सत्य सरीखे
कह भगवन समझाय, व्यर्थ है पापम ढँकना
पाप नहीं छूट पाय, कर्म तो फल दे अपना

१२४ सुप्रबुद्ध के नाम का, कोढ़ी रह निरुपाय ६६ कथा
राजगीर में दीन बन, जीवन दुखी बिताय
जीवन दुखी बिताय. धर्मथल आये कोढ़ी
स्रोतापत्ति फल पाय, सांढ़ पथ मारे कोढ़ी
पूर्व जन्म यह जीव, प्रत्येकम बुद्ध थूके
तगर शिखि [illegible] कुष्ट, कुष्ट कह कोढ़ी थूके

१२५ करना करम ठीक नहीं, कर जिसको पछताय ६७
जिसके फल के भोग में, अश्रुमूत्र बिलखाय
अश्रुमूत्र बिलखाय, कर्म का फल सब पावे
जैसा जिसका कर्म, वही फल भोग उठावे
कह भगवन समझाय, कर्म सब उत्तम करना
करो न [illegible] कर्म, जिसे कर रोदन करना

कु० सं० ध० सं०

१२६ श्रावस्ती किसान सुबह, जोते अपना खेत ६७ कथा
चोर द्रव्य गत रात में, छोड़ चले वह खेत
छोड़ चले वह खेत, सहस की गड्डी थैली
बुद्ध शिष्य आनन्द, लखे वह गड्डी थैली
सुगत सार ले धोय, कृषक बढ़ थैली गाड़े
लोग कह यही चोर, पाप फल उसको ताड़े

१२७ कम वही करना उचित, कर न जिसे पछताय ६८
जिसके फल के भोग में, खुश हो मन हर्षाय
खुश हो मन हर्षाय, मर्म रस भाव उठावे
कर्म सदा कर ठीक, भोग जो चित्त हँसावे
कह भगवन समझाय, कर्म जो चित्त सुहावे
जिसे न कर पछताय, कर्म वह ठीक कहावे

१२८ माली इक गिरिव्रज में, जिसका सुमन सुनाम ६८ कथा
ब्रिम्बिसार हित हार गुथ, नित पावे धन दान
नित पावे धन दान, सुमन ने इक दिन देखा
भिक्षा लेते बुद्ध, सौम्य तन मुखड़ा देखा
मन में ले यह ठान, करूँगा बुद्ध पूजा
चाहे राजा मार, करूँगा गौतम पूजा

१२९ पके जब तक पाप नहीं, मूरख मधु सम मान ६९
मिलता उसका फल जभी, मूढ़ करे दुख भान
मूढ़ करे दुख भान, पाप तब रंग दिखावे
पापी तब पछताय, पाप जब भोग दिखावे
कह भगवन समझाय, पाप का फल सब भोगे
मूरख मधु ले मान, बाद में कष्टम भोगे

कु० सं०   ध० स०

१३० महानगर श्रवस्ती में, एक सेठ धनवान   ६९ कथा
उपलवण्णा नाम सुती, रूपवती गुण खान
रूपवती गुण खान, ममेरा भाई मोहे
नन्दा मानव नाम, उपल को अतिशय चाहे
चारु भिक्षुणी वण्ण, कुटी में खाट लगाई
बलात्कार कर नन्द, भूमि धँस जान गमाई

१३१ भोजन कर कुश नोंक पर, मूढ़ महीनों बाद   ७०
फिर भी शठ है सम नहीं, विज्ञ सोलवाँ भाग
विज्ञ सोलवाँ भाग, धर्म का ज्ञाता ऊँचा
करे मूढ़ उपवास, तथापि रह वही नीचा
कह भगवन समझाय, धर्म जो जाने कोई
सब से बढ़कर उच्च, तुल्य ना उन सा कोई

१३२ आजीवक जम्बुक भी, बुरा धूर्त चालाक   ७० कथा
राजगृही में ढोंगकर, गहे तपस्वी धाक
गहे तपस्वी धाक, पैर इक खड़ा टँगावे
हवा मात्र ही पीय, मुँह को फाड़ दिखावे
एक रात वह जीव, सुगत का दर्शन पावे
ले भगवन उपदेश, धर्मपद अर्हत पावे

१३३ जैसे ताजा दुग्ध सब, शीघ्र नहीं जम पाय   ७१
वैसे किया पाप करम, शीघ्र नहीं फल लाय
शीघ्र नहीं फल लाय, पाप शठ पीछे धावे
राख ढँको ज्यों आग, मूढ़ ना दर्शन पावे
कह भगवन समझाय, पाप कह अग्निम जैसे
राख ढँकी ज्यों आग, मूढ़ ना समझे वैसे

कु० सं०　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　ध० सं०

१३४ लक्षण महामोद उभय, गृद्धकूट से आय ७१ कथा
बीच मार्ग अहि प्रेत लख, ज्वला बदन जलाय
ज्वाला वदन जलाय, प्रेत सिर मानव जैसे
पूंछ सिर जली आग, शेष तन साँपम जैसे
कह भगवन समझाय, जन्म गत कुटी जलावे
प्रत्येक बुद्ध सुधाम, जला यह गति वह पावे

१३५ होयें मूरख ज्ञान सब, मूरख लियें अनर्थ　　७२
अच्छाई सब मूढ़की, ज्ञान मूढ़ कर व्यर्थ
ज्ञान मूढ़ कर व्यर्थ, ज्ञान सिर निम्न झुकावें
मूरख के सब ज्ञान, शीश खुद नीच गिरावें
कह भगवन समझाय, मूर्ख स्व ज्ञान डुबोयें
मूरख लियें अनर्थ, ज्ञान सब मूरख होयें

१३६ लक्षण महामोद उभय, गृद्धकूट से आय ७२ कथा
साठकूट पथ प्रेत लख, भगवन को बतलाय
भगवन को बतलाय, प्रेत दुख भोगे भारी
लोह कूट आदीप्त, शीश पर गिरते भारी
कह भगवन समझाय, पूर्व वह कंकड़ हाँके
बुद्ध प्रत्येक मार, पाप फल अब वह छाँके

१३७ मूर्ख मन नित चाह यही, अनुचित लें सत्कार　　७३
भिक्षु बीच आगे रहें, मठ पर हो अधिकार
मठ पर हो अधिकार, घरों में पूजित होऊँ
गृही सब परिवार, अधिक सम्मानित होऊँ
कह भगवन समझाय, अल्प से शठ गुण भभकें
इच्छा शठ बढ़जाय, पाप औ दोषम दहकें

कु० सं० ध० सं०

१३८ दीक्षित गृही नर उभय, मेरा करना मान ७४
सभी तरह के काम में, मेरा शासन मान
मेरा शासन मान, मूढ़ संकलपम ऐसे
इच्छा अहम् विकास, मूढ़ गुण बढ़ते वैसे
कह भगवन समझाय, मूढ़ ना ढंग सुधारे
अहंकार में लीन, मूढ़ बन जन्म गुजारे

१३९ नगर मच्छिका सण्ड में, गृहपति चित्त सुनाम ७३-७४ कथा
गुरु श्रावक को न्योत कर, न्योत सुधम्म सुजान
न्योत सुधम्म सुजान, थेर यह सुनकर बिगड़े
निमंत्रित करे बाद, चित्त कह वचनम झिड़के
भगवन कहे सुधम्म, चित्त से क्षमा उगाहो
मान क्रोध सब तुच्छ, इन्हें तज पूर्ण डाहो

१४० अन्य मार्ग है लाभ का, अन्य मार्ग निर्वाण ७५
भिक्षु श्रावक जान यही, गहे नहीं सम्मान
गहे नहीं सम्मान, बुद्ध के जो अनुगामी
सुवृद्धि करें विवेक, बने एकान्तम गामी
कह भगवन समझाय, निर्वाण दुष्कर पूजा
चाहक तज सब लाभ, सुगति का पथ है दूजा

१४१ राजगीर के विप्र कुल, जन्मे तिस्स सुनाम ७५ कथा
सारिपुत प्रव्रजित कर, नगर लोक सम्मान
नगर लोक सम्मान, बाद वे बन जा ठहरे
बहुत दूर वन छोर, तिस्स जा उसमें विहरे
अर्हत पद लघु काल, तिस्स सब लाभम छोड़े
सुन भिक्षुम कह बुद्ध, तिस्स मन धर्मम मोड़े

पंडित वर्ग—६

कुंडलियां संख्या		मूल धम्मपद संख्या
१४२	सेवा पंडित को उचित, जो दे दोष बताय ज्यों भूमि में गड़ी हुई, निधियाँ सुधी दिखाय निधियाँ सुधी दिखाय, साथ रह जो मेधावी ऐसा पंडित सेव, रहे जो संयमवादी कर सेवा यों संग, फलों का मिलता मेवा होतो कभी न हानि, करे जो पंडित सेवा	७६
१४३	श्रावस्ती में राध अति, निर्धन सेवक विप्र सारिपुत्र दीक्षित करे, अर्हत लेले विप्र अर्हत लेले विप्र, टहल कर सारी सेवा सुधी सारिपुत संग, वास कर अरजे मेवा कहे भगवन समझाय, राध सम मानो आज्ञा कभी न जिसको क्रोध, सुधी की गहे भी संज्ञा	७६ कथा
१४४	जो नर कुछ उपदेश दे, और सुमार्ग दिखाय पथ गलत से दूर करे, सज्जन प्रियम सुहाय सज्जन प्रियम सुहाय, मगर जो दुर्जन होते उन्हें न ये नर प्रिय, उन्हें ये अप्रिय लगते कहे भगवन समझाय, सीख-फल दोनो होते सज्जन को लग प्रिय, बुरा पर दुर्जन लगते	७७

कु० सं० घ० सं०

१४५ कीटा गिरि में अस्सजी, पुनब्बसू बुध शिष्य ७७ कथा
अग श्रावक इन शिष्य के, उत्पाती दो शिष्य
उत्पाती दो शिष्य, कर्म कुल-दूषण करते
दुराचार कर कर्म, उदर वे अपने भरते
शास्ता कह वर शिष्य, शिष्य को पुनः बुझाओ
अगर नहीं वे मान, पब्बाजनीय कराओ

१४६ पापी मित्र न साथ रह, नहीं अधम के साथ ७८
भला मित्र सेवन करो, उत्तम नर रह साथ
उत्तम नर रह साथ, अर्थ रस भाव उठावे
मित्र श्रेष्ठ ही पाल, मनुज यों लाभ उठावे
कह भगवन समझाय, साथ रह कभी न पापी
नहीं अधम के साथ, मित्र बन जो निष्पापी

१४७ जेतवन में एक समय, छन्न करे विश्राम ७८ कथा
सारिपुत महामोद भी, वहीं करें विश्राम
वहीं करें विश्राम, छन्न का मन अकुलावे
सारिमोद को देख, सबों से रोय सुनावे
उत्तम मेरा त्याग, प्रथम तो मैं घर छोड़ा
आज युगल ये श्रेष्ठ, हँका था मैं ही घोड़ा

१४८ निन्दा गुण प्रकोप से, छन्न हृदय अकुलाय ७८ कथा
अति मान नहीं प्राप्तकर, द्वेष भाव जन्माय
द्वेष भाव जन्माय, सबों को छन्न सुनावे
सारिमोद को देख, छन्न निन्दा बतियावे
सुगत छन्न समझाय, द्वेष का पड़ो न फन्दा
मित्र कल्याणम बूझ, साथ रह करो न निन्दा

कु० सं०		ध० सं०
१४९	सोवे चित प्रसन्न सुखी, जो पीले रस धर्म विज्ञ पुरुष रमते सदा, अरिय देय बुध धर्म अरिय देय बुध धर्म, अर्थ रस भाव उठावे जो पीले रस धर्म परम आनन्द उघावे कह भगवन समझाय, धर्म रस जो नर पीवे महा सुख गुणी ज्ञान, चित्त हँस सुखमय सोवे	७९
१५०	कुक्करवती नाम नगर, महाकपीन सुभूप बुद्ध धर्म के हित चले, राज पाट तज भूप राज पाट तज भूप, धर्म सभी कुल उठावे बुद्ध धर्म के ज्ञान, परम आनन्द उघावे रात दिवस तब भूप, अहो क्या भोग उचारे परम भोग सुख भोग, धर्म के भोग विचारे	७९ कथा
१५१	पानी को बहाय चले, नहरवान ज्यों खींच सर निर्माता बाण को, ठीक करे ज्यों खींच ठीक करे ज्यों सींच, काठ को बढ़ई अपने उसी तरह कर ठीक, विज्ञ जन मन को अपने कह भगवन समझाय, चित्त कर वश में प्राणी अगर करो मन शान्त, बनो तुम ध्यानी ज्ञानी	८०
१५२	श्रावस्ती में सारिपुत, सेवक सुत श्रामणेर अल्पकाल प्रव्रजित हो, सेवा कर गुरु थेर सेवा कर गुरु थेर, मार्ग में वस्तु निहारे चक्का नहर व बाण, देख मन हृदय विचारे निर्जीवम ये चीज मनुज ज्यों चाह बनावे चेतन जो यह चित्त, भला नर क्यों न दबावे	८० कथा

कु० सं० | ध० सं०

१५३ जैसे ठोस शैल नहीं, झोकों से हिल पाय | ८१
त्यों सुन निन्दा स्तुति, पंडित ना डिग पाय
पंडित ना डिग पाय, विज्ञ जन सब कुछ सुनते
निन्दा मान समान, नहीं पर विचलित होते
कह भगवन समझाय, विज्ञ हित सब कुछ वैसे
निन्दा या यशगान, असर ना कुछ भी जैसे

१५४ जेतवनम विहार गृहम, भदिय लकुण्टक थेर | ८१ कथा
नाटे कद के थेर यह, लोग हंसे लख थेर
लोग हंसे लख थेर, पृथक श्रमणेर चिढ़ावे
क्या छोटे पितु साधु, अन्य कह उन्हें झुकावे
पकड़ नाक और कान, थेर को हंसे हंसावे
फिर भी अविचल थेर, थेर को क्रोध न आवे

१५५ सुनकर धर्मम विज्ञ जन, बनते यों परिशुद्ध | ८२
ज्यों निर्मल गम्भीर बन, सर होते परिशुद्ध
सर होते ररिशुद्ध, अर्थ रस भाव उठावे
धर्म करे नर शुद्ध, सुधी ही उसे उघावे
कह भगवन समझाय, धर्म गह शुध बन ज्ञानी
निर्मल बन गंभीर, बने ज्यों थिर सर पानी

१५६ काण मातु श्रवस्ती में, बुद्ध धर्म मनभाय | ८२ कथा
पुवा पका पुत्री लिए, भिक्षु आय घर खाय
भिक्षु आय घर खाय, सुती ना विदा करायी
पति त्यागे जब काण, काण तब रोय बितायी
सुन यह सुगत बुझाय, धर्म ना व्यर्थ होवे
काणा पुनः विवाह, नृप के मंत्री विवाहे

कु॰ सं॰ धं॰ सं॰

१५७ सभी राग औ मोह को, सत्पुरुष करे त्याग ८३
काम भोग ना कुछ गुने, चर्चा दे यह त्याग
चर्चा दे यह त्याग, फर्क ना दुख सुख लावे
विज्ञ लिए सब एक, विकार न मन में लावे
कह भगवन समझाय, पुरुष सब भोगम त्यागे
कष्ट खुशी सब एक, सुधी के मन के आगे

१५८ मनुज पंच शत जेतवन, जूठन खाय अघाय ८३ कथा
झूठे पत्तल चाट कर, जँह तँह अभय फिराय
जँह तँह अभय फिराय, कर्म वे नीच उठावे
अनाचार कर लोग, भिक्षु बुध तथ्य सुनावे
कह भगवन समझाय, विकार न मन में लाओ
सत्य पुरुष सम सोच, शोक ना खुशी दिखाओ

१५९ अपने या पर के लिए, चाह न सुत धन राज ८४
चाहे स्वविकास नहीं, करके अधर्म काज
करके अधर्म काज, वही शील युत कहावे
वह नर प्रज्ञावान, विशुद्ध धार्मिक कहावे
कह भगवन समझाय, अधर्म न कभी उठाओ
अपने या अन्य हित, कर्म ना नीच उघाओ

१६० श्रावस्ती एक धार्मिक, जन्मे घर जब पुत्र ८४ कथा
घर से चल दीक्षित बने, बाद स्त्री व पुत्र
बाद स्त्री व पुत्र, सभी अर्हत पद पावे
धर्म सभा छिड़ बात, सुगत यह भिक्षु सुनावे
कह भगवन समझाय. सुधी न समृद्धि लावे
बन के धार्मिक स्वयं, अन्य भी धर्म सिखावे

कु० सं० धं० सं०

१६१ थोड़े हैं मनुष्य महज, जो जाते हैं पार ८५,८६
लोग अन्य तो ये महज, धावक नदी किनार
धावक नदी किनार, मार्ग जो धर्म उठावे
उपदिष्ट शुद्ध धर्म, मरण-भव कठिन तरावे
कह भगवन समझाय, बँधे नर भव चक बेड़े
वे न करें भव पार, पार भव करते थोड़े

१६२ श्रवस्ती की एक गली, धर्म सभा जुट आय ८५,८६ कथा
शाम पहर तो भीड़ अति, रात लोग अकुलाय
रात लोग अकुलाय, बहुत जन गृहम पधारे
काम विषय मन लाय, मौज में रात गुजारे
लख भगवन समझाय, सुधी जन भव में थोड़े
वे ही जाते पार, अन्य तो नद तट दौड़े

१६३ पंडित बुरे कर्म तजें, शुद्ध कर्म अभ्यास ८७,८८
बेघर दूर इकान्त रह, तजे भोग की आश
तजे भोग की आश, अकिंचन मनः बितावे
उसमें मनरत लाय, चित्त मल शुद्ध करावे
कह भगवन समझाय, सुधी मन शुद्ध बनावें
चित्त मैल से स्वच्छ, स्वयं को शुद्ध बनावे

१६४ जिनका मन अभ्यस्त हो, संबोधि सभी भाग ८९
त्याग परिग्रह में निरत, आशक्ति करे त्याग
आसक्ति करे त्याग, वही क्षीणाश्रव होवे
वही बने द्युतिमान, भुवन निर्वाणम पावे
कह भगवन समझाय, संबोधि अंगम जानो
पूर्ण रूप अभ्यस्त, चित्त वह निपुणम मानो

कु॰ सं॰ धं॰ सं॰

१६५ श्रावस्ती बिहार ठहर, भगवन ले विश्राम ८७,८८,८९ कथा।
कौशल से भिखु पंचशत, आय करे विश्राम
आय करे विश्राम, पुनः वे दर्शन पावे
एक एक कर जोड़, नमः कर हृदय जुड़ावे
उनको तब भगवान, यही उपदेश सुनावे
बुरा धर्म जो त्याग, उचित कर सुधी कहावे

अर्हन्त वर्ग—७

कुंडलियां | मूल

संख्या | धम्मपद संख्या

१६६ जिसने पथ समाप्त किया, रहित हुआ जो शोक ९०
पू र्ण रूप विमुक्त पुरुष, ग्रन्थि करे सब लोप
ग्रन्थि करे सब लोप, उसे कुछ कष्ट न होवे
जिसकी ग्रन्थि प्रहीण, पुनः क्या कष्ट उठावे
कह भगवन समझाय, कष्ट सब त्यागा मैंने
मुझे कहाँ फिर कष्ट, बोधि तरु त्यागा जिसने

१६७ राजगिरि के गृद्धकूट, देवदत्त छिप जाय ९० कथा
शिला खण्ड ले दूर से, भगवन देख चलाय
भगवन देख चलाय, मात्र संयोग बचावे
लग के इक चट्टान, खंड वह जा टकरावे
टुकड़ा टूटा एक, पैर लग रुधिरे बहावे
आकर जीवक वैद्य, प्रेम से दवा लगावे

१६८ कष्ट तथागत जानहित, आतुर जीवक वैद्य ९० कथा
कैसा भगवन दुख अभी, बार-बार कह वैद्य
बार-बार कह वैद्य, वचन तब सुगत सुनावे
मुझे कहाँ फिर कष्ट, कष्ट ना पुनः फिरावे
मैंने त्याग कष्ट, बोधि तरु बनकर ज्ञानी
एक बार तज कष्ट, पुनः ना पावे प्राणी

कु० सं० ध० सं०

१६९ स्मृतिवान व ध्यान रत, रमे न आलय भोग ९१
वे ऐसे नर हैं सभी, तजते आलय भोग
तजते आलय भोग, हंस ज्यों ध्यान फिरावे
क्षुद्र सर चले छोड़, हँस ना फिर ताँह आवे
कह भगवन समझाय, स्मृतियुत पुरुष वैसे
धाम भोग सब त्याग, हँस सर लघु तज जैसे

१७० राजगिरि से एक समय, सुगत करे प्रस्थान ९१ कथा
काश्यप मन विचार करे, मैं भी करुँ प्रयाण
मैं भी करुँ प्रयाण, सुगत पर उसे मनावे
ठहरो यही बिहार, सुगत यह बोध बुझावे
सुनकर ऐसी बात, कश्यप को भिक्षु चिढावे
राजगीर घर थेर, भिक्षु घर मोह बतावे

१७१ जो करते संग्रह नहीं, भोजन मात्रा जान ९२
गोचर जिनके बन गये, शून्य और निर्वाण
शून्य और निर्वाण, अतः नर कठिन बुझावे
उनकी गति अज्ञेय, गगन ज्यों विहग बुझावे
कह भगवन समझाय, निर्वाण विचरण जिनके
गोचर जिसके शून्य, अज्ञेय धावन उसके

१७२ जेतवन में बास करे, बेलठिसीस महान ९२ कथा
भिक्षाटन कर थेर यह, जमा करे सामान
जमा करे सामान, पुनः मन ध्यान लगावे
जमा खाद्य ही खाय, थेर यों पेट भरावे
भिक्षु-भिक्षु कर बात, थेर कर आलस जैसे
सुगत भिक्षु बतलाय, थेर कम चाहे जैसे

कु'० सं० ध० सं०

१७३ जिसके पाप क्षीण हुए, जो न लिप्त आहार ९३
शून्य तथा निर्वाण में, नर जो करे विहार
नर जो करे विहार, अनमित विमोक्ष कहावे
जिसे कहे निर्वाण, विचर स्थान बनावे
उसकी गति अज्ञात, गगन में पक्षी जैसे
ऐसे दुर्लभ थेर, समझ ना आवे जैसे

१७४ राजगीर के वेणुवन, थेर रहे अनिरुद्ध। ९३ कथा
पुरवासी श्रद्धा हिते, करे दान अति शुद्ध
करे दान अति शुद्ध, खाद्य की मात्रा इतनी
कई माह के युक्त, जुटी सामग्री इतनी
निन्दा कर अनिरुद्ध, थेर सम्बन्ध दिखावे
सुनकर ऐसी बात, सुगत तब भिक्षु बुझावे

१७५ जिसकी स्थिर इन्द्रियाँ, शिक्षित अश्व समान ९४
शान्त हुई यों इन्द्रियाँ, दान्त अश्व ज्यों मान
दान्त अश्व ज्यों मान, सारथी जिसे सिखावे
अहं रहित यों सन्त, अनाश्रव सन्त कहावे
ऐसे नर की चाह, स्पृहा देव उठावें
वही सन्त अरहन्त, अनाश्रव सन्त कहावे

१७६ श्रवस्ती की धर्म सभा, उपस्थित हुए इन्द्र ९४ कथा
कात्यायन गुरु थेर को, पूजे अति ही इन्द्र
पूजे अति ही इन्द्र, भिक्षु सब लगे सुनाने
यह सुख लख सत्कार, थेर को लगे चिढ़ाने
कह भगवन समझाय, थेर कात्यायन ऊँचे
वे ऐसे हैं थेर, जीव सब देवम पूजे

कु० सं० ध० सं०

१७७ सुन्दर व्रतधारी तादि, क्षुब्ध न भूमि समान ९५
अर्हंत तो अकम्प अचल, इन्द्रः खील समान
इन्द्रः खील समान, नर यों भव नहीं रखते
ज्यों कर्दम सर शून्य, तादि ना मल भव रखते
कह भगवन समझाय, तादि व्रत सुन्दर धारी
भुवन मैल से हीन, सुधी अर्हंत व्रतधारी

१७८ जेतवनम बिहार गृहम, भिक्षु सारि दे दोष ९५ कथा
वही सुगत से जाय कह, अधिक क्रोध ले रोश
अधिक क्रोध ले रोश, पुनः भगवान बुलावे
सारि पुत्र को पूछ, भिक्षु को वचन सुनावे
कह भगवन समझाय, उचित भिखु क्षमा उघावे
सारि पुत्र झुक जाय, स्वयं वह भाल झुकावे

१७९ सही ज्ञान ले मुक्त जो, मन उसका हो शान्त ९६
वचन कर्म सब शान्त अति, अर्हत यों उपशान्त
अर्हंत यों उपशान्त, मर्म रस भाव उठावे
यथार्थ विधि के ज्ञान, तादि को शान्त बनावे
कह भगवन समझाय, शान्त अति अर्हंत होते
कर्म वचन सब शान्त, सन्त यों अर्हंत होते

१८० कौशाबी के तिस्स गुरु, सेवक सुत इक शिष्य ९६ कथा
श्रवस्ती प्रस्थान करे, तिस्स थेर औ शिष्य
तिस्स थेर औ शिष्य, मार्ग में रात बितावे
शिष्य रात भर जाग, थेर को क्रोध जगावे
थेर पंख से मार, शिष्य यों आँख गमावे
पर न शिष्य को क्रोध, नहीं वह थेर बतावे

कु० सं० ध० सं०

१८१ अंधी श्रद्धा से रहित, जो जाने निर्वाण ९७
भव संधि का छेद करे, दमन करे विषयान
दमन करे विषयान, जन्म अवकाश छुड़ावे
सारी तृष्णा त्याग, श्रेष्ठ सत्पुरुष कहावे
कह भगवन समझाय, सन्त सब अर्हत ऊँचे
नहीं कहीं संदेह, पुरुष ये ऐसे पहुँचे

१८२ जेतवन आराम कुटी, भगवन लें विश्राम ९७ कथा
तीस अरण्यक भिक्षु गण, मुनि को करे प्रणाम
मुनि को करे प्रमाण, सुगत तब प्रश्न उठावे
अर्हत पंचेद्रिय, सारिपुत भिक्षु सुनावे
शंका भिखु मन देख, भिक्षु से भगवन बोले
सारि पुत्र कह ठीक, ज्ञान तब उनके खोले

१८३ जंगल अथवा गांव हो, जगह ऊँच निम्नीय ९८
जहाँ कहीं अर्हंत रमे, भूमि वहीं रमणीय
भूमि वही रमणीय, मर्म रस भाव उठावे
जिस थल ठहरे सन्त, सुफल आदर्श कहावे
कह भगवन समझाय, सन्त थल उत्तम विहरे
वह थल उत्तम चारु, जेहि थल अर्हंत विहरे

१८४ छोटे भाई सारिपुत, रेवत थेर सुनाम ९८ कथा
कर विवाह पथ से भगे, खदिर वनम विश्राम
खदिर वनम विश्राम, वर्ष सत अर्हत पावे
कठिन परिश्रम लाय, तादि बन सन्त कहावे
वही विपिन आ बुद्ध, रेवत सुमार्ग बनाये
कर सेवा सत्कार, सुगत को पुनः पठावे

कुं० सं० ध० सं०

१८५ भगवन के ही साथ में, अन्य भिक्षु हो जाय ९८ कथा
उनकी कुछ चीजें छूटी, पुनः लौट फिर आय
पुनः लौट फिर आय, भिक्षु पब कष्टम पावे
कहे विशाखा लौट, अलग वे तथ्य बतावे
एक कहे वन मंजु, शूल से भर कह दूजा
शास्ता कहें विशाख, सभी अर्हत थल पूजा

१८६ वही वन रमणीय कहें, जहाँ न औसत लोग ९९
वीतराग रमते वहां, जो न खोजते भोग
जो न खोजते भोग, मर्म रस भाव उठावे
वीतराग वह सन्त, काम जो दूर भगावे
कह भगवन समझाय, मंजु थल होते वैसे
वीतराग जँह वास, सदिश जो अर्हंत जैसे

१८७ पिण्डपाति इक भिक्षुवर, गह ले कर्मस्थान ९९ कथा
करे बाग के बीच रह, श्रमण धर्मरत ध्यान
श्रमण धर्मरत ध्यान, वहीं इक आई गणिका
देख भिक्षु की देह, मोह में आई गणिका
हाव भाव सब लाय, काम सब भेद पसारी
भिक्षु देख हर्षाय, देह को खोल उघारी

१८८ वेश्या कर्म देख सभी, भिक्षु हृदय में वेग ९९ कथा
काम रति के वेग नहीं, ज्ञान धर्म संवेग
ज्ञान धर्म संवेग, अन्त में वेश्या हारी
नहीं असर कुछ लाय, भिक्षु ज्यों पर्वत भारी
कह भगवन समझाय, श्रमण सच शुद्ध कहावे
जहां न औसत लोग, श्रमण उत रमण करावे

सहस् वर्ग—८

कुंडलियाँ संख्या | मूल धम्मपद संख्या

१८९ निरर्थक पद व्यर्थ वचन, चाहे वाक्य हजार १००
सार्थक श्रेष्ठ एक पदम, चित्त शान्त सुन सार
चित्त शान्त सुन सार, मर्म रस भाव उठावे
व्यर्थ बचन बेकार, भले ही अधिक सुनावे
कह भगवन समझाय, वचन मन शान्त करावे
जौं कह सार्थक शब्द, शब्द वह श्रेष्ठ कहावे

१९० राजगिरी जल्लाद परम, तम्बा दाठिक नाम १०० कथा
नित्य प्रति वह चोर बधे, प्राण दंड जित दाम
प्राण दंड जित नाम, बृद्ध हो कर्म छुड़ावे
सारि पुत्र वह देख, यगाबू दान करावे
लौट समय वह राह, गाय से प्राण सिधारे
दान पुण्य कर धर्म, अल्प क्षण स्वर्ग पधारे

१९१ अनर्थक पद व्यर्थ कवित, गाथा भले हजार १०१
सार्थक गाथा इक महत, चित्त शान्त सुर सार
चित्त शान्त सुन सार, अर्थ रस भाव उठावे
गाथा व्यर्थ न सार, भले ही विपुल सुनावे
कह भगवन समझाय, शान्त जो शब्द करावे
वही शब्द वर श्रेष्ठ, शान्त जो चित्त करावे

कुं० सं० ध० सं०

१९२ सुपारक के दारु चरित्र: बल्कल साधु सुनाम १०१ कथा
सुगत नाम गुण सुन चले, जेतवनम विश्राम
जेतवनम विश्राम, सुगत तब नगर फिरावे
दारु गली कर भेंट, सुगत से धर्म उठावे
लौट समय वह राह, गाय से प्राण सिधारे
क्षण भर लेकर सीख, दारु पर स्वर्ग पिधारे

१९३ अनर्थक पद युक्त भजन, सौ गाथाएँ व्यर्थ १०२
धर्म युत पद एक महत, चित्त शान्त सुन अर्थ
चित्त शान्त सुन अर्थ, मर्म रस भाव उठावे
धर्म पूर्ण पद शब्द, व्यर्थ पद विपुल हरावे
कह भगवन समझाय, धर्म के पद भी थोड़े
शान्त चित्त कर पाय, व्यर्थ पद विपुल बखेड़े

१९४ उत्तम विजयी वह नहीं, नर हजार रणजीत १०३
सबसे उत्तम रण जयी, स्वयं आप जो जीत
स्वयं आप जो जीत, मर्म रस भाव उठावे
मानव खुद को जीत, मनुज वर साध कहावे
कह भगवन समझाय, वही वर श्रेष्ठ विजेता
अपने को जब जीत, जयी वह श्रेष्ठ कहाता

१९५ नारी जम्बू नाम अति, घूम-घूम कर प्रश्न १०२-१०३ कथा
जामुन डाल हाथ धरे, राजगीर जन प्रश्न
राजगीर जन प्रश्न, वही श्रवस्ती पधारी
सारि पुत्र से भेंट, प्रश्न कर जम्बू हारी
कुण्डल केशी नाम, धर्म ले अर्हत पायी
धर्म अल्प क्षण सीख, सुपद वह महत उधायी

कु० सं० धo सं०

१९६ प्रजा अन्य की जीत से, स्वयं जीत है श्रेष्ठ १०४-१०५
स्व दमनक नित संयमी, नर बन विजयी श्रेष्ठ
नर बन विजयी श्रेष्ठ, देव न गंधर्व जीते
चतुरानन सह मार, नहीं खुद-विजयी जीते
कह भगवन समझाय, स्वय को जिसने जीता
उसकी कभी न हार, कभी न बने वेजीता

१९७ जुआड़ी द्विज जेतवन, भगवन से कर प्रश्न १०४, १०५ कथा
कारण हानि अनर्थ क्या, सुगत कहे यह प्रश्न
सुगत कहे यह प्रश्न, पुनः वे प्रश्न उचारे
जुआ कर्म क्या लाभ, जान तब बचन उचारे
कह भगवन समझाय, स्वयं यदि फहरे ध्वजा
तभी जीत वह जीत, निरर्थक धन या प्रजा

१९८ माह माह सौ वर्ष तक, यज्ञ करे बहु बार १०६
पूजा यज्ञ व होम में, खरचा करें हजार
खरचा करें हजार, नहीं पर तुल्यम होवे
पल भर पूज विशुद्ध, पुरुष वर उत्तम होवे
कह भगवन समझाय, शुद्ध नर पूजन उत्तम
क्षण भर भी यों पूज, वरस सौ होम न उत्तम

१९९ राजगीर के वेणु वन, करते सारि विहार १०६ कथा
जाकर मामा से कहे, धर्म कौन त्योहार
धर्म कौन त्योहार, मामु तब सारि बतावे
स्वर्ग गमन ले ध्येय, निर्ग्रन्थ द्रव्य लुटावे
ले चल बुद्ध के पास, सारिपुत तथ्य सुनावे
सुनकर सारी बात, बुद्ध पद वचन सुनावे

कुं० स०   ध० सं०

२०० अग्नि होत्र कर सौ वरस, वन में ना हो श्रेष्ठ १०७
पल भर पूज विशुद्ध मन, पूजन बन अति श्रेष्ठ
पूजन वन अति श्रेष्ठ, हवन सौ साल झुठावे
परिशुद्ध चित्त पूज, सदिश ना और कहावे
कह भगवन समझाय, पूज बस उत्तम ज्ञानी
अग्नि होत्र ना श्रेष्ठ, शुद्ध कर पूजा प्राणी

२०१ भांजा सारिपुत्त करे, ब्रह्म लोक हित यज्ञ १०७ कथा
अग्नि होत्र में पशु बधे, खर्च विपुल हित यज्ञ
खर्च विपुल हित यज्ञ, सारि तब भांजा बोले
चलो सुगत के पास, स्वर्ग का पट वे खोले
कह भगवन समझाय, विप्र यह सभी निरर्थक
शुद्ध चित्त यदि पूज, अल्प भी वही सुअर्थक

२०२ नर यदि पुण्यम चाह ले, भव में कर बहु होम १०८
वर्ष भर बहु यज्ञ करे, धेय पुण्य ले होम
धेय पुण्य ले होम, यज्ञ वह तुल्य न होवे
अभिवादन ऋजुभूत, फल नहीं चौथम होवे
कह भगवन समझाय, नमन का तुल्य न कोई
सरल चित्त नर पूज, श्रेष्ठ ना पुण्यम कोई

२०३ सारिपुत्त के मित्र करे, ब्रह्मलोक हित यज्ञ १०८ कथा
अति द्रव्य का खर्च उठा, करे पुण्य हित यज्ञ
करे पुण्य हित यज्ञ, सारि तब उसने बोले
चलो सुगत के पास, स्वर्ग का पट वे खोले
कह भगवन समझाय, भुवन नर खर्च न उत्तम
सरल चित्त यदि पूज, पुण्य मह बढ़कर उत्तम

कुं० सं० धं० सं०

२०४ सेवा कर वृद्धः सतत, नमः शील जो लोग १०९
उसके धर्मम चार बढ़े, आयु वर्ण सुख भोग
आयु वर्ण सुख भोग, चतुर्थम बल नर बढ़ता
सेवा कर नर वृद्ध, चार ये तत्वम गहता
कह भगवन समझाय, अगर नर चाहे मेवा
नमः शील बन लोग, शुद्ध मन करके सेवा

२०५ दिघलम्बक में बुद्ध को, ब्राह्मण करे प्रणाम १०९ कथा
सुगत मुनि को देख समुख, पत्नी सहित प्रणाम
पत्नी सहित प्रणाम, सुगत दीर्घायु उचारे
पुत्र करे प्रणाम, सुगत रह मौन विचारे
ब्राह्मण मन संदेह, सुगत कह शीघ्र सिधारे
परित्राण करे पाठ, पुनः दीर्घायु उचारे

२०६ दुःशील जो चित्त पुरुष, मन एकाग्रत हीन ११०
जीना उसका सौ वरस, श्रेष्ठ नहीं गुण हीन
श्रेष्ठ नहीं गुण हीन, श्रेष्ठ जो होते ध्यानी
जी कर भी एक दिन, शील जो रखते ज्ञानी
कह भगवन समझाय, शील रख सुखजन पावे
जी सौ वर्ष न अर्थ, जीय दुःशील गमावे

२०७ जेतबत से भिक्षु चले, तप हित बन सह थेर ११० कथा
तीस भिक्षु में एक रह, संकिच्च श्रामणेर
संकिच्च श्रामणेर, बीच वन चोर विराजे
आकर ले इक भिक्षु, संकिच्च को बलि चढ़ावे
तन पर गिर तलवार, संकिचम निश्छल बैठें
टेढ़ी बन तलवार, भिक्षु पर बैसे बैठे

कु० सं० प० सं०

२०८ दुष्प्रज्ञ एकाग्र रहित, जी सौ बर्ष न सार १११
इक दिन सुधी ध्यानी का, जीय करे साकार
जीय करे साकार, अर्थ रस भाव उठावे
दुष्प्रज्ञ जीय व्यर्थ, विज्ञ का जीय कहावे
कह भगवन समझाय, श्रेष्ठ जी जीवन ध्यानी
दिवस एक भी जीय, व्यर्थ स बर्ष अज्ञानी

२०९ खाणू कौंडय धर्म ले, करे विपिन जा ध्यान १११ कथा
क्षण में अर्हत गुण गहे, पुनः जेत प्रस्थान
पुनः जेत प्रस्थान, मार्ग निश लप कर खाणू
ध्यान मग्ने यों बैठ, शिला सम बन ले खाणू
चोर आय रख माल, कौंड तन सोय विताबे
प्रात समझ कर भूत, कौंड लख चोर डराबे

२१० अनुद्योवी व आलसी, जी सौ वर्ष न सार ११२
दृढ़ उद्योगी एक दिन, जीय करे साकार
जीय करे साकार, अर्थ रस भाव उठाबे
उद्योगी ही जीय, मनुज तन श्रेष्ठ बनाबे
कह भगवन समझाय, गहे नर सुख उद्योगी
चाहे जी सौ वर्ष, व्यर्थ जीय अनुउद्योगी

२११ सप्पदास दीक्षा गहे, पर झट हुए उदास ११२ कथा
सांप डसा छुरा लिए, हत्या स्वयं प्रवास
हत्या स्वयं प्रयास, गहे जब कर में छूरा
चित्त बने परिशुद्ध, शील गह अर्हत पूरा
सुन भगवन समझाय, सप्प यों अर्हत पावे
मन में आवे शील, तभी वे आलस त्यागे

कुं० सं०   ध० सं०

२१२ पंच स्कन्धम उत्पति, न विनाश जेहि ज्ञान
जीवन उसके सौ बरस, होवे व्यर्थ समान
होवे व्यर्थ समान, जन्म जो नाशम जाने
जीकर भी एक दिन, जीय यह श्रेष्ठम माने
कह भगवन समझाय," स्कन्ध ज्ञान उघाओ
जन्म नाश लो जान, जन्म तब सुफल बनाओ

२१३ दार श्रावस्ती की दुखी, पति दो पुत्र गमाय ११
मातु पिता भाई सभी. एक चिता जल जाय
एक चिता जल जाय, शोक का पर्वत टूटे
आँसू आँख सुखाय, हृदय कण-कण टूटे
बन पगली भरमाय, शोक से बनकर नंगी
जाय सुगत के पास, दशा ले वैसी नंगी

२१४ ज्यों भगवन सम्मुख हुई, बैठी उकड़ू ठान ११३
मन में लज्जा आ गई, सुजन करे पट दान
सूजन करे पट दान, सुनाम बन पटाचारा
भगवन दे उपदेश, शोक का घटता पारा
थेरी लख जल बून्द, ज्ञान स्कन्धम आवे
जान दोष यह सूक्ष्म, सुगत तब वचन सुनावे

२१५ जो न लखे अमृत पदम, जी सौ वर्ष न सार ११
जो लख ले निर्वाण को, जी इक दिन साकार
जी इक दिन साकार, अर्थ रस भाव उठावे
बिन अमृत पद देख, जीय नर व्यर्थ गमावे
कह भगवन समझाय, निर्वाण जो लख पावे
जीना तब साकार, अमिय पद नेखम पावे

कुं० सं० धं० सं०

२१६ श्रावस्ती इक सेठ की, किशा गोतमी दार ११४ कथा
इकलौता जब सुत मरे, हृदय फाड़ चित्कार
हृदय फाड़ चित्कार, गोद ले मृत सुत दौड़ी
वैद्य-वैद्य तहँ जाय, बिलखकर सब उर तोड़ी
व्याकुल पगली जाय, सुगत को पुत्र दिखायी
दे दे इसको जान, सुगत से बिलख सुनायी

२१७ सुगत कह तब किशा सुनो, बचता एक उपाय ११४ कथा
सरसों उस घर से गहो, जिस घर मरण न आय
जिस घर मरण न आय, गोतमी घर घर खोजी
सरसों गही न जान, जीवित से मृत्यु दूजी
कह भगवन समझाय, मृत्यु को सत्यम मानो
यह भव है सब झूठ, दीप की लौ लख जानो

२१८ जो न लखे उत्तम धरम, जी सौ वर्ष न सार ११५
गर लख ले उत्तम धरम, जी एक दिन सुसार
जी एक दिन सुसार, अर्थ रस भाव उठावे
गह के उत्तम धर्म, मनुज तन सुफल बनावे
कह भगवन समझाय, श्रेष्ठ सब जीवन धरमी
जीकर भी सौ साल, व्यर्थ जो बने न धरमी

२१९ श्रावस्ती इक नार को, जन्म पुत्र हो सात ११५ कथा
उस स्त्री को फिर हुई, ठीक पुत्रियाँ सात
ठीक पुत्रियाँ सात, मर्द पर क्षण में गुजरे
पेट भरण भी शोक, मठः रह दिवसम गुजरे
लख भगवन समझाय, श्रमण में रमती वृद्धा
उसका जीवन पूर्ण, धर्म में रखकर श्रद्धा

पाप वर्ग—९

कुंडलियां संख्या | मूल धम्मपद संख्या

२२० पुण्य कार्य कर शीघ्रता, पाप से मन हटाय ११
धीमी गति यदि पुण्य में, मन पापम लग जाय
मन पापम लग जाय, मर्म रस भाव उठावे
पुण्य कार्य कर शीघ्र, पाप से चित्त हटावे
कह भगवन समझाय, पुण्य में चाल बढ़ाओ
कार्य शीघ्र कर पुण्य, पाप को दूर भगाओ

२२१ दीन द्विज श्रवस्तीका, चूळेक साटक नाम ११६
परिवार मिल गुजर करे, वसन ओढ़ इक धाम
वसन ओढ़ इक धाम, विप्र यह मन में चाहे
चादर कर दूं दान, किन्तु पर मोह सतावे
फिर-फिर सोचे रात, अन्त खुद द्विज यी बोले
चादर कर दे दान, धर्म हित निश्चय ले ले

२२२ पुरुष यदि कुछ पाप करे, पुनः नहीं दुहराय ११
होवे उसमें रत नहीं, जमित पाप दुखदाय
जमित पाप दुखदाय, मर्म रस भाव उठावे
अगर कभी कर पाप, जन्म भर उसे भुलावे
कह भगवन समझाय, पाप मत जमा कराओ
अगर कभी कर भूल, पुनः मत उसे जुटाओ

कु॰ सं॰ घ॰ स॰

२२३ परम सेवलक थेर को, लालु दाय उकसाय ११७ कथा
कर्म संघादिसेष हित, बार-बार भड़काय
बार--बार भड़काय, सेय रुक फर ठहरावे
कर्म बुरा कर जाय, पाप को यो दुहरावे
कह भगवन समझाय, पाप का फल सब भोगे
भुवन लोक में शोक, बाद दुख भर फर भोगे

२२४ पुरुष यदि कुछ पुण्य करे, बार-बार दुहराय ११
उसमें होवे रत अधिक, जमित पुण्य सुखदाय
जमित पुण्य सुखदाय, मर्म रस भाव उठावे
लोग करे यदि पुण्य, पुनः मत उसे भुलावे
कह भगवन समझाय, पुण्य भंडार बढ़ाओ
एक बार कर पुण्य, पुनः कर उसे जुटाओ

२२५ कश्यप थेर वास करे, गुहा पिप्पलि नाम ११८ कथा
कन्या लावा दानकर, विषधर से सुरधाम
विषधर से सुर धाम, फिर देव कन्या आयी
लाजदेव धीत नाम, थेर की टहल उठायी
रोके अति ही थेर, गगन में रोती कन्या
भगवन तब समझाय, टहल तुम कर लो कन्या

२२६ मिलता जब तक फल नहीं, पापी पाप सुहाय १९
पापी फल जब भोग ले, पाप तभी लख पाय
पाप तभी लख पाय, मर्म रस भाव उठावे
पाप पके जब पूर्ण, पाप तब कष्ट दिलावे
कह भगवन समझाय, होश तब आवे पापी
पाप जभी फल लाय, पाप को समझे पापी

कु॰ सं॰ धं॰ सं॰

२२७ जब तक फल न पुण्य मिले, भद्र न पुण्य सुहाय १२०
पुण्य फल जब भद्र चखे, पुण्य तभी लख पाय
पुण्य तभी लख पाय, मर्म रस भाव उठावे
पुण्य दीख तब सत्य, रूप जब पुण्य दिखावे
कह भगवन समझाय, पाप फल पुण्य बतावे
जब तक मिले न पाक, रूप ना उभय दिखावे

२२८ अनाथ पिण्डक सेठ के, द्वार रहे घर देव ११९ १२० कथा
श्रमण लिए अन्नदान को, मना करे वह देव
मना करे वह देव, जान यह भगवन बोले
करो सेठ तुम माफ, पाप का फल यह भोगे
कह भगवन समझाय, देव अब क्षमा उगाहे
पाप पाक यह भोग, पाप अब इसे लखावे

२२९ उपेक्षा मत पाप करो, गुन मुझ पास न आय १२१
बून्द बून्द ज्यों घट भरे, लघु लघु पाप भराय
लघु लघु पाप भराय, मूर्ख यों पाप जुटावे
अल्प पाप भ त्याग, पाप नर समझ हटावे
कह भगवन समझाय, पाप से करो सुरक्षा
अल्प अल्प बढ़ जाय, करो मत पाप उपेक्षा

२३० जेतवन में भिक्षु ठहर, करे एक अपराध १३१ कथा
कोई सीख न ध्यान दे, करे पुनः अपराध
करे पुनः अपराध, सुगत तब भिक्षु बुलावे
शास्त्र सुन उपदेश, दोष भिखु निम्न बतावे
कह भगवन समझाय, पाप को अल्प न समझो
अल्प अल्प बढ़ जाय, पाप सब अल्पम बरजो

सं०　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　ध० सं०

२३१ उपेक्षा मत पुण्य करो, कह मुझ पास न आय १२२
बूंद बूंद ज्यों घट भरे, लघु लघु पुण्य भराय
लघु लघु पुण्य भराय, धीर यों संचय करते
नहीं पुण्य क्षण त्याग, पुण्य का घट यों भरते
कह भगवन समझाय, अल्प भी पुण्य उगाहो
अल्प अल्प बढ़ जाय, सदा ही पुण्य सुचाहो

२३२ श्रवस्ती का एक गृही, निमंत्रित करे संघ ११२ कथा
नगर घोषणा कर सुजन, चाहे सभी प्रबध
चाहे सभी प्रबंध, अन्य सहयोग उगाहे
बिलाल कर लघुदान, उपासक उसे सराहे
बिलाल के सुन दान, उपासक वर जन माने
सुन भगवन समझाय, पुण्य मत लघु कह जाने

२३३ जैसे वणिक महाधनी, त्यागे पथ भयभीत १२३
साथ अल्प यदि काफिला, तजे मार्ग भयभीत
तजे मार्ग भयभीत, पुनः जो जीना चाहे
जहर करे परित्याग, पुरुष जो जीवन चाहे
कह भगवन समझाय, पुरुष यों पापम छोड़े
तजे वणिक ज्यों मार्ग, मनुज जो विष को छोड़े

२३४ कथा श्रवस्ती की सुनें, वणिक महाधन नाम १२३ कथा
भिक्षु पाँच सौ से कहे, साथ चलें श्रीमान
साथ चलें श्रीमान, अमुक स्थान चलेंगे
खाद्य वास सब ठीक, आर्य कर हमीं करेंगे
बैलगाड़ी सवार, राह में चोर घिरावे
जान मार्ग भयभीत, वणिक नः पैर बढ़ावे

कु० सं०　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　प० स०

२३५ घाव रहित यदि हाथ से, विषको पुरुष उठाय　　१२४
घाव रहित तन में कभी, जहर नहीं लग पाय
जहर नहीं लग पाय, मर्म रस भाव उठावे
जो न करे कुछ पाप, पाप फल नहीं उठावे
कह भगवन समझाय, पाप फल उसे सतावे
करे कर्म जो पाप, फल तो अवश्य चखावे

२३६ वेणु वन में वास करे, कुक्कुट मित्त निषाद　१२४ कथा
राजगिरी की सेठ सुती, मोहित वही निषाद
मोहित वही निषाद, संग वे साथ बितावे
सात पुत्र दे जन्म, युगल यो जीव बितावे
हिरन पकड़ कर जीय, मार जीव युगल जीवे
आज्ञा सब मन भाय, पत्नी सह पुरुष जीवे

२३७ एक दिवस निषाद वही, बैठ जाल फैलाय　१२४ कथा
प्रात सुगत जायें वहीं, मृगा नहीं फस पाय
मृगा नहीं फस पाय, निषादः मन में आवे
वही साधु मृग खोल, सुगत को मारन धावे
सेठ सुती तब आय, सखी मम पिता न मारो
श्रोतापन फल पाय, सभी कुटुंब मुझे उबारो

२३८ धर्म सभा में भिक्षु गण, प्रश्न करें भगवान
सबब उठा निषाद सुती, धर्म प्राप्त सम्मान
धर्म प्राप्त सम्मान, सुगत तब भिक्षु बुझावे
आज्ञा पालन मान, पत्नी न पापम आवे
कह भगवन समझाय, अघाव कर विष न पैठे
जो न करे कुछ पाप, पाप ना उसे घसीटे

कु० सं० ध० सं०

२३९ दोष रहित शुचि शुद्ध को, नर यदि दोष लगाय १२५
उसी मूर्ख को लौट कर, पाप वही लग जाय
पाप वही लग जाय, धूलि कण फेकें जैसे
दिशा वायु जिस आय, लौट फिर आवे वैसे
कह भगवन समझाय, दोष मत दो निर्दोषी
उलट दोष आ जाय, हानि क्या हो निर्दोषी

२४० कथा श्रवस्ती की सुनें, कोक शिकारी श्वान १२५ कथा
वन पथ पिण्ड पात श्रवण, लखे बढ़े सुनसान
लखे बढ़े सुनसान, शिकार न कोक उगाहे
पुनः मिले वह भिक्षु, कोक तब मारन चाहे
भिक्षु चढ़ एक वृक्ष, श्वान सब तरु को घेरे
कोक तानकर तीर, भिक्षु पर कस कर छोड़े

२४१ कोक तीर प्रहार फलित, सरके भिक्षु कषाय १२५ कथा
वस्त्र गिर वह कोक ढँके, श्वान कोक झपटाय
श्वान कोक झपटाय, श्वान सब नोच गिरावे
अपने कुक्कुर हाथ, कोक यों जान गमावे
कह भगवन समझाय, कोक मन पाप समावे
झूठ भिक्षु पर दोष, कर्म का पाक उठावे

२४२ कोई जन्मे गर्भ में, पापी नरकम जाय १२६
सुगति कर्म जो नर करे, स्वर्ग लोक को पाय
स्वर्ग लोक को पाय, अनाश्रव महतम पावे
पावे परिनिर्वाण, अनाश्रव यह गति पावे
कह भगवन समझाय, महत वर है निष्पापी
पार निर्वाणम पाय, अनाश्रव जो निष्पापी

कुं० सं० धं० सं०

२४३ श्रवस्ती की कथा सुनें, कूलूपग मणिकार १२६ कथा
तिस्स नाम के थेर को, भोजन दे सत्कार
भोजन दे सत्कार, तिस्स जब वहीं पधारे
कूलू पग का क्रौंच, मणि एक निगल पुकारे
मणिकार यही सोच, थेर यही मणि चुरावे
लाख मना कर दार, कूलू ना सिर झुकावे

२४४ प्रातः कूलू थेर को, निर्मम बन अति पीट १२६ कथा
निकट लख एक क्रोंच को, मारे लात घसीट
मारे लात घसीट, क्रौंच तब प्राण सिधारे
थेर कहे मणि क्रौंच, निगल कर यही पुकारे
कहा न मैंने जान, क्रौंच को मार रहोगे
द्रव्य हानि का लोभ, कभी ना सहन करोगे

२४५ उसी मार से थेर मर, पाये परिनिर्बाण १२६ कथा
मणिकार घर क्रौंच जनम, पावे जन्म समान
पावे जन्म समान, दार को स्वर्गम मिलता
कूलू गहले मृत्यु, नरक में जन्म उठाता
कहु भगवन समझाय, कर्म फल मनुज दिखावे
जो जैसे कर आय, गत वही वैसे पावे

४६ नहीं अम्बर न सिन्धु में, न गिरि विवर प्रवेश १२७
भव में कुछ स्थान नहीं, पाप कर्म बच क्लेश
पाप कर्म बच क्लेश, पाप फल सहज दिखावे
जीव नहीं बच पाय, पाप फल अमिट सतावे
कह भगवन समझाय, पाप का फल है गुरुतर
जीव नहीं बच पाय, सिन्धु या गिरि उड़ अम्बर

कुं० सँ०　　　　　　　　　　　　　　　　ध० सं०

२४७ जेत विपिन में बुद्ध से, बुझे भिक्षु फल तीन १२७ कथा
काक जला नभ में उड़े, कैसे सुगत प्रवीण
कैसे सुगत प्रवीण, सिन्धु में नारी फेंकी
सात भिक्षु घुट जाय, द्वार गुफ शिलाय सरकी
कह भगवन समझाय, सभी ये कर्मन भोगे
कहीं नहीं बच पाय, पाप के फल सब भोगे

२४८ नहीं अम्बर न सिन्धु में, न गिरि विवर प्रवेश १२८
भव में नहीं निवास कहुँ, दे न मृत्यु जित क्लेश
दे न मृत्यु जित क्लेश, अर्थ रस भाव उठावे
मृत्युम कसती जीव, कोई न इसे बचावे
कह भगवन समझाय, मृत्यु से बचा न कोई
कहीं नहीं छिप पाय, शक्ति ना ऐसी कोई

२४९ कपिल वस्तु चर्चा सनें, सुप्प बुद्ध वर शाक्य १२८ कथा
सुगत रूप दामाद को, कड़ा सुनावे वाक्य
कड़ा सुनावे वाक्य, नगर दर रोक सुनावे
सुती करे सम त्याग, नगर में घुस नहीं पावे
शास्तः कह आनन्द, सुप्प दिन सात सिधारे
सीढ़ी लग मर जाय, सुप्प यों प्राण गुजारे

दंड वग्ग—१०

कुंडलियाँ　　　　　　　　　　　　　　　　　　मूल धम्मपद

संख्या　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　संख्या

२५० डरते सब जन दंड से, मृत्यु से भय खाय १२९
खुद समान बुझ अन्य को, नहीं अन्य हत्याय
नहीं अन्य हत्याय, नहीं पर को उकसाओ
पर जन लिये प्रहार, नही पर को भड़काओ
कह भगवन समझाय, प्राण सब तुल्लम समझो
जैसे अपना प्राण, प्राण सम पर का समझो

२५१ जेत विपिन की कथा सुनें, भिखु एह छः वर्गीय १२९ कथा
परम क्रोध में आय थे, मारे पर वर्गीय
मारे पर वर्गीय, भिक्षु वे सत्रह होवे
भिक्षुम सत्रह जाय, सुगत से कथा सुनावे
कह भगवन समझाय, मृत्यु से सभी डरावे
यही सोच खुद आप, अन्य न कोई सतावे

२५२ डरते सब जन दंड से, सब को जीवन भाय १३०
खुद समान बुझ अन्य को, नहीं अन्य हत्याय
नहीं अन्य हत्याय, नहीं पर को उकसावे
पर जन लिये प्रहार, नहीं पर को भड़कावे
कह भगवन समझाय, प्राण सब नर को भावे
नहीं किसी को मार, दंड से सभी डरावे

कुं०सं० ध० सं०

२५३ छः वर्गी रह जेतवन, सत्रह वर्गी मार १३० कथा
अपमानित कर पैर से, भिखु पर करे प्रहार
भिखु पर करे प्रहार भिक्षुजा सुगत सुनावे
छः वर्गी जब आय, सुगत तब वचन सुनावे
कह भगवन समझाय, प्राण प्रिय होते नरको
खुद समान सब बूझ, प्रहार न करो किसी को

२५४ अपने सुख की चाह में, सुख चाहक पर पीट १३१
सुख चाहक समकक्ष को, दंडों से बहु पीट
दंडों से बहु पीट, मरकर सुख नहीं पावे
मर कर वह तब जीव, अधिकही कष्ट उठावे
कह भगवन समझाय, लाभ ना मारक पावे
मरकर नरकम जाय, शोक अति कष्टम पावे

२५५ सुख चाहक पर जीव को, जो न दड से मार १३२
अपने सुख की चाह में, जो न अन्य को मार
जो न अन्य को मार, वही सुख भोगम पावे
मरकर सुख भरमार, वही नर सुख सब पावे
कह भगवन समझाय, मार सब अनुचित घातक
करे नहीं पर चोट, स्वार्थ हित सुख के चाहक

२५६ भिक्षा हित भगवान मुनि, नगर श्रवस्ती जाय १३१,१३२कथा
पथमें बालक साँप को, मार मार हर्षाय
मार मार हर्षाय, बाल सब दंड चलावे
एक साँप को मार, बाल सब कुगत करावे
कह शास्ता बहुबाल, लाभ वध पाव न कोई
मर कर जहँ उत्पन्न, सुख नहीं पाओ कोई

कु० सं० ध० सं०

२५७ कड़वा वचन न बोलिए, अन्य भी कटु सुनाय १३३
प्रतिवाद दुखदायी अति, पलट दंड मिल जाय
पलट दंड मिल जाय, वचन नहीं कटु उचारे
जो मन को प्रिय भाय, वाक्य सब मधुर उचारे
कह भगवन समझाय, बचन कटु क्रोध उगावे
करे लोग प्रतिवाद, वचन कटु दंड दिलावे

२५८ टूटे कांसे की तरह, जब निशब्द बन जाय १३४
पाओ तब निर्वाण तुम, रोक नहीं कुछ पाय
रोक नहीं कुछ पाय, अर्थ रस भाव उठावे
सुनके कर्कश शब्द, विकार न मन में लावे
कह भगवन समझाय, बनो ज्यों कांसे फूटे
शान्त सरिस निःशब्द, बनो तुम कांसे टूटे

२५९ पूर्व जन्म का पाप चल, कुण्ड धान रह साथ १३३,१३४कथा
जेतवन में थेर रहे, स्त्री हर क्षण साथ
स्त्री हर क्षण साथ, कुण्ड ना मुख पहिचाने
लोग लखे पर दार, थेर को निन्द बखाने
निन्दा सुनकर कुण्ड, भिक्षु को वचन सुनावे
ऐसी सुन सब बात, सुगत तब कुण्ड बुझावे

२६० ज्यों गोपालक हाँकते, गोचर लठ ले गाय १३५
बुढ़ापा मृत्यु जीव की, आयुम को ले जाय
आयुम को ले जाय, मर्म रस भाव उठावे
मृत्यु जरा अति सत्य, आयु को हाँक पठावे
कह भगवन समझाय, मृत्यु से बचा न कोई
बल पूर्वक ले जाय, मृत्यु से डटा न कोई

कु० सं० ध० सं०

२६१ पूर्वारामम स्त्रियाँ, धरी उपोशथ कर्म १३५ कथा
किन्तु नहीं निर्वाण हित, उदासीन सब कर्म
उदासीन सब कर्म, सुगत यह जान बुझावे
महा विशाखा बोध, सुगत यह तथ्य सुनावे
ये स्त्री यों जीव, जीव ज्यों पशु कहावे
लाठी से ज्यों हाँक, मरण त्यों इसे हँकावे

२६२ पाप कर्म करते समय, मूढ़ समझ ना पाय १३६
पीछे अपने कर्म पर, दुख से हृदय तपाय
दुख से हृदय तपाय, आग ज्यों स्वयं तपाती
वैसे दुख की आग, मूढ़ को दग्ध सताती
कह भगवन समझाय, पाप का फल है भारी
जन्म जन्म पछताय, दुखों की गठरी भारी

२६३ गृद्ध कूट गिरि व्रज के, उतर थेर दो आय १३६ कथा
लक्षण महामौद उभय, अजगर प्रेत दिखाय
अजगर प्रेत दिखाय, प्रेत बन अजगर जलता
पूर्व कर्म संताप, पूँछ से सिर तक जलता
कह भगवन समझाय, पूर्व यह धाम जलावे
बुद्ध कुटी कर भस्म, पाप का पाक उघावे

२६४ दण्ड रहित को दण्ड दे, निर्दोषी को दोष १३७–१४०
वह प्राणी है भोगता, दसमें से इक दोष
दसमें से इक दोष, उसे तब शीघ्र सतावे
कड़ी वेदना हानि, रोग तन भग्न उठावे
राज दण्ड विक्षेप, वर्ण बंधू क्षय निन्दा
भोग नष्ट घर आग, जन्म शठ नरकम फंदा

कु० सं० ध० सं०

२६५ बह्म मौद को तैर्थगण, चोर भेज मरवाय १३७-१४०
राजगीर विहार समय, गुफा बीच मरवाय
गुफा बीच मरवाय, कुणिक जब जाने इसको
तैर्थ सहित सब चोर, जलावे जीवित सबको
कह भगवन समझाय, पाप कर मौद उघावे
मातु पिता को मार, पूर्व यह मौद सतावे

२६६ आशा व संदेह सभी, जिसके हुए न नष्ट १४१
मनुज कभी न शुद्धि गहे, उसका मिटे न कष्ट
उसका मिटे न कष्ट, भले वह रह ले नंगा
जटा कीच ले लेप, करे उपवास न चंगा
कड़ी भूमि पर सोय, करे रज भष्म निराशा
उंकड़ू बैठ न शान्त, जिसे मन संशय आशा

२६७ जेतवन बहु भाण्डि श्रमण, जमा करे सामान १४१ कथा
एक दिवस निकाल सभी, दिखा धूप सामान
दिखा धूप सामान, सभा में सुगत बुझावे
भिक्षु बनो अल्पेक्ष, सुगत यह भाण्डि बुझावे
भिक्षु क्रोध तब लाय, बना ज्यों अधर्म नंगा
'ऐसा रहना ठीक' भखे बहु भाण्डिक नंगा

अलंकृत रहते हुए, अगर पुरुष हो शान्त १४२
नियमों में तत्पर रहे, ब्रह्मचारी व दान्त
ब्रह्मचारी व दान्त, प्राणी हित दण्ड त्यागी
वही बिप्र परि शुद्ध, श्रमण वह भिक्षुम त्यागी
कह भागवन समझाय, विप्र वह भिक्षु कहावे
ब्रह्मचारी व शान्त, जीव हित दण्ड हटावे

कुं० सं० धं० सं०

२६९ महामात्य प्रसेन जित, संतति सुन्दर नाम १४२ कथा
गज चढ़ नदी तीर चले, मस्त सुरा पी जाम
मस्त सुरा पी जाम, सुगत लख नमः पुकारे
मरी नर्तकी शाम, बिलख फिर सुगत पुकारे
जेतवन तभी जाय, सुगत उपदेश कमावे
पैर मोड़ तब बैठ, धर्म में ध्यान लगावे

२७० संतति वैसे ध्यान रत, परि निर्वृत हो जाय १४२ कथा
अलकृत ही बैठ सतन, तावंतिस को जाय
तावंतिस को जाय, सुगत तब भिक्षु बुझावे
संतति अर्हत पाय, श्रवण यह भिक्षु कहावे
कह भगवन समझाय, भिक्षु वह श्रमण कहावे
दण्ड जीव हित त्याग, शान्त जो दान्त जनावे

२७१ ऐसे नर भी लोक में, करे न कर्म निषिद्ध १४३
लज्जा कर खुद आप ही, त्यागे कर्म निषिद्ध
त्यागे कर्म निषिद्ध, अश्व वर सहे न कोड़ा
त्यों श्रेष्ठः जो लोग, सहे ना निन्दा कोड़ा
कह भगवन समझाय, पुरुष भी होते ऐसे
करे न अनुचित कर्म, निषेध न करते जैसे

२७२ कोड़े पड़े अश्व तरह, उत्तम होकर लोग १४४
उद्योगी संवेग गह, श्रद्धा ले जो लोग
श्रद्धा ले जो लोग, शील और वीर्यंम गहले
होकर समाधि युक्त, विनिश्चय धर्मंम रख ले
सुविद्या आचरण, युक्त जो स्मृति जोड़े
यही भाँति दुख पार, बचो तुम दुख के कोड़े

कु० सं० ध० सं०

२७३ पिलोतिक की कथा सुनें, फिरे पुर एक बाल १४३-१४४ गा
वस्त्र खंड पहने हुए, लेकर हाथ कपाल
लेकर हाथ कपाल, उसी को दीक्षा दे दे
थेर सन्त आनन्द, बाल को धर्मभ दे दे
दीक्षा लेकर बाल, धर्म में चित्त लगावे
पहन पीत काषाय, धर्म का पाठ सुनावे

२७४ पिलोतिक वह बाल जभी, लेय धर्म सानन्द १४३-१४४ गा
बालक वस्त्र कपाल को, टांग धरे आनन्द
टांग धरे आनन्द, बाल वह फिर फिर आवे
वृक्ष निकट से घूम, अन्त में पूर्ण भुलावे
कह भगवन समझाय, पुत्र अब ज्ञान जगावे
अर्हत अति ही शीघ्र, शिष्य वह बाल उठावे

२७५ पानी को जब नहर पति, बहा ढोय ले जाय १४
निर्माणक धनु वाण का, सर को सीध कराय
सर को सीध कराय, काठ को बढ़ई साजे
सुब्रती जेहि जीव, दमन खुद चित्त करावे
कह भगवन समझाय, स्वयं ये अरजे प्राणी
स्वयं बनो तुम विज्ञ, स्वयं बन असली ज्ञानी

२७६ जेतवन में धर्म गहे, बाल सुखी श्रमणेर १४५ गा
अल्प काल प्रव्रजित हो, सेवा कर गुरु थेर
सेवा कर गुरु थेर, मार्ग में वस्तु निहारे
सर नहर और चक्र, देख मन सघन विचारे
निर्जीवम ये चीज, मनुज ज्यों चाह बनावे
चेतन जो यह चित्त, भला नर क्यों न दबावे

जरा वर्ग—११

कुंडलियां मूल

संख्या धम्मपद संख्या

२७७ कैसे मुख पर यह हँसी, कैसा यह आनन्द १४६
नित्य सहज जब जल रहा, कैसे रह आनन्द
कैसे रह आनन्द, प्रदीप को क्यों न ढूँढ़ो
तम से घिरे प्रदीप, प्राणी तुम क्यों न ढूँढ़ो
कह भगवन समझाय, नित्य यह जलता देखो
तम में खोजो दीप, हँसो मत ज्वाला देखो

२७८ विशाखा लेय संगिनी, सभा जेत वन आय १४६ कथा
सुरा पी मदमस्त हुई, नाच गान हर्षाय
नाच गान हर्षाय, सुगत कह आई कैसे
धर्म श्रवण सुन जान, सुरा पी आयी कैसे
करती तुम आनन्द, तमों से घिर कर नारी
प्रज्ञा रूपी दीप, नहीं पर तुमने वारी

२७९ देखो चित्रित तन यही, फूल व्रणों से युक्त १४७
पीड़ित रोगी सा बना, संकल्पों से युक्त
संकल्पों से युक्त, स्थिति अनित्यम जिसकी
मानव देह शरीर, नित्य ना थाती इसकी
कह भगवन समझाय, लाश जब सड़ती देखो
गंध घृणा उपजाय, दशा तब तन की देखो

कुं० सं० धं० सं०

२८० राजगृही की सिरिमा, गणिका बहुत प्रसिद्ध १४७ कथा
रूपवती अमूल्य रतन, गही धर्म परिशुद्ध
गही धर्म परिशुद्ध, वही जब मृत्यु उघायी
तीन रोज तक लाश, फूल भय-दशा बनायी
लख भगवन समझाय, देह वह सुन्दर देखो
चित्रित देह विचित्र, दशा नर तन की देखो

२८१ रूप देह सब जीर्ण कह, भंगुर घर यह रोग १४८
गंदा गंधित तन मनुज, प्राप्त विनाशम योग
प्राप्त विनाशम योग, मरण तक जीवन मानो
मृत्यु साथ समाप्त, बात यह पक्की जानो
कह भगवन समझाय, देह जब बूढ़ी होती
शीघ्र नाश तन पाय, दवा ना इसकी होती

२८२ श्रवस्ती की एक गली, भगवन भीख उघाय १४८ कथा
उसी गली में उत्तरी, थेरी भीख उघाय
थेरी भीख उघाय, अधिक थी वृद्धा थेरी
चीवर पैर फँसाय, चोट खा लुढ़की थेरी
सुगत पास कह जाय, देह अब जीर्णम तेरी
शीघ्र नाश तन पाय, आयु अब अल्पम तेरी

२८३ लौकी सरदी सम सड़ी, देह जाय यह फेंक १४९
हड्डी साफ कपोत सी, लख मन रति क्यों सेंक
लख मन रति क्यों सेंक, मर्म रस भाव उठावे
भंगुर क्षणिक शरीर, देख क्यों काम उगावे
कह भगवन समझाय, देह कह सड़ती लौकी
ज्यों लौकी दे फेंक, देह भी जाती फेंकी

कु॰ सं॰ ध॰ स॰

२८४ पंचशत भिखु जेत विपिन, गहले कर्म स्थान १४९ कथा
वन जा भिक्षु भाव करे, गहे तादि सम्मान
गहे तादि सम्मान, पुनः वे लौट पधारे
मरघट भेजे बुद्ध, निशा सब वहीं गुजारे
देख मृतक की देह, भिक्षु सब राग जगावे
तभी सुगत कह भिक्षु, भिक्षु ना अर्हत पावे

२८५ हड्डी का शरीर नगर, रक्त मांस लिप युक्त १५०
जरा मृत्यु अभिमान छिपे, डाह कलुष सब गुप्त
डाह कलुष सब गुप्त, मर्म रस भाव उठावे
यह तन दुर्गुण खान, मांस तह लहू छिपावे
कह भगवन समझाय, देह यह मिट्टी गड्डी
भंगुर रूप सुकाय, क्षणिक यह मानव हड्डी

२८६ रूपम नन्दा सुन्दरी, गुण का ले अभिमान १५० कथा
जनपद कल्याणी ठहर, धर्म लिये अनजान
धर्म लिये अनजान, रूप का गर्व सतावे
धर्म सभा नहीं जाय, रूप बुध अनित बतावे
एक रोज संयोग, सभा में आयी नन्दा
कर के सुगत प्रणाम, सभा में बैठी नन्दा

२८७ नन्दा के मन ज्ञान को, ताड़ गए भगवान १५० कथा
तरुणी पार्श्व एक खड़ी, तुरत किये भगवान
तुरत किये भगवान, बनी अति सुन्दर युवती
भगवन पंखा झेल, बृद्धा बन मरती युवती
नन्दा यह सब देख, हृदय अभिमान हटायी
गह के भगवन पैर, सुगत उर खोल दिखायी

२८८ सुचित्रित रथ राज सभी, हो जाते हैं जीर्ण १५१
वैसे यह शरीर मनुज, हो जाता है जीर्ण
हो जाता है जीर्ण, धर्म पर सन्त न बढ़ा
सन्त लोग कह सन्त, सन्त का धर्म न बूढ़ा
कह भगवन समझाय, बदन यह बने पुराना
संत धर्म पर नित्य, होय ना कभी पुराना

२८९ कोशल रानी मल्लिका, झुक कर कर स्नान १५१ कथा
कुक्कुर उनका पालतु, कर मैथुन अभियान
कर मैथुन अभियान, भूप यह देख धिकारे
रानी कह भूप आँय, कक्ष में भूप पधारे
रानी छत से देख, भूप को अधिक लजायी
बकरी सह संभोग, रानी कह नृप लजायी

२९० कह असत्य तो भूप को, रानी खूब छकाय १५१ कथा
कक्ष दोष कह के ठगी, पर मन में पछताय
पर मन में पछताय, मृत्यु गह नरक उघायी
सात रोज उपरान्त, पुनः वह तुषितम पायी
भिक्षु संग दे दान, मल्लिका पुण्य कमायी
करके भी वह पाप, तुषित में जन्म उघायी

२९१ बैल तरह बढ़ता रहे अल्प श्रुत जेहि जीव १५२
मांस बैल सम बढ़ चले, बढ़ी न प्रज्ञा चीज
बढ़ी न प्रज्ञा चीज, मर्म रस भाव उठावे
मूढ़ बढ़ावे अंग, नहीं वह ज्ञान जुटावे
कह भगवन समझाय, मूढ़ तो बूढ़ा होवे
बढ़े न ज्ञानम साथ, अंग ज्यों जीर्णम होवे

कु० सं० ध० स०

१९२ श्रवस्ती को कथा सुनें, ललुदायी रह थेर १५२ कथा
जाकर घर गृहस्थ के, उलट पुलट कह थेर
उलट पुलट कह थेर, अमंगल बोल सुनावे
जेहि करे पुन दान, उसे भी वही सुनावे
जो कर पाप कुकर्म, उसे वे साधु सुनावे
ललुदायी यों थेर, बैल सम मांस बढ़ावे

१९३ अनवरत भव दौड़ रहा, लिये अनेकों जन्म १५३
तनरूपी गृहकार को, ढूंढ़ रहा बहु जन्म
ढूंढ़ रहा बहु जन्म, मगर मैं पार न पाया
बार बार दुख लाय, जन्म सब शोक उधाया
कह भगवन समझाय, कठिन है ऐसी काया
बड़ी कठिन यह ढूंढ़, समझना आयी काया

१९४ मैंने तुझे देख लिया, गृहकारक तव रूप १५४
बना न फिर तुम घर सको, कारक तृष्णा रूप
कारक तृष्णा रूप, कड़ी हर भग्नम तेरी
धाम शिखर गिर जाय, कामना विखरी तेरी
चित्त हीन सस्कार, लिया अब अर्हत मैंने
तृष्णा मूल समाप्त, ज्ञान अब गहा मैंने

१९५ वोधितरु की बात सुनें, समाधि रत भगवान १५३-१५४ कथा
सूर्य अस्त के पूर्व ही, वशे मार भगवान
वशे मार भगवान, प्रथम पल तमः हटावे
दिव्य चक्षु पल मध्य, विशोधन नेत्र कटावे
अन्त याम में सत्व, सत्व पर करुणा लाये
प्रतीत्यः समुत्पाद, संवोधि सम्यक पाये

कुं० सां० धं० सं०

२९६ अरुणोदय सातेज यह, प्रज्ञा संबुधि ज्ञान १५३-१५४ कथा
तथागत यही प्राप्त कर, प्रसिद्ध कहे उदान
प्रसिद्ध कहे उदान, सहस जो बुद्ध सुनावे
वह उदान तरु बोधि, सुगौतम बुद्ध सुनावे
कह भगवन आनन्द, सुनो मैं वही सुनाऊँ
प्रज्ञा काल उदान, सुनो मैं पुनः सुनाऊँ

२९७ जो न मनुज पालन करे, ब्रह्मचर्य का धर्म १५५
जवानी धन जमा नहीं, दुख पाये स्व कर्म
दुख पाये स्व कर्म, वृद्ध हो चिन्ता पावे
जल विहीन सर बास, क्रोंच ज्यों कष्ट उघावे
कह भगवन समझाय, धर्म का जीवन लाओ
ब्रह्मचर्य यदि हीन, जन्म भर कष्ट उघावो

२९८ जो न मनुज पालन करे, ब्रह्मचर्य का धर्म १५६
जवानी धन जमा नहीं, दुख पाये स्व कर्म
दुख पाये स्व कर्म, वृद्ध हो दुख यों पावे
तीर धनुष ज्यों छूट, सकल गत बातें गावे
कह भगवन समझाय, पुरुष दुख जीय बितावे
सोच सोच गत बात, वृद्ध बन शोक उठावे

२९९ सेठ पुत्र वाराणसी, बिलकुल ज्ञान विहीन १५५-१५६ कथा
पिता ससुर का धन गहे, मदिरा पान प्रवीण
मदिरा पान प्रवीण, द्रव्य सब महल गमावे
भीख मांग भर पेट, भिक्षु की जूठन खावे
कह भगवन समझाय, नहीं यह द्रव्य कमावे
ब्रह्मचर्य ना लाय, व्यर्थ यह जन्म गमावे

आत्म वर्ग-१२

कुंडलियां संख्या | मूल धम्मपद संख्या

३०० अपने को यदि प्रिय समझ, अपने को रक्षाय १५७
जीवन के त्रियाम में, सुधी एक जग जाय
सुधी एक जग जाय, मर्म रस भाव उठावे
आवश्यक क्षण एक, ज्ञान जी जाग बितावे
कह भगवन समझाय, प्रहर इक जागो अपने
अगर समझ प्रिय आप, स्वयं को रक्षो अपने

३०१ संसुमार गिरि की कथा, रह बोधि नृप कुमार १५७ कथा
सुत हीन यह बोधि करे, मंजु महल तैयार
मंजु महल तैयार, न्योत दे सुगत बुलावे
सीढ़ी पर नव वस्त्र, सुगत ना पैर धरावे
बोधि चित्त पछताय, सुगत से प्रश्न करावे
क्यों न वस्त्र धर पैर, बोधि मन शोक उठावे

३०२ सुगत तब यह तथ्य कहें, सुन तुम बोधि कुमार १५७ कथा
पुत्र पुत्री न तुम गहो, पूर्व कर्म आधार
पूर्व कर्म आधार, पूर्व का जन्म गमाया
तुम कर अधिक प्रमाद, दार सह काल गमाया
कह भगवन समझाय, पुत्र ना पुत्री पायो
पिछला जन्म प्रमाद, युगल कर पाप कमायो

३०३ पहले नर खुद चाहिए, उचित काम कर योग १५८
बाद अन्य उपदेश दे, सुधी न दुख तब भोग
सुधी न दुख तब भोग, मर्म रस भाव उठावे
पहले कर खुद आप, अन्य को बाद बतावे
कह भगवन समझाय उचित सब कर्म उघाओ
तब दो पर उपदेश, तभी ना कष्ट उठाओ

३०४ शाक्य पुत्र उपनन्द अति, कर लोभम दे दान १५८ कथा
घूम घूम विहार कई, चीवर का ले दान
चीवर का ले दान, किन्तु पर बोध बतावे
तरुण भिक्षु दो बीच, कलह पट बाँट छुड़ावे
कह भगवन समझाय, नन्द उप खुद नर लोभी
शिक्षा क्या दे जीव, स्वयं कर अनुचित लोभी

३०५ अनुशासन ज्यों पर करे, कर त्यों स्वयं बनाय १५९
पूर्ण दमन कर खुद प्रथम, पर को तब दमनाय
पर को तब दमनाय, दमन खुद दुष्कर अपना
शासन करना अन्य, सीख पर सरलम कहना
कह भगवन समझाय, खुद जो करके दिखावे
सक्षम हित उपदेश, नहीं तो झूठ कहावे

३०६ योगाभ्यासी तिरस अति, दे भिखु सीख विचार १५९ कथा
करे खुद वह अमल नहीं, नहीं शुद्ध आचार
नहीं शुद्ध आचार, भिक्षु को कहे बुझावे
श्रमण धर्म लो ज्ञान, किन्तु खुद सोय बितावे
अन्य भिक्षु लख सोय, तिस्स अति क्रोध जनावे
नहीं धर्म ले ध्यान, भिक्षु पर खूब जमावे

कु० सं० ध० सं०

३०७ स्वामी अपना आप नर, गैर कौन नर नाथ १६०
पूर्ण दान्त यदि खुद करे, गह ले दुष्कर नाथ
गह ले दुष्कर नाथ, अर्थ रस भाव उठावे
करे प्राप्त निर्वाण, दमन जो खुद कर पावे
कह भगवन समझाय, जीव खुद पथ का गामी
करके स्वयं उपाय, बने नर खुद का स्वामी

३०८ काश्यप मातु देख सुतः, स्तन से पयधार १६०
वर्ष द्वादशम बाद दरश, पकड़ हृदय पुचकार कथा
पकड़ हृदय पुचकार, कुँवर काश्यप तब झिड़के
नहीं मोह सुत छोड़, कुँवर यह कहकर झिड़के
सुन सुख सुत की बात, पुत्र को अलग हटायी
अर्हत उस दिन प्राप्त, मोह जब मातु गमायी

३०९ राजगीर सेठी सुती, श्रावस्ती में ब्याह १६०
पति मन से बन भिक्षुणी, उसका जब हो ब्याह कथा
उसका जब हो ब्याह, गर्भ पर पति करावे
देवदत्त ले बात, संघ में कलह मचावे
बालक यही कुमार, कुँवर काश्यप कहलावे
प्रसेनजित शिशुपाल, अल्प वय अर्हत पावे

३१० जो नर खुद पापम जने, अपने कर उत्पन्न १६१
अपने पाप किया हुआ, शठ कर दुख उत्पन्न
शठ कर दुख उत्पन्न, स्वयं शठ शोक उठावे
शैल वज्र सम चोट, भुगत कर मूर्ख दुखावे
कह भगवन समझाय, मूर्ख जो पाप कमावे
नहीं अन्य कर शोक, शोक वह स्वयं उठावे

कु० सं० | ध० सं०

३११ महाकाल श्रवस्ती में, उपासक गुणवान १६१
प्रातः पहुँचे पोखरा, चोर धरे सामान कथा
चोर धरे सामान, लोग पर यह पतियावे
महाकाल ही चोर, लोग सब मार गिरावे
कह भगवन समझाय, महा ने की थी हत्या
पूर्व जन्म फँस नार, कन्त की थी हत्या

३१२ साखू तरू ज्यों फैलती, लता मालुवा ढांप १६२
दुराचार बढ़ तीव्र यदि, लेवे नर यों ढांप
लेवे नर यों ढांप, स्वयं वह कर्म उठावे
जैसा चाहे शत्रु, कर्म वह स्वयं उघावे
कह भगवन समझाय, मूढ़ कर भोगे जैसे
स्वयं करे वह कर्म, शत्रु मन चाहे जैसे

३१३ राजगीर में भिक्षुगण, कहे बुद्ध भगवान १६२
देवदत्त कुकर्म करे, सुनें आर्य भगवान कथा
सुनें आर्य भगवान, सुगत सुन बोध बतावे
दुराचार कर जीव, स्वयं ही शोक उघावे
कह भगवन समझाय, मालुवा तरू ज्यों ढांपे
त्यों नर कर के पाप, शोक ले मन में काँपे

३१४ बुरा कर्म करना सहज, जो कर खुद नुकसान १६३
कर्म कुशल जेहि हितकर, करना नहीं असान
करना नहीं असान, मर्म रस भाव उठावे
कर्म बुरा कर पाय, कर्म कर पछतावे
कह भगवन समझाय, अहित कर शोक उठावे
कर्मन नीच असान, जेहि कर आप दुखावे

कु०सं०		ध० सं०
३१५	राजगीर में एक दिन, देवदत्त चल संघ थेर आनन्द से कहे, भंग करूँगा संघ भंग करूँगा संघ, आनन्द सुगत सुनावे सुनकर ऐसी बात, सुगत यह वचन बुझावे कह भगवन समझाय, सुलभ सब कर्मन दुखकर उल्टी होती बात, कर्म सब हितकर दुष्कर	१६३ कथा
३१६	धर्म परक अरियान का, शासन विरचित श्रेष्ठ अर्हत से उपदिष्ट यह, शासन उत्तम श्रेष्ठ शासन उत्तम श्रेष्ठ, करे जो इसकी निन्दा मिथ्या ले विश्वास, पाप ले जो कर निन्दा कर वह स्वयं विनाश, शोक वह पावे जैसे फूल बांस ज्यों फूल, बांस को नाशे जैसे	१६४
३१७	काल थेर श्रावस्ती के, निन्दा कर बुध धर्म माता तुल्य उपासिका, चाही सुन बुध धर्म चाही सुन बुध धर्म, काल पर डांट सुनावे धर्म सभा मां जाय, काल तब विघ्न उठावे कह भगवन सुन थेर, नाश तुम शीघ्र उघाओ कर निन्दा बुध धर्म, शोक तुम सहज उठाओ	१६४ कथा
११८	अपना किया पाप करे, खुद को मलिन अशुद्ध जो न करे खुद पाप यदि, करे स्वयं को शुद्ध करे स्वयं को शुद्ध, शुद्धि सब अशुद्धि अपनी करे न कोई शुद्ध, शुद्धि खुद निर्भर अपनी कह भगवन समझाय, कोई न शुद्ध बनावे सब निर्भर खुद आप, मनुज खुद शुद्ध बनावे	१६५

कुं० सं० ध० सं०

३१९ चूलकाल को जेतवन, गांव लोग सब पीट १६५ कथा

उसको चोर समझ सभी, मारे खूब घसीट

मारे खूब घसीट, बचा पनिहारिन चलते

और नहीं तो लोग, प्राण ही उसके हरते

कह भगवन समझाय, चूल तो सत्य पिटावे

करके पाप कुकर्म, शोक वह स्वयं उघावे

३२० अपना हित मत हानिए, पर का हित बहु सोच १६६

स्वयं अर्थ की बात गुन, स्व साधन लग सोच

एक साधन लग सोच, अर्थ रस भाव उठावे

अपना पहले सोच, शुद्ध खुद स्वयं बनावे

कह भगवन समझाय, प्रथम तो अपना करना

स्व को शुद्ध बनाय, कुशल है हितकर अपना

३२१ चार मास पल पूर्व ही, उचरे कह भगवान १६६ कथा

चार मास में ठीक मैं, पाऊँ परिनिर्वाण

पाऊँ परिनिर्वाण, जान सब शोक मनावे

अत्त दत्थ कुछ सोच, ध्यान में चित जुटावे

थेर हृदय में सोच, सुगत के जीते पाऊँ

अर्हत पद अनमोल, सुगत के जीते लाऊँ

लोक वर्ग - १३

कुंडलियां संख्या — मूल धम्मपद संख्या

३२२ हीन धर्म मत सेविये, रह न प्रमादः लाय १६७
न मिथ्या विश्वास रखें, भव चक नहीं बढ़ाय
भव चक नहीं बढ़ाय, अर्थ रस भाव उठावे
आय गमन भव चक्र, मनुज मत और बढ़ावे
कह भगवन समझाय, लोक आ चिन्ता पावे
जन्म मरण मत पाल, शीघ्र नर इसे छुावेड़

३२३ दहर भिक्षु और बालिका, झगड़ करे अति क्रोध १६७ कथा
दहर भिक्षु लख हँस पड़े, कन्या मन अति क्रोध
कन्या मन अति क्रोध, बोल दी भिखु सिरमूंडा
भिखु कह तेरा वंश, वर्ण सब कुल सिरमूंडा
भगवन सुन समझाय, बालिके क्रोध न अच्छा
और दहर तुम भिक्षु, नीच तज धर्म्म अच्छा

३२४ उठे करे प्रमाद नहीं, गह ले सुचरित धर्म १६८
धर्माचारी सुख करे, युगल लोक ले धर्म
युगल लोक ले धर्म, अर्थ रस भाव उठावे
जो प्रमाद मत लाय, युगल भव हर्ष उठावे
कह भगवन समझाय, धरम जो उत्तम पाओ
धर्म आचरण लाय, उभय भव हर्ष उठाओ

कु० सं० धं० सं०

३२५ सुचरित जेहि धर्म करे, दुराचरण मत लाय १६९
धर्मचारी उभय भुवन, सुख पूर्वक रह पाय
सुखपूर्वक रह पाय, अर्थ रसभाव उठावे
धरे जेहि सच धर्म, युगल भव हर्ष उघावे
कह भगवन समझाय, कर्म मत बुरा उठाओ
जौं गह धर्म विशुद्ध, हर्ष द्वि लोक कमाओ

३२६ कपिल वस्तु विचरें सुगत, गह लें भिक्षा दान १६९ कथा
नृप शुद्धोधन के हृदय, क्रोध ठेस सम्मान
क्रोध ठेस सम्मान, बिगड़ नृप बुद्ध सुनावे
नगर कपिल में भीख, पुत्र ले मुझे लजावे
कह भगवन पितु भूप, वंश मम कर्म निभाऊँ
बुद्धवंश में भीख, चिर जेहि धर्म उठाऊँ

३२७ मरीचिका बुलबुला जिमि, इस भव को जो देख १७०
उसकी ओर यमः कभी, आँखें उठा न देख
आँखें उठा न देख, अर्थ रस भाव उठावे
भव जो क्षयमय जान, मृत्यु से नहीं डरावे
कह भगवन समझाय, लोक जो भंगुर माने
यम पर कर अधिकार, मृत्यु को तुच्छः जाने

३२८ पंच शत भिखु जेत गहें, बुध से कर्म स्थान १७० कथा
वन जा निस्फल फिर चलें, गहन सकें वे ज्ञान
गह न सकें वे ज्ञान, मरीचि लख भिक्षु सोचे
पहुंच जेतवन लौट, बून्द लख वर्षा सोचे
बनती मिट जल बून्द, देख वे मन में माने
यही हाल भव देह, ज्ञान पद अर्हत जाने

कु० सँ० ध० सं०

३२९ आओ देखो लोक यह, चित्रित रथः समान १७१
जिसमें मूर्ख लिप्त फसे, फसे न नर सज्ञान
फसे न नर सज्ञान, आसक्ति रखे न ज्ञानी
ज्ञानी भव से मुक्त, लिप्त न रहते ध्यानी
कह भगवन समझाय, क्षणिक यह भव सिमटाओ
राज यान भव बूझ, जीर्ण सम भव बिलगाओ

३३० उपद्रव को शान्त करे, सु-अभय राजकुमार १७१ कथा
नर्तकी संग राज सकल, दें भूप बिम्बिसार
दें भूप बिम्बिसार, अभय सत रात बितावे
निकल नर्तकी प्राण, अभय अति शोक उघावे
कह भगवन समझाय, व्यर्थ सब तेरे आँसू
यह भंगुर संसार, गुने ना तेरे आँसू

३३१ जो प्रमाद पहले करे, फिर प्रमाद मत लाय १७२
करे भुवन वह दीप्त ज्यों, मेघ मुक्त शशि लाय
मेघ मुक्त शशि लाय, अर्थ रस भाव उठावे
करे दीप्त यह लोक, प्रमाद जो फिर न लावे
कह भगवन समझाय, प्रमाद न फिर दुहराओ
अगर कभी कर आय, पुनः मत उसे उठाओ

३३२ सम्मूजनि मठ साफ कर, सारा समय बिताय १७२ कथा
ध्यान भावना में कभी, मन को नहीं लगाय
मन को नहीं लगाय, थेर रेवत समझावे
लेकर तब उपदेश, थेर झट अर्हत पावे
कह भगवन समझाय, थेर अब दुर्गुण त्यागे
ध्यान भावना लाय, चित्त अब उसका जागे

क्रं० सं० ध० सं०

३३३ जिसका किया पाप करम, पुण्यों से ढक जाय १७३
करे भुवन वह दीप्त ज्यों, मेघ मुक्त शशि लाय
मेघ मुक्त शशि लाय, अर्थ रस भाव उठावे
पाप मिटाकर पुण्य, भुवन को दीप्त करावे
कह भगवन समझाय, पुण्य से पापम भागे
पाप कर्म धुल जाय, पुण्य जब नर में जागे

३३४ भिक्षु बीच चर्चा छिड़ी, अंगुलि कँह उत्पन्न १७३ कथा
जीवन भर संहार कर, मरकर कँह उत्पन्न
मर कर कँह उत्पन्न, सुगत तब भिक्षु बतावे
परिनिर्वाणम पाय, शान्ति यों अंगुलि पावे
कह भगवन समझाय, सुमित कल्याणम पावे
यों कर पुण्यम ढेर, अंगुलि पाप ढंपावे

३३५ अंधा सम संसार यह, दर्शक भव में अल्प १७४
जाल मुक्त पक्षी तरह, स्वर्गम जाये अल्प
स्वर्गम जाये अल्प, अर्थ रस भाव उठावे
नर भव के अधिकांश, अंध सम जन्म बितावे
कह भगवन समझाय, स्वर्ग बस जाये ज्ञानी
खग ज्यों फँसकर जाल, अन्य सब जीये प्राणी

३३६ आलावी विहार ठहर, भगवन करे विचार १७४ कथा
एक जुलाहा की सुती, करे सुगत सत्कार
करे सुगत सत्कार, सुगत कुछ प्रश्न उठावे
कहाँ आय कहँ जाय, सुगत यों प्रश्न उठावे
उलट पुलट दे बोल, कभी कह यह मैं जानूं
कभी पलट दे प्रश्न, बोल कर मैं क्या जानूं

कुं० सं०		ध० सं०
३३७	ग्राम लोग सुन तर्क यों, उस पर कर अति क्रोध मर्म असल पर जानकर, भगवन दें सब बोध भगवन दें सब बोध, अर्थ तब खोली कन्या कँह से वह उत्पन्न, अबुझ बन बोली कन्या मरकर कँह उत्पन्न, कही यह मैं क्या जानूँ मरण सत्य यह ज्ञान, मरूँ कब यह ना जानूँ	१७४ कथा
३३८	उड़े हंस नभ सूर्य पथ, ऋधि से यति गगनाय धीर पुरुष सेना सहित, मार को वश हराय मार को वश हराय, धीर नर लोकम त्यागे लेकर चल निर्वाण, सुधी नर भव को त्यागे कह भगवन समझाय, गगन ज्यों रमते योगी ज्यों नभ उड़ते हंस, उड़े त्यों नेक्खम भोगी	१७५
३३९	जेतवन मठ धाम ठहर, भगवन करें विचार तीस भिक्षु वासी दिशा, करे सुगत सत्कार करे सुगत सत्कार, पुनः वे अर्हत पावे क्षीणाश्रव बन जाय, गगन में उड़े छिपावे कह भगवन आनन्द, चार जेहि ऋद्धिः पावे हंस सरिस उड पाय, योग वह शुद्ध कहावे	१७५ कथा
३४०	कर दमन इक सत्य धरम, नर बोले जौं झूठ वैसे पापी के लिए, पाप नहीं कुछ छूट पाप नहीं कुछ छूट, मनुज यह करे न चिन्ता अपर लोक मत सोच, जीव यह करे न चिन्ता कह भगवन समझाय, सत्य जो धर्म गमावे कर गुजरे सब पाप, एक ना पाप हटावे	१७६

कु॰ सं॰ | ध॰ सं॰

३४१ तथागत यश नाम सभी, तैर्थिक नहीं सुहाय १७६ कथा
अतः सुगत बदनाम हित, सोचे एक उपाय
सोचे एक उपाय, वही चिंचा फुसलावे
भगवन नाम घसीट, चिंच को गर्भ बतावे
धर्म सभा में आय, अकड़ कर बोली चिंचा
सुगत करे यह गर्भ, जेत सठ गरजी चिंचा

३४२ कपड़ा काठ बांध उदर, चिंचा पेट बढ़ाय १७६ कथा
नकली बोझिल शब्द में, दर्द लाय घबराय
दर्द लाय घबराय, भिक्षु सब चिंचा जाँचे
झूठ पकड़ में आय, सत्य सब चिंचा बाँचे
मरकर पाय अवीचि, मरी वह धस कर पृथ्वी
जो खो दे सच एक, करे सब पापम पृथ्वी

३४३ चिंचा की सब बात सुन, कहें वचन भगवान १७६ कथा
उसकी गति भी देखकर, उचरे तब भगवान
उचरे तब भगवान, भुवन जो पर मत सोचे
करे सभी वह कर्म, सत्य जो शीश दबोचे
कह भगवन समझाय, सत्य जो तज दे झटके
नहीं पाप भव छूट, रहे न पापी करके

३४४ स्वर्ग जाय कँजूस नहीं, शठ न सराहे दान १७७
दान प्रशसे धीर नर, पर लोकम सुख पान
पर लोकम सुख पान, कर्म यह हर्ष दिलावे
स्वर्ग लोक में भोग, दान गुन सुधी कमावे
कह भगवन समझाय, दान की महिमा भारी
पंडित जन लखपाय, कभी ना कृपण अनाड़ी

कु० सं०		ध० स०
३४५	काल शुक्ल मंत्री रहे, प्रसेनजित नृप राय	१७७ कथा
	काल दान पर रुष्ट हो, शुक्ल नहीं घबराय	
	शुक्ल नहीं घबराय, भूप जब संघ खिलावे	
	अनुमोदन कर अल्प, सुगत यों भूप बुझावे	
	काल पाय निर्वास, दिवस सत शुक्लः राजा	
	प्रसेनजित अति क्षोभ, सुगत तब बोधे राजा	
३४६	अकेला भूपाल बने, सकल जग नहीं श्रेष्ठ	१७८
	या स्वर्ग ही जाय भले, वह भी कहें न श्रेष्ठ	
	वह भी कहें न श्रेष्ठ, बने जेहि लोक स्वामी	
	सबसे बढ़कर श्रेष्ठ, फलम स्रोतापति गामी	
	कह भगवन समझाय, मनुज पद उत्तम अरजे	
	स्रोतापति फल श्रेष्ठ, नहीं तुल स्वर्गम राजे	
३४७	काल नाम अनाथ सुतः, धर्म पास नहीं जाय	१७८ कथा
	जब पिता से द्रव्य गहे, पाठ धर्म कर पाय	
	पाठ धर्म कर पाय, सुगत जब धर्म सिखावे	
	स्रोतापति फल पाय, द्रव्य ना मांग करावे	
	कह भगवन समझाय, धर्म की ऐसी महिमा	
	एक बार जो पाय, भूले न उसकी गरिमा	

बुद्ध वर्ग—१४

कुंडलियां संख्या		मूल धम्मपद संख्या
३४८	जिसकी जीत न फिर कभी, पलट हार बन पाय जिसके जीते राग सब, फिर मत पीछे आय फिर मत पीछे आय, अपद किमि बुद्ध फिराओ अनन्त गोचर बुद्ध, पलट पद कौन लिवाओ प्रथम बोधि तरू बुद्ध, मार की कन्या डाँटे हटो करो मत यत्न, राग सब मैंने छाँटे	१७९
३४९	जिसकी तृष्णा जालिनी, विष रूपी मर जाय तृष्णा बन अयोग्य जेहि, कहीं नहीं ले जाय कहीं नहीं ले जाय, अपद किमि बुद्ध फिराओ अनन्त गोचर बुद्ध, पलट पद कौन फिराओ प्रथम बोधि तरू बुद्ध, मार की कन्या डाँटे हटो करो मत यत्न, राग सब मैंने छाँटे	१८०
३५०	ज्ञान प्राप्ति के पूर्व जब, प्रण लें यह भगवान त्वचा भले यह शुष्क बने, रक्त मांस सुनसान रक्त मांस सुनसान, नहीं मैं ध्यान फिराऊँ जब तक ना हो ज्ञान, नहीं स्थान हटाऊँ मार थके जब हार, सुती तब तीन पठावे लख कन्या ये पास, सुगत तब वचन सुनावे	१७९ १८० कथा

कुं० सं० | ध० स०

३५१ नेक्खम उपशय में रमे, धीर निरत जो ध्याय १८१
स्मृतिमान बुद्धान की, चाह करे देवान
चाह करे देवान, अर्थ रस भाव उठावे
बुद्धम सम जो धीर, देख सब देव लुभावे
कह भगवन समझाय, बुद्ध सब रश्मि: लाये
बुद्ध श्री एक तेज, देव सब प्राणी भाये

३५२ दिवस अषाढ़ी पूर्णिमा, महापवारण रोज १८१ कथा
बुद्धदेव शंकास्य में, उतरे लेकर ओज
उतरे लेकर ओज, सीढ़ियाँ मणिमय उतरे
चमक रश्मियाँ भिन्न, देव नर भौचक ठहरे
तावंतिस से आय, सारिपुत नमः पुकारे
लखकर बुद्धम रूप, सारिपुत वचन उचारे

३५३ नगर शंकास्य द्वार पर, सारि बखाने रूप १८१ कथा
तेज पुंज से दीप्त तन, भगवन ऐसा रूप
भगवन ऐसा रूप, कभी ना देखा मैंने
बुद्ध रश्मि क्या तेज, अभी ही देखा मैंने
सभी देव नर लोक, आप को हर जन चाहे
लख यह दीपित रूप, आप को पूजन चाहे

३५४ मनुज जन्म पाना कठिन, कठिन मनुज रह जीय १८२
सद्धर्म श्रवणम कठिन, बुद्ध जन्म कठनीय
बुद्ध जन्म कठनीय, अर्थ रस भाव उठावे
पाना बुद्धम तत्व, कठिन सब लोग बुझावे
कह भगवन समझाय, मनुज तन दुर्लभ पाना
जीना मनुज असाध्य, बुद्ध पद गुरुतम पाना

कुं० सं० धं० सं०

३५५ सुगत ठहर वाराणसी, तरु शिरीष रह ध्यान १८२ क॥
नागराज एरक पत्तम, पहुँचे वह स्थान
पहुँचे वह स्थान, पुनः वह नाग बखाने
जन्म नर नहीं प्राप्त, श्रवण ना धर्मन जाने
दर्शन बुद्ध न प्राप्त, कष्ट यह भारी मन में
एरक पत्रम खाय, कष्ट यह भारी तन में

३५६ परिहार्य सब पाप करो, पुण्यम अधिक जुटाय १८३
परिशुद्ध कर चित्त परम, बुद्धम यही सिखाय
बुद्धम यही सिखाय, तजो नर पापम सारे
संचित कर तुम पुण्य, चित्त कर शुद्धम पारे
कह भगवन समझाय, पाप नर दूर भगावे
परम तत्व यह सीख, यही सब बुद्ध सिखावे

३५७ क्षमाशील सहिष्णुताः, तप परमम कहलाय १८४
सभी बुद्ध निर्वाण को, पद परमम बतलाय
पद परमम बतलाय, दीक्ष क्या घात करावे
श्रमण नहीं कहलाय, अगर वह अन्य सतावे
कह भगवन समझाय, श्रमण जो दीक्षा पाये
नहीं घात पर कष्ट, दीक्ष बन श्रमण कहाये

३५८ करे कभी निन्दा नहीं, घात न पर के लाय १८५
प्रातिमोक्ष में संयमी, समुचित मात्रा खाय
समुचित मात्रा खाय, एकान्त वास धरावे
चित्त योग में लाय, यही सब बुद्ध सिखावे
कह भगवन समझाय, बुद्ध के शासन ऐसे
सभी बुद्ध कह एक, सत्य में अन्तर कैसे

कु० सं० | ध० सं०

३५९ जेतवन विहरास करे, सुगत संग आनन्द १८३, १८४
उपोसथ किम बुद्ध सभी, करे प्रश्न आनन्द १८५ कथा
करे प्रश्न आनन्द, उपोसथ बुद्ध बतावे
सभी बुद्ध के एक, उपोसथ एक मनावे
कह भगवन आनन्द, उपोसथ सब बुद्ध वैसे
ज्ञान सत्य सब एक, धर्म में अन्तर कैसे

३६० कार्षापण की वृष्टि भी, भरे न नर के काम १८६-
अल्प स्वाद सब काम दे, दुखदायी सब काम १८७
दुखदायी सब काम, धीर यह जाने बरजे
देव लोक के भोग, नहीं वे चाहे अरजे
कह भगवन समझाय, शिष्य ना फसते तृष्णा
श्रावक सम्यक बुद्ध, व्यस्त हो नाशे तृष्णा

३६१ श्रवस्ती में दहर रहे, भिक्षु अधिक उदास १८६, १८७
मरण क्षण ना पिता लखे, कार्षापण सौ आश कथा
कार्षापण सौ आश, द्रव्य यह पितृः छोड़ें
उसी द्रव्य का लोभ, दहर के मन को फोड़ें
हर क्षण मन में सोच, धर्म तज घर को जाऊँ
कारण यही उदास, गृही बन जीव बिताऊँ

३६२ मारे भय मनुष्य कहे, बाग वृक्ष वन देव १८८-
चैत्य को भी देव कहे, पर्वत को भी देव १८९
पर्वत को भी देव, मान नर जाये शरणम
ये न शरण दे क्षेम, नहीं ये उत्तम शरणम
कह भगवन समझाय, दुख नहीं भागे सारे
शरण नहीं ये श्रेष्ठ, शरण ये भय के मारे

कु० सं० ध० सं०

३६३ बुद्धम शरणम जो चले, धम्मम शरणम जाय १९०-
सम्यक प्रज्ञा देख ले, चार आर्य सत्याय १९१-
चार आर्य सत्याय, दुख और कारण दुखका १९२
दुख से विमुक्ति मार्ग, अष्ट जो मोक्षम दुखका
रक्षादायक ठौर, यही है उत्तम शरणम
सभी कष्ट मिट जाय, जाय जो बुद्धम शरणम

३६४ पुरोहित प्रसेन पिता, विप्र नाम अगिदत्त १८८-१९२
लघु काल परिव्राज बने, यश पाये अगिदत्त कथा
यश पाये अगिदत्त, शरण बहु चीज बखाने
शैल बाग वन वृक्ष, सभी को शरण बखाने
चमत्कार लख सौद, बुद्ध के धर्मम जाने
अंध शरण सब त्याग, बुद्ध की शरणम माने

३६५ नर श्रेष्ठ से भेंट कठिन, जे न जने हर ठाम १९३
पुरुष धीर जित जन्म ले, सुख उपजे कुल धाम
सुख उपजे कुल धाम, अर्थ रस भाव उठावे
उत्तम नर ना ढेर, नहीं हर ठाम दिखावे
कह भगवन समझाय, धीर जँह जन्मम पावे
सुख उपजे कुल धाम, लोग सब हर्ष मनावे

३६६ सुगत से आनन्द कहे, वर नर कँह उत्पन्न १९३
और कहें सुधाम वही, जित वर नर उत्पन्न कथा
जित वर नर उत्पन्न, सुगत तब शिष्य बुझावे
वर नर ना हर ठाम, जन्म यह कठिन सुनावे
कह भगवन समझाय, श्रेष्ठ नर विरले होवे
नहीं जन्म सर्वत्र, कठिन नर धीर दिखावे

कुं० सं० धः सं०

३६७ सुखदाय बुध जन्म बने, सुखदायक सद्धर्म १९४
सुखकर संघम एकता, सुखकर मिल तप कर्म
सुखकर मिल तप कर्म, अर्थ रस तथ्य जनावे
सद्धर्मम उपदेश, परम सुखदाय कहावे
कह भगवन समझाय, जन्म नर बुद्धम सुखकर
सुनकर यह उपदेश, संघ औ तप मिल सुखकर

३६८ जेतवन में भिक्षु सभी, मन में करे विचार १९४ कथा
तर्क सब भगवान सुनें, जो कर वहीं विहार
जो कर वहीं विहार, भिक्षु सुखराज बखाने
कई कहे सुख काम, और कुछ और बखाने
कह भगवन समझाय, भोग ये गुनो न उत्तम
बुद्ध जन्म सुन धर्म, संघ रह तप सुख उत्तम

३६९ पूजा कर पूजनीय की, बुद्धों की या शिष्य १९५
भव प्रथम जेहि जीत ले, पूज बुद्ध या शिष्य
पूज बुद्ध या शिष्य, शोक जो भय को जीते
या इन मुक्त समान, पुरुष जो निर्भय होते
कह भगवन समझाय, फलित यह पुण्यम जितना
अकथनीय फल पुण्य, कोई न कष्ट इतना

३७० भगवन कर जब चारिका, पहुँचे तोदय ग्राम १९५-१९६
इक विप्र तँह आय करे, चैत्यम को प्रणाम
चैत्यम को प्रणाम, विप्र ना गूढ़ बतावे
सुगत कहें यह चैत्य, कश्यप के हित कहावे
कह भगवन समझाय, चैत्य यह पूजन उत्तम
विप्र करो तुम ठीक, सन्त का पूजन उत्तम

सुख वर्ग-१५

कु ंडलियां	मूल धम्मपद संख्या

३७१ सुख पूर्वक जीवन बिते, वैरी बीच अवैर १९७
हम करते विहार अहो, वैरी बीच अवैर
वैरी बीच अवैर, अर्थ रस भाव उठावे
धीर पुरुष तज वैर, शत्रु से प्रेम बढ़ावे
कह भगवन समझाय, शत्रु मह मित बन फिरते
वैरी नर के बीच, धीर हम मित बन रहते

३७२ सुख पूर्वक जीवन बिते, पीड़ित बीच अपीड़ १९८
हम करते विहार अहो, पीड़ित बीच अपीड़
पीड़ित बीच अपीड़, मर्म रस भाव उठावे
धीर पुरूष तज शोक, हर्ष का भोग उठावे
कह भगवन समझाय, दुखित मह हर्षित रहते
पीड़ित नर के बीच, धीर हम हर्षित फिरते

३७३ सुख पूर्वक जीवन बिते, लिप्तम बीच अलिप्त १९९
हम करते विहार अहो, लिप्तम बीच अलिप्त
लिप्तम बीच अलिप्त, अर्थ रस भाव उठावे
धीर पुरुष बन मुक्त, लिप्त मह मुक्त फिरावे
कह भगवन समझाय, लिप्त नर बंधित रहते
मनुज आसक्त बीच, धीर हम मुक्तम फिरते

कु० सं०		धं० सं०

कु० सं०		ध० सं०
३७४	नदी रोहिणी जल, घटे, जेठ माह अवरूद्ध खेत धूप सूखाड़ में, शाक्य कोलिया युद्ध शाक्य कोलिया युद्ध, नीर हित कलह मचावे भीषण छिड़ संग्राम, जीत हित उग्र दिखावे जान मार हित व्यस्त, युगल दल ऐसा जाने मनुज प्राण कह तुच्छ, युद्ध वे वैसा ठाने	१९७ १९८ १९९ कथा
३७५	सुगत रोहिणी तीर चलें, पहुँच देख यह युद्ध जेठ माह सूखाड़ में, दोनों दल में युद्ध दोनों दल में युद्ध, सुगत तब दोनो बोधे दल तुम द्वि आसक्त, इसी से युद्धम क्रोधे शास्ता युगल बुझाय, प्राण है बढ़कर नर का मनुज विनाश न ठीक, मूल्य क्या होवे जल का	१९७ ९९ कथा
३७६	सुगत पुनः बोधन धरे, लख तुम मुझ सम बुद्ध राग मोह से मुक्त बन, बन्द करो यह युद्ध बन्द करो यह युद्ध, सुगत जब देखे ऐसा बीच समर में आय, कहें तुम करो न ऐसा भगवन कह लख बुद्ध, जिसे ना क्लेश सतावे बनकर बुद्ध अशोक, कष्ट से रहित फिरावे	१९७-९९ कथा
३७७	सुख पूर्वक जीवन बिते, धन हम वैसे लोग जिन हम सब को कुछ नहीं, सुख से जी हमलोग सुख से जी हम लोग, देवसम भोजन लेंगे आभास्वर सुर तुल्य, प्रीति का भक्ष्यम होंगे कह भगवन समझाय, प्रीति ही भोजन पाउँ देव प्रेम ज्यों खाय, प्रीति ही अब मै खाऊँ	२००

कुं० सं० ध० सं०

३७८ एक दिन भगवान सुधी, मगध क्षेत्र में जांय २०० कथा
पंचशाल ग्रामः पहुँच, भिक्षाटन में जांय
भिक्षाटन में जांय, कोई न दान करावे
खाली कर जब लौट, मार पथ व्यंग सुनावे
शास्ता कह तब मार, लौट अब फिर न जाऊँ
नहीं दान क्या शोक, हर्ष लेय प्रीति खाऊँ

३७९ जय वैर को जन्म धरे, हारे सो दुख नींद २०१
उपशान्त सुख से सोये, विजय हार कर छिन्द
विजय हार कर छिन्द, अर्थ रस भाव उठावे
जिसके राग न मोह, वही उपशान्त कहावे
कह भगवन समझाय, जीत से वैर बढ़ावे
हार शोक दे जन्म, शान्ति ना उभय दिलावे

३८० अजात शत्रु प्रसेन को, बारम्बार हराय २०१ कथा
अन्त पराजय हाथ गह, बैठे मुख लटकाय
बैठे मुख लटकाय, भिक्षु यह सुगत सुनावे
शास्ता कहे उदान, भिक्षु को मर्म बतावे
कह भगवन समझाय, युद्ध से लाभ न कोई
भले जीत हो हार, लाभ न आवे कोई

३८१ राग समान आग नहीं, मैल न द्वेष समान २०२
स्कन्ध सम शोक नहीं, सुख ना बढ़ निर्वाण
सुख ना बढ़ निर्वाण, भाव रस अर्थ उठावे
राग द्वेष सब हीन, महत निर्वाण कहावे
कह भगवन समझाय, राग सब त्यागे ज्ञानी
स्कन्धम से लिप्त, शोक ले भोगे प्राणी

कु० सं० घ० सं०

३८२ कुल कन्या श्रवस्तीकी, दुल्हन बन अति भाय २०२
माता-पिता संघ सभी, भगवन को खिलवाय
भगवन को खिलवाय, कन्त भी वहीं पधारे
काम भाव ले चित्त, वधू को सदा निहारे
कह भगवन समझाय, काम क्यों मन में लाओ
लिप्सा आग समान, राग सब मन से डाहो

३८३ सबसे वृहत रोग क्षुधा, संस्कार बड़ा शोक २०३
जो यथार्थ यह जान ले, निर्वाणम वर भोग
निर्वाणम वर भोग, भाव रस अर्थ जनावे
सबसे सुख निर्वाण, सत्य यह ज्ञान बतावे
कह भगवान समझाय, स्कन्धम दुख दिलावे
जो त्यागे स्कन्ध, पद वही नेक्खम पावे

३८४ नगर आलवी की कथा, पुरजन संघ खिलाय २०३ कथा
उसी समय किसान क्षुधित, उसी जगह पर आय
उसी जगह पर आय, सुगत लख खाद्य मंगावे
गहकर खाद्य किसान, भूख को तुरत मिटावे
कह भगवन समझाय, भूख सम रोग न कोई
रोज-रोज यह रोग, तृप्ति ही औषध होई

३८५ परम लाभ निरोग कहे, संतोषः धन श्रेष्ठ २०४
बन्धु वर विश्वास कहें, निर्वाणम सुख श्रेष्ठ
निर्वाणम सुख श्रेष्ठ, अर्थ रस भाव उठावे
परम लाभ आरोग्य, तुष्टि ही द्रव्य कहावे
कह भगवन समझाय, विश्वास बन्धु कहावे
सबसे बढ़कर भोग, निर्वाणम भोग जनावे

कु॰ सं॰ ध॰ सं॰

३८६ धर्म सभा में एक दिन, नृप प्रसेन झपकाय २०४ कथा
भोजन की मात्रा अधिक, ऊँघ ऊँघ गिरजाय
ऊँघ ऊँघ गिरजाय, सुगत तब भूप सुनावे
अल्प खाद्य ही ठीक, जीव को ठीक सुहावे
सुमर सुगत यह ज्ञान, भूप तब बल खुद आंके
धर्म सभा जब जाय, सुगत तब नृप बल झांके

३८७ प्रविवेक रस पान अगर, उपशम के रस पीय २०५
मनुज अति निर्भयी बने, जो इन रस को पीय
जो इन रस को पीय, प्रेम रस धर्मम पीवे
बन ले नर निष्पाप, प्रीति रस मर्मम पीवे
कह भगवन समझाय, एकान्त चिन्तन पीओ
उपशम के रस पीय, धर्म रस प्रेमम पीओ

३८८ नगर लिच्छवी में पहुँच, साफ कहें भगवान २०५ कथा
चार मास के बाद ही, पाऊँ परि निर्वाण
पाऊँ परि निर्वाण, लोग सुन शोक उठावे
सभी भिक्षु सुन बात, झुण्ड पर झुण्ड लगावे
भिक्षु एक पर तिस्स, व्यग्र बन फिरे अकेला
मन में ले संवेग, धर्म हित गुने अकेला

३८९ तिस्स नाम यह थेर तब, डूबे मन यह सोच २०५ कथा
अर्हत तो मैं ना बना, रहते मुनि मन सोच
रहते मुनि मन सोच, शीघ्र वह सोच विचारे
अर्हत ले लूँ शीघ्र, सोच यह मौन विचारे
शास्ता भिक्षु बुझाय, तिस्स का कर्मम उत्तम
जो मुझको सच पूज, विहर यह धर्मम उत्तम

कु० सं० ध० सं०

३९० आर्य दरश अति शुभ बने, उन सह नित सुखदाय २०६
किन्तु अदर्शन मूढ़ का, नर हित नित सुखदाय
नर हित नित सुखदाय, अर्थ रस भाव उठावे
दर्शन जौं हो आर्य, काल तब मंजु कहावे
कह भगवन समझाय, मूढ़ जौं नहीं दिखावे
यह नर हित कह श्रेष्ठ, मूढ़ ना समुख जनावे

३९१ संग अगर शठ के रहे, दुख ले दीरघ काल २०७
शठ संगत अरि सम कहें, दुखदायी चिरकाल
दुखदायी चिरकाल, धीर की संगत उत्तम
बन्धु समागम भांति, धीर की संगत सुक्खम
कह भगवन समझाय, मूढ़ का संग हटाओ
संगत शठ अरि मान, धीर का संग बढ़ाओ

३९२ अत: धीर ज्ञानी भजो, बहुश्रुत शीलवान २०८
व्रत सम्पन्नम आर्य की, सेवा कर बुधिमान
सेवा कर बुधिमान, गमन कर उनके पथ का
जैसे कर आकाश, चन्द्रमा नक्षत पथ का
कह भगवन समझाय, धीर की कर ले सेवा
सेवा कर नर आर्य, फलित बन पाओ मेवा

३९३ राजगीर के वेणु में, रक्त श्राव बुध रोग २०६-२०८ कथा
शक्र आय सेवा करे, तजकर स्वर्गम भोग
तज कर स्वर्गम भोग, भिक्षुगण अचरज लावे
शक्र बुद्ध को सेव, मर्म ना मूढ़ जनावे
कह भगवन समझाय, शक्र जो तरुण विहारे
सब मेरा उपकार, तत्व गह मेरे द्वारे

प्रिय वर्ग--१६

कुंडलियां संख्या | मूल धम्मपद संख्या

३६४ बुरे कर्म में लिप्त जो, शुभ कर्मम अलगाव २०९
परमारथ को तज फसे, आकर्षण भव चाव
आकर्षण भव चाव, मनुज यों कर स्पृहा
आत्म बढ़न नर व्यस्त, पुरुष की कर स्पृहा
कह भगवन समझाय, धीर से होड़ लगाओ
विकसित कर जो स्वय, उसी सह दौड़ लगाओ

३९५ करो ना संगत प्रिय की, मत रह अप्रिय साथ २१०-२११
अदर्शन प्रिय दुक्ख धरे, दर्शन अप्रिय घात
दर्शन अप्रिय घात, अतः ना प्रिय बनाओ
प्रिय वियोग दे कष्ट, नहीं सम्बन्ध बढ़ाओ
उसे न बन्धन आय, नहीं प्रिय अप्रिय रक्खे
वह नर बन फिर मुक्त, संग ना कुछ भी रक्खे

३९६ श्रवस्ती सट एक गृही, गहे दीक्ष ले धर्म २०९-२११ कथा
पत्नी कंत पुत्र सभी, दीक्षित होले धर्म
दीक्षित होले धर्म, किन्तु सब गप्प लड़ावे
रात बैठ सब पास, संघ में गप्प जमावे
सुगत पूछ कह तीन, अलग रह कठिन बुझावे
सुगत बोल तब तीन, धर्म तज धाम फिरावे

कुं० सं० धा० सं०

३९७ प्रिय शोक उत्पन्न करे, प्रिय कर भय उत्पन्न २१२
प्रिय मुक्त को शोक नहीं, फिर भय कँह उत्पन्न
फिर भय कँह उत्पन्न, मर्म रस भाव उठावे
प्रियम शोक दे लोग, पुनः प्रिय भय जगावे
कह भगवन समझाय, प्रिय जेहि नहीं जुटावे
उनको क्या फिर शोक, निडर बन भुवन फिरावे

३९८ कुटुम्बिक श्रावस्ती का, सुत गमाय ले शोक २१२ कथा
नित्य रोज मरघट चले, रो कर मरघट शोक
रो कर मरघट शोक, हृदय का कण कण टूटे
श्मशान पर जाय, करुण जल प्रिय हित टूटे
कह भगवन समझाय, शोक की जड़ में ममता
नश्वर नर सब जाय, शोक भय प्रिय हित लगता

३९९ प्रेम दुख उत्पन्न करे, जन्मे भय भी प्रीत २१३
प्रेम मुक्त को दुख नहीं, फिर क्यों बन भयभीत
फिर क्यों बन भयभीत, अर्थ रस भाव उठावे
जिसे न कुछ से प्रेम, कहाँ फिर शोक उठावे
कह भगवन समझाय, जिसे ना शोक सतावे
फिर कैसे वह भीत, पुरुष वह अभय फिरावे

४०० महाविशाखा नातिनी, दन्त कुमारी नाम २१३ कथा
अल्प उम्र में शीघ्र ही, कन्या चल सुरधाम
कन्या चल सुर धाम, विशाखा मन घबड़ावे
रोय सुगत के पास, कंठ ना शब्द बनावे
कह भगवन समझाय, नगर यह बृहत श्रवस्ती
रोज जाय बहु जान, समझ जन सकल श्रवस्ती

कु० सं० घ० सं०

४०१ रति तत्व से शोक उगे, रति से भय उत्पन्न २१८
रति मुक्त को शोक नहीं, फिर भय कँह उत्पन्न
फिर भय कँह उत्पन्न, भाव रस अर्थ उठावे
रति भाव देय शोक, सभय कर यही डरावे
कह भगवन समझाय, रति जो नर नहीं लावे
उसे कहाँ फ़िर शोक, निडर बन भुवन फिरावे

४०२ वैशाली के लिच्छवी, करे परस्पर मार २१४ कथा
सुन्दर गणिका के लिए, करे भयंकर मार
करे भयंकर मार, रक्त बह प्राण गमावे
चारपाय पर बोझ, लोग तब लाश टंगावे
कह भगवन समझाय, काम की महिमा ऐसी
काम करे नर ध्वस्त, काम की गरिमा ऐसी

४०३ काम दुख उत्पन्न करे, अरु कर भय उत्पन्न २१५
काम मुक्त को दुख नहीं, फिर कँह भय उत्पन्न
फिर कँह भय उत्पन्न, अर्थ रस भाव उठावे
काम जनम दे शोक, काम ही भय उपजावे
कह भगवन समझाय, काम जो दूर हटावे
उसे कहाँ फिर शोक, अभय बन मुक्त फिरावे

४०४ स्त्री गंध न सह सके, अनिथ कुमारः नाम २१५ कथा
बालापन लक्षण यही, प्रौढ़ युवक बढ़ काम
प्रौढ़ युवक बढ़ काम, चित्त ना ब्याह धरावे
स्वर्ण मूर्ति बन वाय, दार यों ब्याह रचावे
ब्राह्मण कन्या खोज, नगर सागर में जाये
कन्या बुत सम जान, लग्न यों ब्याह जुटाये

४०५ अति धूम से ब्याह करे, चली वधू ससुराल २१५ कथा
श्रावस्ती न पहुँच सकी, वधू मरी तत्काल
वधू मरी तत्काल, अनिथ सुन रोये बिलखे
कन्या हुई न प्राप्त, शोक में व्याकुल कुहके
कह भगवन समझाय, काम यह तुम्हें सतावे
मानो अनिथ कुमार, काम ही तुझे जलावे

४०६ तृष्णा दुख को जन्म दे, तृष्णा भय जन्माय २१६
लोभ मुक्त को दुख नहीं, फिर भय कैसे आय
फिर भय कैसे आय, भाव रस अर्थ उठावे
तृष्णा दुख दे जन्म, यही भयभीत बनावे
कह भगवन समझाय, पुरुष जो तज दे तृष्णा
उसे कहाँ फिर शोक, उसे क्यों भय दे तृष्णा

४०७ श्रावस्ती का विप्र बुने, नदी किनारे धान २१६ कथा
अति जोर की बाढ़ नदी, पूर्ण नष्ट कर धान
पूर्ण नष्ट कर धान, विप्र तब शोक उगावे
भोजन जल भी छोड़, नित्य उपवास मनावे
कह भगवन समझाय, शोक के पीछे तृष्णा
नहीं पूर्ण जब चाह, मनुज को घाले तृष्णा

४०८ शील गुण जो जीव रखे, दर्शन से सम्पन्न २१७
धार्मिक सत्य वाक भले, करतव स्व सम्पन्न
करतव स्व सम्पन्न, पुरुष यों प्रेम उघावे
ऐसे नर से प्रेम, लोग सब स्वयं बढ़ावे
कह भगवन समझाय, तत्व जो नर ये लाये
खुद ही नर कर प्रेम, सकल जन नर यों भाये

४०९ वेणु वन उद्यान फिरे, बालक कर बहु खेल २१७ कथा
पूवा रख के टोकरी, उत्सव में कर खेल
उत्सव में कर खेल, भिक्षु गण उस पथ गुजरे
बालक कर अनदेख, खेलकर खुश हो विचरे
मुनि काश्यप जब आय, बाल सब दान करावे
देदे सब पकवान, हर्ष कर नमः सुनावे

४१० भिक्षु गण तब जान यही, कहे पुनः भगवान २१७ कथा
बालक मुँह देखी करे, सब न करे सम्मान
सब न करे सम्मान, सुगत तब वचन उचारे
काश्यप मुनि अति श्रेष्ठ, बाल मन प्रेम उचारे
कह भगवन समझाय, शील जो रखते ज्ञानी
करे न वह कुछ यत्न, प्रेम दे खुद सब प्राणी

४११ जो निर्वाण चाह करे, मन भी वहीं लगाय २१८
काम न चित्त बहु करे, ऊर्ध्वस्रोत कहलाय
ऊर्ध्वस्रोत कहलाय, अर्थ रस भाव उठावे
जिस मन नेक्खम चाह, वह ऊर्ध्वस्रोत कहावे
कह भगवन समझाय, पुरुष उत ध्यान लगावे
चित्त काम से मुक्त, वही निर्वाण जुटावे

४१२ जेतवन बुध वास करें, श्रावक भिखु कुछ आय २१८ कथा
थेर अनागामी मरे, भिखुगण सुगत सुनाय
भिखुगण सुगत सुनाय, दशा फिर गति वे पूछे
भगवन शिष्य सुनाय, थेर वे अर्हत ऊँचे
कह भगवन समझाय, शुद्ध जेहि अनागामी
वे त्यागे सब राग, फिरे ना भव वे गामी

कुं० सं० धं० सं०

४१३ चिर परवासी दूर से, कुशल: जब घर आय २१९-२२०
हितैषी मित जात सभी, स्वागत खूब कराय
स्वागत खूब कराय, पुण्य त्यों स्वागत लावे
पुण्यव्रती के पुण्य, स्वर्ग आतिथ्य दिलावे
वैसे चल परलोक, बन्धु सम स्वागत लावे
अपने पुण्यम हाथ, पुनी मर आदर पावे

४१४ नन्दिय सुत इक सेठ के, करे काशी निवास २१९-२२० कथा
संघ दान विहार रचे, ऋषिपत्तन के पास
ऋषि पत्तन के पास, दान क्षण प्राण बिसारे
मरकर नन्दिय सेठ, तवतिस स्वर्ग सिधारे
कह भगवन समझाय, नन्दि यों स्वागत पावे
तावंतिस में जाय, पुण्य हित प्रेम गहावे

४१५ सुगत मोद से तब कहें, नर जब बहुर प्रवास २१९-२२० कथा
कुलजन सब स्वागत करे, मुख पर ले अति हास
मुख पर ले अति हास, ठीक यों पुनी जुटावे
मर कर जब परलोक, देवगण उसे सुहावे
कह भगवन समझाय, पुण्य की महिमा भारी
पुण्यम अति अनमोल, तृप्ति दे अतिशय न्यारी

क्रोध वर्ग–१७

कुंडलियां संख्या | मूल धम्मपद संख्या

४१६ छोड़े नर जो क्रोध को, करे अहं को त्याग २२१
बंधन सभी पार करे, नाम रूप कर त्याग
नाम रूप कर त्याग, उसे मत शोक सतावे
परिग्रह जेहि हीन, उसे क्या कष्ट सतावे
कह भगवन समझाय, नाम जो रूपम त्यागे
उसके सब दुख दूर, काट जो बंधन त्यागे

४१७ अनुरुद्ध रह कपिल पुरम, सबते भीख उघाय २२१ कथा
बहन रोहिनी थेर की, पर मत मिलने आय
पर मत मिलने आय, सदेश थेर पठावे
ढक के मुँह तब आय, थेर ना वसन सुहावे
भगिनी तब बतलाय, मुझे छवि रोग सतावे
पता न कारण कौन, रोग यह मुझे जलावे

४१८ फिर कहने पर थेर के, बहन महल उठवाय २२१ कथा
धीरे धीरे रोग तब, मुख से सब उड़ जाय
मुख से सब उड़ जाय, सुगत तब उसे बुझावे
पूर्व जन्म कर क्रोध, उसी का फल अब पावे
कह भगवन समझाय, रोहिणी थी इक रानी
देय नर्तकी कष्ट, कर्म वही भोगी रानी

४१९ चढ़ता गुस्सा थाम ले, ज्यों भागे रथ थाम २२२
उसे कहूँ सच सारथी, अरु तो धरे लगाम
अरु तो धरे लगाम, अर्थं रस भाव उठावे
वह वाहक कह श्रेष्ठ, अश्व जो चलित थमावे
कह भगवन समझाय, धन्य जो क्रोध न लावे
क्रोध चढ़ा जो त्याग, वही सच वीर कहावे

४२० नगर आलवी की कथा, भिक्षु: काटे पेड़ २२२ कथा
देव सुती स्व सुत सहित, वास करे वह पेड़
वास करे वह पेड़, भिक्षु तरु काट गिरावे
काट सुत की बांह, देव की सुती दुखावे
पीकर सारा क्रोध, तभी वह देवी आई
कह कर भगवन पास, शोक सब स्वयं भुलायी

४२१ जीत क्रोध अक्रोध से, साधु बन के असाधु २२३
दान से ज़ीत कृपण को, सच से झूठा भाखु
सच से झूठा भाखु, अर्थ रस भाव उठावे
क्रोध प मत कर क्रोध, शान्त बन क्रोध हरावे
कह भगवन समझाय, क्रोध को वर नर पीते
वही साधु अधिकार, झूठ जो सच से जीते

४२२ राजगिरि की कथा सुनें, सिरिमा गणिका नाम २२३ कथा
इसी नगर में उत्तरा, श्रेष्ठी पुत्री धाम
श्रेष्ठी पुत्री धाम, सिरिमा उसे जलायी
उलटे सिरिमा घाव, उत्तरा दवा लगायी
कह भगवन समझाय, धन्य तुम पुत्री नारी
अरि तन जल बहु सेव, उत्तरा तुम हो न्यारी

कुं० सं० ध० सं०

४२३ बोले सच न क्रोध करे, मांग देय कुछ दान २२४
तीन काम कर नर करे, देवम पास प्रयाण
देवम पास याण, अर्थ रस भाव उठावे
दान सत्य अक्रोध, मनुज कर स्वर्ग जुटावे
कह भगवन समझाय, मनुज जो क्रोध न डोले
सीधे स्वर्गंम जाय, दान कर झूठ न बोले

४२४ जेतवम मुनि वास करें, महामौद मन प्रश्न २२४ कथा
स्वर्ग जाय की विधि कहें, भगवन से कर प्रश्न
भगवन से कर प्रश्न, सुगत तब मौद बुझावे
तीन कर्म कर लोग, स्वर्ग को सहजम पावे
कह भगवन समझाय, झूठ जो कभी न बोले
क्रोध नहीं कर दान, स्वर्ग का द्वारम खोले

४२५ हिंसा को जो मुनि तजे, नित संयत स्व काय २२५
अच्युत पद वह मुनि गहे, जँह चल शोक न पाय
जँह चल शोक न पाय, अर्थ रस भाव उठावे
हिंसा तज वश काम, परम पद लाभ जुटावे
कह भगवन समझाय, साधु जो ऐसे भावे
जहाँ कहीं वे जाँय, कष्ट ना शोकम पावे

४२६ विप्र इक साकेत कहे, भगवन को मम पुत्र २२५ कथा
सुगत भी स्वीकार करे, उत्तर दे ज्यों पुत्र
उत्तर दे ज्यों पुत्र, भिक्षुगण तर्क बढ़ावे
सुन कर ऐसी बात, सुगत तब भिक्षु बुझावे
कह भगवन समझाय, युगल यही माता पिता
जन्म अनेकों बार, मेरे ये माता पिता

कु० सं० ध० सं०

४२७ नित जागरण शील रहे, लिप्त योग दिन रात २२६
निर्वाण हित यत्न करे, उनके आश्रव जात
उनके आश्रव जात, अर्थ रस भाव उठावे
नर रह सदा सतर्क, योग अभ्यास जुटावे
कह भगवन समझाय, निर्वाण मन जो लावे
हर क्षण करके यत्न, पाप को पूर्ण हटावे

४२८ राजगीर के सेठ की, दासी पूर्णा नाम २२६ कथा
रात अनेक जाग वही, धान कूट कर काम
धान कूट कर काम, रात में भिक्षु जनावे
पूर्णा मन में आय, भिक्षु पर कष्ट सतावे
भगवन उसे बुझाय, शोक ले रात बिताओ
मम भिक्षु नित जाग, बात मत सदिश मिलाओ

४२९ भगवन फिर उससे कहें, रहे भिक्षु अति जाग २२६ कथा
ध्यान ज्ञान में रत बने, रात अनेकों जाग
रात अनेकों जाग, योग कर यत्न उठावे
मन धर बस निर्वाण, ध्यान में काल बितावे
कह भगवन समझाय, शोक में कुछ जन जागे
पर ले दूजा ध्येय, बुद्ध के श्रावक जागे

४३० विधि पुरानी अतुल यही, नहीं आज की बात २२७-२२८
निन्दा मौनम की करे, फिर जो कर बहु बात
फिर जो कर बहु बात, करे मितभाषी निन्दा
नहीं पुरुष यों लोक, हुई न जिसकी निन्दा
निन्दित पूर्णम रूप, प्रशंसित जीव न होवे
ऐसा जीवन भूत, आज ना कभी न होवे

कुं० सं० धं० सं०

४३१ अतः जान मन यों सदा, प्रशंसा करे विज्ञ २२६-३०
निर्दोषी मेधावी की, सुशीलवंत प्रविज्ञ
सुशीलवंत प्रविज्ञ, कौन नर इनको निन्दे
जाम्बू नदी सुवर्ण, मुहर सम को नर निन्दे
इन्हें प्रशंसे देव, प्रशंसा ब्रह्मा करते
निन्दा कर येहि कौन, प्रशंसा सब जन करते

४३२ श्रावस्ती वासी अतुल, सुगत पास में जाय २२७-२३० कथा
रेवत सारि अनन्द की, निन्दा कर बतियाय
निन्दा कर बतियाय, सुगत तब अतुल बुझावे
नहीं विश्व में जीव, निन्दित बन दुख न पावे
कह भगवन समझाय, मूर्ख की निन्दा उड़ती
जब निन्दे वर विज्ञ, तभी वह निन्दा बढ़ती

४३३ काम प्रकोपः से बचे, सुसंयमित रख काय २३१
कायिक दुराचार तजे, सदाचार रख काय
सदाचार रख काय, अर्थ रस भाव उठावे
काया चंचल चीज, मनुज यह वश में लावे
कह भगवन समझाय, दुराचर काय मिटाओ
सदाचार रख काय, संयमित काय बनाओ

४३४ वाणी प्रकोप से बचे, सुसंयमित रख वाक २३२
वाणी दुराचार तजे, सदाचार रख वाक
सदाचार रख वाक, अर्थ रस भाव उठावे
वाणी उड़ती चीज, मगर यह आग लगावे
कह भगवन समझाय, वाक पर अंकुश लाओ
समुचित करके वाक, वाक पर वश यों पाओ

कु० सं० धo सं०

४३५ चित्त प्रकोपम से बचे, सुसंयमित रख चित्त २३३
चित्त के दुराचार तजे, सदाचार रख चित्त
सदाचार रख चित्त, अर्थ रस भाव उठावे
चंचल अति यह चित्त, दौड़ ले दूर भगावे
कह भगवन समझाय, चित्त नर वश मे लाओ
चंचल चित्त को रोक, आचरण ठीक उठाओ

४३६ जो धीर: तन संयमी, वाणी संयम लाय २३४
संयत जो मन से बने, संयत पूर्ण कहाय
संयत पूर्ण कहाय, अर्थ रस भाव उठावे
तन वाणी औ चित्त, धीर ही रोक लगावे
कह भगवन समझाय, संयमी जो नर ऐसे
संयत पूर्ण कहाय, धीर नर होते जैसे

४३७ वेणु वन में मुनि रहें, छः वर्गी भिखु आय २३१-२३४ कथा
भिक्षु चल खड़ाऊँ लिये, खट खट शब्द उठाय
खट खट शब्द उठाय, सुगत तब श्रावक पूछे
अनन्द कह भगवान, खड़ाऊँ भिखु के गूँजे
कह भगवन समझाय, तीन पर संयम रक्खो
काया वाणी चित्त, दमन कर वश में रक्खो

मल वर्ग-१८

कुंडलियां संख्या | मूल धम्मपद संख्या

४३८ पीले पत्ते ज्यों लखे, वृद्ध अभी तुम दीख २३५-२३६
यम आ तेरे पास खड़े, आतुर चल हित दीख
आतुर चल हित दीख, नहीं पाथेयम तुझको
अपने हित गढ़ द्वीप, बना उद्योगी खुद को
बन पंडित धो मैल विमुक्त दोष से होले
तभी दिव्य पद आर्य, गहो तुम वृद्धः पीले

४३९ कसाई श्रावस्ती के, छोड़ चले यह कर्म २३५-२३६ कथा
बन सोनार तक्षशिला, करे द्रव्य का कर्म
करे द्रव्य का कर्म, पुरुष जब नहीं बुढ़ावे
उसके पुत्र अनेक, संघ सह बुद्ध खिलावे
पुनः सोनार पुत्र, पितु हित आशीष चाहे
दुर्गण कर तुम दूर, शब्द कर भगवन शाहे

४४० तेरी आयु खतम हुई, पहुँचे तुम यम पास २३७-२३८
तेरा कुछ निवास नहीं, पथ पाथेय न पास
पथ पाथेय न पास, स्वयं हित द्वीप बनाओ
पंडित बन उद्योग, स्वयं मल चित्त धुलाओ
कह भगवन समझाय, दिव्य पद आर्यम पाओ
बनो रहित तुम दोष, तभी तुम पद यह पाओ

कुं० सं० ध० सं०

४४१ प्रथम दिन के तथ्य सुने, कसाई पूत लाभ २३७ २३८ कथा
सोतापत्ति फल सब गहे, संघम पुनः खिलाय
संघम पुनः खिलाय, सुगत अनुमोदन बोले
साथ साथ सब शिष्य, सुगत सह वचनम बोले
कह भगवन समझाय, वृद्ध तुम अब भी चेतो
पंडित बन कर धर्म, अभी यम पीछे चेतो

४४२ ज्यों सुनार चाँदी तपा, क्षण क्षण मल कर दूर २३९
त्यों मेधावी चाहिए लघु लघु चित मल दूर
लघु लघु चित मल दूर, अर्थ रस भाव उठावे
सदा करो मल दूर, रजत सम चित्त दिखावे
कह भगवन समझाय, मैल ना शीघ्रम छोड़े
लघुलघु कर मल दूर, रजत सम थोड़े थोड़े

४४३ श्रावस्ती ब्राह्मण सुधी, भिखु हित करे प्रयास २३९ कथा
घास काट बालू बिछा, घर गढ़ करे प्रयास
घर गढ़ करे प्रयास, पुनः वह संघ खिलावे
भोजन के उपरान्त, सुगत तब वचन सुनावे
कह भगवन समझाय, विज्ञ हित यह बन उत्तम
लघु लघु संचय पुण्य, चित्त यों कर ले उत्तम

४४४ लोहा से पैदा हुआ, जंगम लोहा खाय २४०
सदाचार उलंघ्य करे, दुर्गत त्यों नर लाय
दुर्गत त्यों नर लाय, अर्थ रस भाव उठावे
नर के अपने कर्म, नर को खुद ही सतावे
कह भगवन समझाय, उचित सब नियमः पाले
दोषपूर्ण नर कर्म, जीव को खुद ही घाले

कुं० सं० धं० सं०

४४५ तिस्स नाम श्रवस्ती के, पीत वस्त्र बनवाय २५० कथा
सुबह पहनूँ वस्त्र यही, मन में अति हर्षाय
मन में अति हर्षाय, रात ही प्राण गमावे
मर कर पर वह थेर, चिलर बन वस्त्र छिपावे
सात रोज उपरान्त, चिलर वह प्राणन त्यागे
कह भगवन आनन्द, तिस्स यों तुषित उघावे

४४६ सस्वर नहीं पाठ करे, मंत्रों का है मैल २४१
झाड़ बुहारे घर नहीं, घर का है वह मैल
घर का है वह मैल, सौन्दर्य आलस मैला
वेसुध जौं रह जाय, वही पहरदार मैला
कह भगवन समझाय, मंत्र का पाठन भावे
करे न सस्वर पाठ, मंत्र ना मंत्र कहावे

४४७ जेतवन की धर्म सभा, लालूदायी थेर २४१ कथा
मंत्र पाठ में पटु नहीं, चाहे यश पर ढेर
चाहे यश पर ढेर, सारि और मौद निन्दे
धर्मासन पर आय, पाठ तज पर को निन्दे
पुरजन जब दे जोर, लालू तब छिपे पखाना
गिर तँह मल लिपटाय, भाग डर पाठ सुनाना

४४८ दुराचार मल दार का, दान कृपणता मैल २४२-२४३
भुवन लोक परलोक का, पापम होवे मैल
पापम होवे मैल, मैल बढ़ परम अविद्या
इस मल को भिखु छोड़, स्वच्छ बन लेके विद्या
कह भगवन समझाय, अविद्या मैल छुड़ाओ
सबसे वर यह मैल, ज्ञान ले इसे मिटाओ

कु० सं० | ध० सं०

४४९ कुल पुत्र इक राजगृही, स्त्री ले घर जाय २४२-२४३ कथा
स्त्री यह व्यभचारिणी, पति यों अधिक लजाय
पति यों अधिक लजाय, किन्तु न क्रोधम लावे
चल भगवन के पास, पुत्र कुल कथा सुनावे
कह भगवन समझाय, दार को नद पथ समझो
उन पर करो न क्रोध, सभा मय पनघट समझो

४५० जीना तो निर्लज्ज का, होता है आसान २४४
कौवे सरिस सूर बने, अहित करे जो आन
अहित करे जो आन, पतित बकवादी होवे
जीवन पापी लोग, दृष्टि में सुखमय होवे
कह भगवन समझाय, कठिन है जीवन उत्तम
शर्म हया ले जीय, सहज ना जीवन उत्तम

४५१ जीना तो सहलज्ज का, दुष्कर कठिन असाध्य २४५
नित्य शुचि जो ख्याल करे, जीवन जीयअसाध्य
जीवन जीय असाध्य, कठिन सम जीय सचेता
मितभाषी भी कष्ट, कठिन शुद्धजीवी जीता
कह भगवन समझाय, सबों का दुष्कर जीना
ज्ञानी जी ले कष्ट, कठिन सब उत्तम जीना

४५२ सारि पुत्र मठ जेत में, दीक्षे ऐसे शिष्य २४४-२४५ कथा
वैद्य बन आहार गहे, थुल्लसारि वह शिष्य
थुल्लसारि वह शिष्य, भिक्षु वह सुगत सुनावे
सुनकर ऐसी बात, सुगत तब भिक्षु बुझावे
कह भगवन समझाय, वेशर्म यों ही जीये
कौवा सम ले स्वार्थ, झूठ का जीवन जीये

कुं० सं० | ध० सं०

४५३ हिंसा करे झूठ भखे, गमनदार पर चोर २४६-२४७
सुरापान इस लोक में, खुद हित खुद जड़ खोर
खुद हित खुद जड़ खोर, अर्थ रस भाव उठावे
पाँच कर्म ये नीच, मनुज को दुख पहुँचावे
कह भगवन समझाय, कर्म ये ऐसे होते
गढ़े स्वयं नर नर्क, मनुज ले खुद ही गोते

४५४ पुरुष तुम लो जान यही, मन में लो यह मान २४८
संयम रहित पाप करे, ऐसे हैं ये मान
ऐसे हैं ये मान, कर्म तुम ऐसे कर ले
तुझे न लोभ अधर्म, काल चिर दुख में गह ले
कह भगवन समझाय, कर्म तुम वही उचावो
हो न शोक चिर काल, ध्यान ले कर्म उठाओ

४५५ भिक्षु गण श्रावस्ती के, गहे न पांचो शील २४६-२४८ कथा
कर प्रथम कुछ दूज करे, कोई न पंच शील
कोई न पंच शील, भिक्षु यह सुगत सुनावे
भगवन भिक्षु बुलाय, शील के मर्म बतावे
कह भगवन समझाय, श्रेष्ठ सब दुष्कर मानो
कड़ा न कुछ आसान, शील सब दुष्कर जानो

४५६ अपनी श्रद्धा भक्ति से, लोग दान कर पाय २४९
पर भोजन लख जो सदा, सहन नहीं कर पाय
सहन नहीं कर पाय, रात दिन मनः तपावे
मन शांति नहीं पाय, नहीं एकाग्रत पावे
कह भगवन समझाय, अन्य लख डाह न खाओ
पर सुख लख न शोक, सुख पर स्वगत मिलाओ

कु॰ सँ० धा॰ सं०

४५७ लख पर सुख मन चिढ़ जगे, यह वृत्ति जेहि छिन्न २५०
जड़ से जौं मिट जाय यही, पूर्ण रूप विच्छिन्न
पूर्ण रूप विच्छिन्न, वही एगाग्रत पावे
रात दिन मन शान्त, मनः स्थिरता पावे
कह भगवन समझाय, ग्रहण कर वृत्ति वैसी
पर सुख लख कर हर्ष, शांति दे वृति ऐसी

४५८ जेत धाम निवास करे, दहर तिस्स इक शिष्य २४९-२५० कथा
दाता से सब धन गहे, निन्दा कर यह शिष्य
निन्दा कर यह शिष्य, भिक्षु जा सुगत सुनावे
तब कह उक्त उदान, सुगत यों भिक्षु बुझावे
कह भगवन समझाय, दान हो गुरु या थोड़ा
शुद्ध भाव ले चाव, दान सम दीर्घम थोड़ा

४५९ राग समान आग नहीं, द्वेष न सम जकड़ाव २५१
मोह समान जाल नहीं, तृष्णा सम न बहाव
तृष्णा सम न बहाव, अर्थ रस भाव उठावे
राग द्वेष औ मोह, फसे जेहि कष्ट उठावे
कह भगवन समझाय, विष सम जालिनी तृष्णा
जौं तृष्णा फस आय, बहा कर ले चल तृष्णा

४६० भिक्षुगण श्रावस्ती में, धर्म सभा में आय २५१ कथा
धर्म श्रवण के काल ही, भिक्षु कई भरमाय
भिक्षु कई भरमाय, भिक्षु कुछ ऊपर देखे
कुछ आपस में गप्प, सुगत दिश कुछ न देखे
कह भगवन समझाय, लोभ ये सभी जलावे
द्वेष मोह सब आय, राग ही सभी बहावे

कुं सं॰ | ध॰ सं॰

४६१ पर के अगर दोष गुनें, होय सरल आसान २५२
लखना स्वयं दोष यहाँ, होय नहीं आसान
होय नहीं आसान, दोष पर भूस उड़ावे
तन जो बहेलि डाल, मनुज स्व दोष ढकावे
कह भगवन समझाय, जुआड़ी दाव छिपावे
वैसे दोषी जान, सदा खुद दोष छिपावे

४६२ अंगदेश कर चारिका, भगवन कर विश्राम २५२ कथा
रुक कर वन में जातिया, सुगत करे आराम
सुगत करे आराम, सेठ तब मेण्डक आवे
तैर्थिक पथ में रोक, सेठ यह सुगत सुनावे
कह भगवन समझाय, हमें कह अक्रियावादी
वे कर ढकते दोष, तैर्थिक: मिथ्यावादी

४६३ अग्वेशी पर दोष के, पर लख जो चिढ़ जाय ५३
पाप नाश से हट वही, आश्रव बढ़ता जाय
आश्रव बढ़ता जाय, अर्थ रस भाव उठावे
जो देखे पर दोष, पाप न कभी हटावे
कह भगवन समझाय, अन्य लख जो चिढ़ आवे
उसका घटे न पाप, पाप खुद और बढ़ावे

४६४ जेतवन में धर्म कुटी, भगवन कर विश्राम २५३ कथा
वहीं थेर उज्झान सयीं, निन्दा कर सब याम
निन्दा कर सब याम, अमुक तो ऐसा पहने
अमुक भिक्षु यों ओढ़, अमुक के ऐसे गहने
कह भगवन समझाय, अन्य लख जो चिढ़ आवे
खुद ही पाप बढ़ाय, अन्य लख मन भड़कावे

कु० सं० ध० सं०

४६५ नहीं चिह्न आकाश में, श्रवण नहीं अन्यत्र २५४
लोग प्रपंचम में लगे, सुगत रहित भव सत्र
सुगत रहित भव सत्र, अर्थ रस भाव उठावे
एक बुद्ध बस सन्त, अन्य ना तुल्य कहावे
कह भगवन समझाय, तथागत भव पथ त्यागे
अन्य लोग भव जोड़, मरे औ फिर फिर आवे

४६६ नहीं चिह्न आकाश में, श्रमण नहीं बुध छोड़ २५५
संस्कार शाश्वत नहीं, चंचलता बुध तोड़
चंचलता बुध तोड़, अर्थ रस भाव उठावे
श्रमण नहीं पर धर्म, सुगत वह एक कहावे
कह भगवन समझाय, बुद्ध का शासन सुखकर
नहीं सन्त सम बुद्ध, नहीं यों शासन अम्बर

४६७ कुशीनारा सुगत गये, परि निर्वाणम पूर्व २५४-२५५ कथा
मंचः मृत्यु लेट जभी, चमकी रश्मि अपूर्व
चमकी रश्मि अपूर्व, सुभद्रः प्रश्न उठावे
नभ में कोई चिह्न, अलग क्या श्रमण दिखावे
संस्कार क्या नित्य, सुगत श्री प्रश्न बुझावें
अन्तिम क्षण में आप, प्रश्न ये मुझे बतावें

४६८ जान प्रश्न सुभद्र के, उचरे तब भगवान २५४ २५५ कथा
उक्त तथ्य दोनो सुना, बोले तब भगवान
बोले तब भगवान, जान सब भिक्षु जुड़ावे
सुनकर बचनम बुद्ध, अन्त क्षण हृदय लगावे
कह परफुल कविराय, गगन पद कहते किसको
पद मतलब निर्वाण, बुद्ध गह मिले न पर को

धर्मार्थ वर्ग--१६

कुंडलियां संख्या | मूल धम्मपद संख्या

४६९ होवे धर्मस्थित नहीं, जो झट निर्णय लाय २५६-२५७
समुचित बिन विचार किये, निश्चय कुछ जो लाय
निश्चय कुछ जो लाय, विज्ञ जो दोनो सोचे
अर्थ व्यर्थ सच झूठ, पक्ष तज निर्णय सोचे
वही न्याय सच न्याय, वही धमपाल कहावे
धम्मस्थित वह शुद्ध, वही न्यायीक कहावे

४७० भिक्षु श्रवस्ती के सटे, भिक्षाटन पर जाय २५६-२५७ कथा
वर्षा में जब भींग रहे, कुटी विनिश्चय आय
कुटी विनिश्चय आय, भिक्षु तँह करतब देखे
गहे महात्मा घूस, झूठ का सच बन देखे
भिक्षु जेतवन आय, बात सब सुगत बतावे
सुन कर सारी बात, सुगत तब वचन सुनावे

४७१ होवे पडित वर नहीं, बहु बाचक बन कोय २५८
अभय निरापद अवैरी, पंडित बनते सोय
पंडित बनते सोय, अर्थ रस भाव उठावे
बक के अतिशय लोग, कभी ना सुधी कहावे
कह भगवन समझाय, क्षेम जो मंगल लावे
जो न बने भयभीत, वही पंडित कहलावे

कु० सं० ध० सं०

४७२ छः बर्गी बिहार बसे, बक कर समय बिताय २५८ कथा
भिक्षु लघु को तंग करे, जूठन पीठ मलाय
जूठन पीठ मलाय, कर्म भी नीच उठावे.
भिक्षाटन के काल, हीन सब कर्म जुटावे
कह भगवन समझाय, इन्हें न पंडित मानो
नर जो अति ही बोल, उन्हें न पंडित जानो

४७३ धर्मधर बन जाय नहीं, अधिक बोल कर लोग २५९
धर्म अल्प ही जौं सुने, धर्मम ज्ञाता लोग
धर्मम ज्ञाता लोग, धर्मधर वही कहावे
सुन धर्मम जो नाम, काय साक्षात करावे
कह भगवन समझाय, प्रमाद न धर्मम लावे
जेहि धर्म ले जान, वही धर्मधर कहावे

४७४ क्षीणाश्रव इक भिक्षु को, सब कह एकू दान २५९ कथा
विपिन में एकान्त बसे, सुमरे एक उदान
सुमरे एक उदान, उपोसथ दिन वह गावे
साधु साधु के शब्द, सघन बन गूंज उठावे
कह भगवन समझाय, धर्मधर सचमुच एकू
गुन के एक उदान, धर्म सह गह ले एकू

४७५ होवे वही थेर नहीं, सिर जो बाल पकाय २६०
उसकी मात्र आयु पकी, तुच्छ वृद्ध कहलाय
तुच्छ वृद्ध कहलाय, अर्थ रस भाव उठावे
वृद्ध नहीं बन थेर, थेर तो भिन्न कहावे
कह भगवन समझाय, वयस से कुछ ना होवे
वही पुरुष कह थेर, सुधी जो धर्मी होवे

कु० सं० धं० सं०

४७६ जिसमें सत्य धर्म रहे, दम संयम को लाय २६१
अहिंसा का भाव रखे, विगतःमल कहलाय
विगतःमल कहलाय, थेर वह धीर कहावे
जिसमें गुण यह प्राप्त, वही स्थविर कहावे
कह भगवन समझाय, ज्ञान जेहि सत्य जिसमें
वही संत सच थेर, अहिंसा भावम जिसमें

४७७ जेतवन विश्राम करे, लकुण्टक एक थेर २६०-२६१ कथा
भदिय लकुण्टक सब कहे, ऊँचे गुण के थेर
ऊँचे गुण के थेर, थेर पर थे ये नाटे
भिक्षु कह श्रामणेर, समझकर उनको छोटे
कह भगवन समझाय, आप से कुछ ना होवे
वही पुरुष कह थेर, ज्ञान जो पुंजम होवे

४७८ ईर्ष्यालू और मत्सरी, फिर नर जो शठ रूप २६२
रूपवान वक्ता बने, होये न साधु रूप
होये न साधु रूप, अर्थ रस भाव उठावे
डाही द्वेषी लोग, कभी ना साधु कहावे
कह भगवन समझाय, मंजु न सन्त कहावे
शठ डाही रख द्वेष, बोल ना साधु बनावे

४७९ जिसके अवगुण ये सभी, (डाह द्वेष शठ रूप) ६३
जड़ से जौं विनिष्ट हुए, पूर्ण त्याग शठ रूप
पूर्ण त्याग शठ रूप, पुरुष जो सदिश बनावे
द्वेष रहित सज्ञान, पुरुष वह साधु कहावे
कह भगवन समझाय, प्रथम नर अवगुण डाहे
तभी सन्त बन पाय, साधु पद तभी उगाहे

४८० जेतवन विहराम करे, दहर भिक्षु ले सीख २६२-२६३ कथा
इनको भिक्षु वृद्ध सभी, चाहे देना सीख
चाहे देना सीख, दहर पर यह ना चाहे
कर अपना सब ठीक, धर्म का गुण अवगाहे
वृद्ध भिक्षु तब जाय, सुगत से कर दे निन्दा
जान सही सब बात, सुगत कह करो न निन्दा

४८१ मुंडित होये मात्र से, श्रमण नहीं कहलाय २६४
मिथ्याभाषी अव्रती, नहीं साधु बन पाय
नहीं साधु बन पाय, राग जो लिप्तम होवे
लोभ लाभ से पूर्ण, भला क्या श्रमणः होवे
कह भगवन समझाय, श्रमण पथ बंधन तृष्णा
वही श्रमण बन पाय, सफल बन त्यागे तृष्णा

४८२ छोटे बड़े पाप सभी, जिस नर के मिट पाय २६५
पाप नष्ट जब सवर्था, श्रमण वही कहलाय
श्रमण वही कहलाय, अर्थ रस भाव उठावे
जिसके आश्रव नष्ट, वही श्रमणः कहलावे
कह भगवन समझाय, पाप मत समझो खोटे
पाप सभी कर छिन्न, दीर्घ या होवे छोटे

४८३ हत्थक नाम भिक्षु सदा, ठाने वाद विवाद २६४-२६५ कथा
तैर्थिक जन को बोल दे, आओ करो विवाद
आओ करो विवाद, पुनः कह डर के भागे
ऐसे मारे डींग, समझ खुद सब से आगे
कह भगवन समझाय, झूठ कह साधु न होवे
पाप नाश कर पाय, तभी नर साधु कहावे

कु० सं० धा० सं०

४८४ भिक्षु होये जीव नहीं, भीख मांग पर लोग २६६
भिक्षु बनते वही नहीं, विषम धर्म ले योग
भिषम धर्म ले योग, अर्थ रस भाव उठावे
पर से भीख उघाय, कोई न भिक्षु कहावे
कह भगवन समझाय, भिक्ष ना योग बनावे
विषम धर्म के योग, साधु ना भिक्षु बनावे

४८५ मनुज पुण्य औ पाप को, तज दे जो इह लोक २६७
ब्रह्मचर्य बन ज्ञान ले, विचरे जो भू लोक
विचरे जो भू लोक, वही सच भिक्षु कहावे
पाप पुण्य के मोह, तजे जो भिक्षु कहावे
कह भगवन समझाय, पुण्य के मोह सतावे
तज दे पुण्यम मोह, तभी वह भिक्षु कहावे

४८६ जेतवन विश्राम जभी, कहे विप्र भगवान २६६-२६७ कथा
स्व शिष्य को भिक्षु कहें, क्यों न मुझे भगवान
क्यों न मुझे भगवान, भीख तो मैं भी लाऊँ
ज्यों भिखु मांगे भीख, घूम कर भीख उघाऊँ
कह भगवन समझाय, भीख गह भिक्षु न मानो
संस्कार जेहि त्याग, उसे ही भिक्षु बखानो

४८७ मौन रहे ना मुनि बने, जेहि शठ अविद्वान २६८-२६९
श्रेष्ठ तुला सम जो गहे, वही साधु विद्वान
वही साधु विद्वान, उभय भव तौल बुझावे
तज के सारे पाप, मुनि सत्य मुनिह कहावे
कह भगवन समझाय, मौन नहीं मुनि कहावे
जाने जो द्विलोक, मुनि वही मुनिह कहावे

कु० सं० ध० सं०

४८८ तैर्थिक भोजन जब करे, अनुमोदन कर अल्प २६८-२६९ कथा
'सुख होतु' बस शब्द कहे, मौनम ले संकल्प
मौनम ले संकल्प, पुनः खुद सन्त बतावे
निन्दा कर बुध शिष्य, उन्हें न सन्त बतावे
कह भगवन समझाय, मौन बन मुनि ना कोई
जो तज पूर्णम पाप, उसी सम सन्त न कोई

४८९ उनको कहें आर्य नहीं, जो प्राणी हिंसाय २७०
जो न जीव हिंसा करे, आर्य वही कहलाय
आर्य वही कहलाय, अर्थ रस भाव उठावे
हिंसा करके जीव, कभी मत आर्य कहावे
कह भगवन समझाय, जीव जो करे न हिंसा
वही सन्त सच आर्य, वृत जेहि धरे अहिंसा

४९० श्रावस्ती इक नर करे, मत्स्य मार भर पेट २७० कथा
पोखर नद वंशी धरे, यही भांति भर पेट
यही भांति भर पेट, वही नर मछली मारे
भगवन आते देख, कर्म तज नमः पुकारे
भगवन पूछे नाम, आर्य तब वही उचारे
भगवन उसे बताय, आर्य न जीव संहारे

४९१ होवे शोक अन्त नहीं, शील वृत लेय मात्र २७१
बहुश्रुत बन कोय नहीं, न समाधि लेय मात्र
न समाधि लेय मात्र, नहीं एकान्तम सोये
पृथक जन जो मूढ़, तत्व जो नेक्खम खोये
'पाऊँ फल वह तत्व', सोच नहीं श्रेष्ठ होवे
मन में गह यों सोच, शोक नहीं अन्त होवे

कु० सं० घ० सं०

४९२ भिक्षु मत विश्वास गहो, जब तक पाप न नष्ट २७२
शील मात्र से ना बने, नहीं वृत ले कष्ट
नहीं वृत ले कष्ट, अर्थ रस भाव उठावे
पाप नष्ट अनिवार्य, सुगत यह पाठ पढ़ावे
कह भगवन समझाय, सकल नर पाप मिटाओ
तभी धेय हो पूर्ण, कभी ना शोक उघाओ

४९३ जेतवन विहरात जभी, भिखुगण मन में सोच २७१-२७२ कथा
हम भिक्षु तो शील गहे, मिली समाधिम सोच
मिली समाधिम सोच, जभी मन चाहे लेंगे
निर्वाणम आसान, शीघ्र हम इसको लेंगे
बन शील: सम्पन्न, कठिन ना नेक्खम होये
भिक्षु यही मन सोच, रात दिन सुख में सोये

४९४ एक दिन भगवान कहें, पूर्ण हुआ क्या होय २७१-२७२ कथा
दीक्षा जेहि भिक्षु गहे, किये पूर्ण क्या होय
किये पूर्ण क्या होय, भिक्षु तब मन के बोले
शील समाधिम प्राप्त, पूर्ण तो सब कुछ होले
कह भगवन समझाय, सहज ना नेक्खम पाओ
जब तक पाप न नष्ट, पूर्ण ना धेय जुटाओ

मार्ग वर्ग-२०

कुंडलिया संख्या | मूल धम्मपद संख्या

४६५ मार्ग में अष्टांग यही, होये सबसे श्रेष्ठ २७३
सब सत्य में चार यही, आर्य सत्य बन श्रेष्ठ
आर्य सत्य बन श्रेष्ठ, चतुर पद आर्य कहावे
सब धर्मों में श्रेष्ठ, धर्म वैराग्य कहावे
नर द्विपद में श्रेष्ठ, बुद्ध चक्षुमान मानें
ज्ञान नेत्र ले बुद्ध, मनुज में उत्तम जानें

४६६ दर्शन की विशुद्धि लिये, मार्ग अष्ट ना और २७४
इस पर तुम आरूढ़ हो, मिल जायेगा ठौर
मिल जायेगा ठौर, मार को मूर्छित कर दे
अष्टांगिक ही मार्ग, मार को नष्टस कर दे
कह भगवन समझाय, मार्ग ये कहीं न मिलते
सिर्फ बुद्ध के धर्म, अन्य ना कहीं झलकते

४६७ अष्ट मार्ग आरूढ़ हो, कर दोगे दुख शेष २७५
निवारण दुख-शल्य लिये, मैं बांचा उपदेश
मै बांचा उपदेश, निवारण नेक्खम समझा
शोक नाश के मूल, निर्वाण अठ पथ समझा
कह भगवन समझाय, मार्ग अठ सुन्दर उत्तम
करे शोक सब नाश, मुक्ति का मारग उत्तम

कु० सं० ध० सं०

४९८ कारज हेतु तो तुम्हें, करना है उद्योग २७६
तथागत का कार्य यही, कर उपदेश प्रयोग
कर उपदेश प्रयोग, सोच यह मारग चढ़ लो
रत होकर बस ध्यान मार के बंधन तज लो
कह भगवन समझाय, यत्न तो मनुज उठावे
सभी बुद्ध गुरु मात्र, यत्न खुद जीव उठावे

४९९ जेतवन की कथा सुनें, सुगत करे विश्राम २७३-२७६ कथा
वहीं भिक्षु आ पाँच सौ, करे रात आराम
करे रात आराम, परस्पर तर्क बढ़ावे
अमुक मार्ग वह श्रेष्ठ, अमुक को हीन बतावे
सुन भगवन समझाय, भिक्षु तुम सही न बोलो
पर मारग नहीं सत्य, मार्ग अठ असली बोलो

५०० संस्कार नहीं नित सभी, जब यों प्रज्ञा देख २७७
सारे तब संताप से, प्राप्त करे निर्वेद
प्राप्त करे निर्वेद, मार्ग यह विशुध कहावे
विशुद्धि यही मार्ग, यही निर्वाण कहावे
कह भगवन समझाय, अनित संस्कारम सारे
प्रज्ञा से जब देख, मिटे तब शोकम सारे

५०१ रह के जेत विहारिका, भिखु ले कर्म स्थान २७७ कथा
पंच शत यें भिक्षु सभी, करे विपिन प्रस्थान
करे विपिन प्रस्थान, पुनः वे लौट फिरावे
गहे न कोई ज्ञान, लौट फिर जेत फिरावे
कह भगवन समझाय, अनित्यम लक्षण तेरे
पूर्व जन्म यह बोध, उसी पर श्रम कर सारे

स०　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　ध० सं०

५०२ संस्कार सब शोक दिखे, जौं प्रज्ञा से देख २७८
सारे तब संताप से, प्राप्त करे निर्वेद
प्राप्त करे निर्वेद, मार्ग यह विशुध कहावे
विशुद्धि यही मार्ग, यही निर्वाण कहावे
कह भगवन समझाय, संस्कार शोकम सारे
प्रज्ञा से यदि देख, मिटे तब शोकम सारे

५०३ रह के जेत विहारिका, भिखु ले कर्मस्थान २७८ कथा
पंच शत ये भिक्षु सभी, करे विपिन प्रस्थान
करे विपिन प्रस्थान, पुनः वे लौट फिरावे
गहे न कोई ज्ञान, लौट फिर जेत फिरावे
कह भगवन समझाय, शोकमय लक्षण तेरे
पूर्व जन्म के बोध, उसी पर श्रम कर सारे

५०४ सभी धर्म अनातम लखे, जौं यह प्रज्ञा देख २७९
सारे तब सताप से, होय प्राप्त निर्वेद
होय प्राप्त निर्वेद, मार्ग यह विशुध कहावे
विशुद्धि यही मार्ग, यही निर्वाण कहावे
कह भगवन समझाय, अनातम स्कन्ध सारे
प्रज्ञा से यदि देख, मिटे तब शोकम सारे

५०५ रह के जेत विहार में, भिखु ले कर्म स्थान २७९ कथा
पंच शत ये भिक्षु सभी, करे विपिन प्रस्थान
करे विपिन प्रस्थान, पुन. वे लौट फिरावे
गहे न कोई ज्ञान, लौट फिर वही फिरावे
कह भगवन समझाय, अनातम बुझ तुम स.रे
पूर्व जन्म के बोध, उसी पर श्रम कर सारे

कु० सं० घ० स०

५०६ उद्योग के समय सही, जो न करे उद्योग २८०
बन तरुण औ परम बली, ले आलस का रोग
ले आलस का रोग, उच्च आकांक्षा त्यागे
दीर्घसूत्र बन सुस्त, पथ नहीं प्रज्ञा पावे
कह भगवन समझाय, बने नर सच उद्योगी
ठीक समय उद्योग, करे तब बन उद्योगी

५०७ जेतवन से भिक्षु सभी, करे विपिन प्रस्थान २८० कथा
मगर भिक्षु तिस नाम का, नहीं करे प्रस्थान
नहीं करे प्रस्थान, भिक्षु जब वन से लौटे
भगवन पूछें क्षेम, भिक्षु ले अर्हत लौटे
खड़ा सोच तब तिस्स, सुगत ना मुझ से बोले
मन में तब वह सोच, आज ही अर्हत ले ले

५०८ वाणी का संयम करे, संयम मन का लाय २८१
तन से कुछ न पाप करे, कर-पथ त्रि शुद्धाय
कर-पथ त्रि शुद्धाय, ऋषि: के पथ पर जाये
ऋषि जो पथ बतलाय, उसी का मार्ग उठाये
कह भगवन समझाय, कर्म–पथ तीनो स्वच्छो
वाणी मन औ देह, सबों को पूर्णम स्वच्छो

५०९ गृद्ध कूट पर्वत जहाँ, वास करे इक प्रेत २८१ कथा
सारा तन नर सा बना, सूकर सा सिर प्रेत
सूकर सा सिर प्रेत, मौद यह सुगत सुनावे
भगवन कह तब मौद, प्रेत यह याद दिलावे
कह भगवन समझाय, पूर्व यह भिखु दो फोडे
उसी पाप का भोग, प्रेत वह नर पशु जोड़े

कु० सं० ध० सं०

५१० प्रज्ञा तभी जन्म गहे, जब कर योगाभ्यास २८२
प्रज्ञा तब विनाश गहे, जब ना योगाभ्यास
जब ना योगाभ्यास, मार्ग नर दोनो समझे
वृद्धि: और विनाश, बुद्धि दो मारग समझे
कह भगवन समझाय, जान ये स्वयं लगावे
सदा योग के साथ, वृद्धि यों बुद्धि कमावे

५११ पोठिल नाम जेत रहे, धर्म कथित गुरु थेर २८२ कथा
मार्ग फल मत ध्यान धरे, अन्य पढ़ावे थेर
अन्य पढ़ावे थेर, सुगत इक नाम धरावे
तुच्छ पोठिल: नाम, सुगत कह उसे बुलावे
मन में उठ संवेग, विपिन चल थेर अकेले
लेकर चीवर पात्र, थेर यह चले अकेले

५१२ विपिन पास श्रवस्ती के, पोठिल आश्रय मांग २८२ कथा
श्रामणेर से जब कहे, स्वीकारे वह मांग
स्वीकारे वह मांग, कहा पर माने आज्ञा
पोठिल कर स्वीकार, बाल भिखु माने आज्ञा
कर स्थिर तब चित्त, पोठिल: धर्म कमावे
क्षण में अर्हत प्राप्त, ज्ञान औ बुद्धि उठावे

५१३ भिक्षु वन को काट गिरा, वृक्ष नहीं वन काट २८३
विपिन भय उत्पन्न करे, झाड़ विपिन सब काट
झाड़ विपिन सब काट, पूर्ण सब काट गिराओ
बन तब वन से हीन, विपिन तब नहीं फिराओ
कह भगवन समझाय, विपिन यह रागम समझो
नर के लोकम मोह, राग भव तृष्णा समझो

कुं० सं० | ।० सं०

५१४ इच्छा नारी के लिए, अगर न खंडित पूर्ण २८४
अणु मात्र भी अगर रही, सफल न नर हो पूर्ण
सफल न नर हो पूर्ण, दार में लिप्त बितावे
ज्यों बछड़ा पय हेतु, गाय से चिपक दिखावे
कह भगवन समझाय, करो तुम वृतिम स्वच्छा
काटो सारे काम, दार हित सारी इच्छा

५१५ वृद्ध भिक्षु गण जेत में, मिलकर करे निवास २८३ २८४ कथा
दिन का सारा समय बिते, गप्प और परिहास
गप्प और परिहास, एक की स्त्री देती
मधुर मधुर सब खाद्य, पूर्व की स्त्री देती
स्त्री छोड़ी प्राण, भिक्षु सब लगे बिलखने
गर्दन पकड़े साथ, बाल सम लगे कलपने

५१६ काटो आत्म स्नेह सभी, शरद कुमुद ज्यों हाथ २८५
शान्ति पथ निर्वाण गहो, बुद्धम द्वारा दात
बुद्धम द्वारा दात, मार्ग बुध आश्रय ले लो
बुद्ध धर्म प्रज्ञान, पुरुष तुम शरणम ले लो
कह भगवन समझाय, आत्म सब स्नेहम काटो
शरद कुमुद ज्यों नर्म, हाथ से झट से काटो

५१७ जेतवन जब वास करे, सारि पुत्र रख शिष्य २८५ कथा
कुल सोनार बाल यही, गुने ध्यान हित शिष्य
गुने ध्यान हित शिष्य. किन्तु ना ज्ञान कमावे
जाकर भगवन पास, सुगत से तथ्य सुनावे
कह भगवन रख रेत, यही तुम स्वर्गिम पुष्पम
जब पुष्पम मुरझाय, गहे लख ज्ञानम उत्तम

कु० सं० ध० सं०

५१८ नर कह इत वर्षा बसूँ, यहाँ ग्रीष्म उत शीत २८६
सोच यही शठ सब हँसे, बुझे न जीवन शीत
बुझे न जीवन शीत, विघ्न ना जीवन समझे
ऋतु सब सोचे ज्ञान, स्वयं ना जीवन समझे
कह भगवन समझाय, गुने जो जीवन ज्ञानी
जीवन ऋतु ले ज्ञान, वही बन असली ज्ञानी

५१९ वणिक धनी वाराणसी, श्रावस्ती पट लाय २८६ कथा
नद तट रात वास करे, सरिता बाढ़ उठाय
सरिता बाढ़ उठाय, वणिक तब सोचे ठहरूँ
वृष्टि शरद सब काल, किनारे नद कह ठहरूँ
कह भगवन समझाय, सात दिन जीवन इसका
सोचे फिर सब काल, अल्प पर जीवन इसका

५२० बहावे ज्यों बाढ़ उठी, सहसा गाँव सुसप्त २८७
लिप्त जीव पशु पुत्र को, मृत्यु करे तिमि लिप्त
मृत्यु करे तिमि लिप्त, अर्थ रस भाव उठावे
जीव चाह रख जोग, मरण पर उसे उठावे
कह भगवन समझाय, मरण यों मनुज झुकावे
नहीं भुवन यों जीव, मरण ना जिसे बहावे

५२१ कृशा गौतमी गाँव से, लौटी फिर जब आय २८७ कथा
सरसों जब ना प्राप्त हुआ, सुगत पास तब आय
सुगत पास तब आय, सुगत तब उसे बुझावे
मृत्यु ध्रुव कह धर्म, कोई न इसे बचावे
कह भगवन समझाय, मृत्यु यम राजा भारी
औचक सर वह मार, धरी रह इच्छा सारी

कुं० सं० धा० सं०

५२२ करे सुरक्षा सुत नहीं, पिता न भाई बंधु २८८
मृत्यु जब आ निकट धरे, रक्षे जाति न बंधु
रक्षे जाति न बंधु, अन्य ना तभी बचावे
बंधु पिता सुत भ्रात, तभी न कोई छुड़ावे
कह भगवन समझाय, पूर्ण ना नर की इच्छा
सत्य मरण को मान, वृति को कर लो स्वच्छा

५२३ मान जान कर जब यही, मृत्यु बनी बलवान ८६
पंडित नर को चाहिए, बन जाय शीलवान
बन जाय शीलवान, मार्ग को साफ करावे
पथ जो चल निर्वाण, शीघ्र वह साफ करावे
कह भगवन समझाय, शील नर शोध करावे
लोक मृत्यु को जान, निर्वाण शीघ्र उघावे

५२४ पटा चारा पूर्ण दुखी, पति दो पुत्र गमाय २८८-२८९ कथा
मातु पिता भाई सभी, एक चिता जल जाय
एक चिता जल जाय, दुक्ख का पर्वत टूटे
आँसू आँख सुखाय, हृदय का कण कण टूटे
बन पगली भरमाय, शोक से बनकर नंगी
जाय सुगत के पास, दशा ले वैसी नंगी

५२५ पटाचारा होश गहे, भगवन तब समझाय २८८-२८९ कथा
स्वजन मरण दुख करो, वह कुछ काम न आय
वह कुछ काम न आय, मृत्यु क्षण पुत्र न रक्षे
अन्य नहीं भव लोग, मृत्यु से तुमको रक्षे
कह भगवन समझाय, धैर्य रख जान पटारे
करो विशोधन शील, शुद्धि मन गहो पटारे

प्रकीर्णक (विविध) वर्ग—२१

कुंडलिया संख्या | मूल धम्मपद संख्या

५२६ अल्प सुख व भोग तजे, नर यदि सुख अति ढोय २९०
विज्ञ पुरुष को चाहिए, सुख गुरु हित लघु खोय
सुख गुरु हित लघु खोय, अर्थ रस भाव उठावे
शाश्वत सुख पर जोर, भोग भव दूर हटावे
कह भगवन समझाय, सोच यह कर्म उघाओ
परम भोग तुम ढूँढ़, अल्प सुख नहीं जुटाओ

५२७ वैशाली अकाल मचे, फैले ताउन रोग २९० कथा
राजगीर से बुद्ध को, नगरम लाये लोग
नगरम लाये लोग, मार्ग को खूब सजावे
दोनो नगरम बीच, सुगत को पूज अघावे
भगवन भिक्षु बुझाय, पूर्व की मैंने पूजा
पूज प्रत्येक चैत्य, उसी से फल यह पूजा

५२८ देकर दुख जो अन्य को, अपने ले आराम २९१
वैर संग में वह पड़े, वैर चले अविराम
वैर चले अविराम, अर्थ रस भाव उठावे
नर जो गह यों भोग, शांति ना चित्त उघावे
कह भगवन समझाय, अन्य मत कभी दुखाओ
दुख दो जौं जन अन्य, हर्ष ना कभी जुटाओ

कु० सं० ध० सं०

५२९ श्रवस्ती के पास रहे, पाण्डुपूर एक गाँव २९१ कथा
मुर्गी पाले इक सुती, रह कर उस ही गाँव
रह कर उस ही गाँव, खाय सब अण्डे मुर्गी
मुर्गी बनी बिलाय, सुती वह मर कर मुर्गी
बिल्ली बच्चा खाय, जन्म बहु वैर चलावे
कह भगवन समझाय, वैर तो वैर बढ़ावे

५३० जो नर अकर्त्तव्य करे, तज कर्त्तव्य सुकर्म २९२
ऐसे शठ प्रमादी के, बढ़े पाप सब कर्म
बढ़े पाप सब कर्म, अर्थ रस भाव उठावे
सत्य कर्म जो त्याग, पाप सब कर्म उठावे
कह भगवन समझाय, सदा कर्त्तव्य निभाओ
करो न अनुचित कर्म, नहीं तो पाप जुटाओ

५३१ स्मृति काया की जिसे, रहे उपस्थित नित्य २९२
अकर्त्तव्य: वे न करे, करे कर्त्तव्य नित्य
करे कर्त्तव्य नित्य, मनुज यों पाप न लावे
स्मृति चेतन युक्त, पुरुष सब पाप मिटावे
कह भगवन समझाय, गहे नर स्मृति काया
नहीं पाप रह जाय, गहे जो चेतन काया

५३२ भदिय वासी भिक्षु रहे, कर्म पादुका व्यस्त २९२ २९३ कथा
नूतन गढ़ रंगे उसे, यही काम कर व्यस्त
यही काम कर व्यस्त, सुगत तब उन्हें बुझावे
अन्य धेय ले आय, अन्य में समय बितावे
कह भगवन समझाय, सत्य कर्त्तव्य निभाओ
दो न कर्म अरु ध्यान, ध्यान गुण चित्त लगाओ

कु० सं० ध० सं०

५३३ तृष्णा रूपी मातु को, पिता तुल्य अभिमान २९४
शाश्वत व उच्छेद दीठि, नृप दुई क्षत्रियान
नृप दुई क्षत्रियान, राष्ट्र सह अनुचर मारे
सकल भुवन की चाह, पुरुष जो ये सब मारे
उसे कहें तब विप्र, वही क्षीणाश्रव होवे
दुख से वही विहीन, शुद्ध ब्राह्मण कहलावे

५३४ हत्या कर माता पिता, तृष्णा अहम् समान २९५
शाश्वत व उच्छेद दीठि, नृप दुई श्रोत्रियान
नृप दुई श्रोत्रियान, पांचवाँ व्याघ्रम मारे
तुल्य नीवरण पाँच, विप्र तब शोकम बारे
कह भगवन समझाय, दोष जब उक्त हटावे
तभी जीव वह विप्र, विप्र तब शोक हटावे

५३५ जेतवन विहराम बसे, लकुण्टक एक थेर २९४-२९५ कथा
सुगत तब संकेत करें, देख लकुण्टक थेर
देख लकुण्टक थेर, थेर यह पितु मां मारे
बन अब शोक विहीन, लकुण्टक बन हत्यारे
कह भगवन समझाय, भिक्षु न ऐसे चौंको
हत्या कर सब दोष, थेर यह ऐसा सोचो

५३६ बुद्ध स्मृति बनी रहे, जिन्हें नित दिन रात २९६
वे गौतम श्रावक सदा, जागृत सुप्त व जाग
जागृत सुप्त व जाग, अर्थ रस भाव उठावे
गौतम के सब शिष्य, मनन कर काल बितावे
कह भगवन समझाय, स्मृति बुध शिष्य लावे
सयन जाग सब काल, सचेत बन क्षण बितावे

कु० सं० — ध० सं०

५३७ धर्म स्मृति बनी रहे, जिन्हें नित दिन रात २९७
वे गौतम श्रावक सदा, जागृत सुप्त व जाग
जागृत सुप्त व जाग, अर्थ रस भाव उठावे
गौतम के सब शिष्य, ध्यान कर काल बितावे
कह भगवन समझाय, स्मृति धर्म ये लावे
जाग सोय ये शिष्य, सुमर कर समय बितावे

५३८ संघ स्मृति बनी रहे, जिन्हें नित दिन रात २९८
वे गौतम श्रावक सदा, जागृत सुप्त व जाग
जागृत सुप्त व जाग, अर्थ रस भाव उठावे
गौतम के सब शिष्य, ध्यान कर काल बितावे
कह भगवन समझाय, स्मृति संघ ये लावे
जाग सोय सब शिष्य, सुमर कर समय बितावे

५३९ काय स्मृति बनी रहे, जिन्हें नित दिन रात २९९
वे गौतम श्रावक सदा, जागृत सुप्त व जाग
जागृत सुप्त व जाग, अर्थ रस भाव उठावे
गौतम के सब शिष्य, मनन कर काल बितावे
कह भगवन समझाय, स्मृति तन शिष्य लावे
जाग सोय ये शिष्य, सुमर कर समय बितावे

५४० मन अहिंसा रमे रहे, जिनके नित दिन रात ३००
वे गौतम श्रावक सदा, जागृत सुप्त व जाग
जागृत सुप्त व जाग, अर्थ रस भाव उठावे
गौतम के सब शिष्य, ध्यान कर समय बितावे
कह भगवन समझाय, अहिंसा मन ये लावे
जाग सोय ये शिष्य, चेत कर समय बितावे

कु० सं० ध० सं०

५४१ मन समाधि में रत रहे, जिनके नित दिन रात ३०१
वे गौतम श्रावक सदा, जागृत सुप्त व जाग
जागृत सुप्त व जाग, मर्म रस भाव उठावे
गौतम के सब शिष्य, मनन कर समय बितावे
कह भगवन समझाय, समाधि मन जेहि लावे
जाग सोय ये शिष्य, सुमर कर समय बितावे

५४२ राजगिरि में एक रहे, दारु साटिक पुत्र २९६-३०१ कथा
सम्यक दृष्टि पुत्र बने, नमो बुद्ध कह सूत्र
नमो बुद्ध कह सूत्र, सदा वह क्रीड़ा जीते
ध्यानी पुत्र प्रसन्न, झूठ दीठ सूत न जीते
नमो बुद्ध कह बाल, भूत से बच भी आवे
चोर दोष भी जाय, बुद्ध सुन कथन सुनावे

५४३ प्रवज्या की प्राप्ति यहाँ, होय कठिन दुस्साध्य ३०२
प्रवज्या में लीन रहे, अति दुष्कर दुस्साध्य
अति दुष्कर दुस्साध्य, बुरा घर दुष्कर होवे
नर प्रतिकूलम साथ, बास भी दुष्कर होवे
पथिक होय भव मार्ग, कठिन दुखदायी मानें
सो न पथिक बन लोक, दुख के पथ नहीं ठानें

५४४ महावन वैशाली के, भगवन करें विहार ३०२ कथा
बज्जि पुत्र एक भिक्षु बने, ढुलमुल करे विचार
ढुलमुल करे विचार, नगर में उत्सव सुन के
बाजा गाजा ढोल, नृत्य औ गाना सुन के
कह भगवन समझाय, गहे जब तुम अब दीक्षा
तजो भुवन गह धर्म, करो तुम धर्मम रक्षा

कु० सं० ध० सं०

५४५ नर जेहि श्रद्धालु रहे, यशस्वी शीलवान ३०३
तथा भोग जो नर गहे, पूजित हर स्थान
पूजित हर स्थान, अर्थ रस भाव उठावे
जहाँ कहीं वह जाय, पूज्य बन मान कमावे
कह भगवन समझाय, श्रद्धा जो शील: लावे
यश भोगम से युक्त, वही सम्मान जुटावे

५४६ चित्त गृहपति श्रावथी, मुनि से मिलने आय ३०३ कथा
भगवन देख के उनको, आदर अधिक दिखाय
आदर अधिक दिखाय, आनन्द भगवन पूछे
अगर आप लँह जाँय, गहें क्या आदर ऊँचे
कह भगवन आनन्द, पुरुष जो शील: गह ले
हर थल पावे मान, जहाँ भी पद वह रख ले

५४७ संत यदि भी दूर रहे, हिम पर्वत सा भाय ३०४
असन्त: रह पास भले, नहीं कहीं दिखलाय
नहीं कहीं दिखलाय, गुप्त रह वाण: जैसे
रात चलित जौं वाण, असन्त: लुप्तम वैसे
कह भगवन समझाय, सन्त तो दीप्त दिखावे
भले रहें वे दूर, सरिस हिम शैल दिखावे

५४८ पुत्री अनाथपिंड की, चूल सुभद्रा नाम ३०४ कथा
कुल ससुर उसके सभी, भजे निर्ग्रन्थ नाम
भजे निर्ग्रन्थ नाम, चूल जब न्योत पठायी
शीघ्र पहुँच भगवान, सुगत को चूल खिलायी
कह भगवन समझाय, सुभद्रा ऐसी नारी
रहे दूर लग पास, धर्म की ऐसी प्यारी

कु० सं०   ध० सं०

५४६ जो आसन इक ही रखे, शय्या इक ही सोय   ३०५
एकान्त विहुराम करे, औ आलस सब धोय
औ आलस सब धोय, स्वयं को दमन करावे
तो चलकर एकान्त, सघन वन रमण करावे
कह भगवन समझाय भिक्षु जो ये गुण लाये
वन में यह आनन्द, विपिन रह रमण कराबे

४५० भिक्षु विहार जेत रहे, एक अकेला शान्त ३०५ कथा
भ्रमण अकेला वह करे, सयन अकेला शान्त
सयन अकेला शान्त, चंक्रमण करे अकेला
सभी काम एकान्त, रहे वह खड़ा अकेला
भिक्षु बीच यह बात, सभा में बातें फैली
परिषद चारों बीच, नगर में बातें फैली

४५१ भिक्षु तब यह जाय कहे, भगवन से बन शान्त ३०५ कथा
भिक्षु तब सब अलग करे, काम सभी एकान्त
काम सभी एकान्त, एक ही शय्या रक्खे
रहे खड़ा थल एक, एक ही आसन रक्खे
कह भगवन समझाय, कर्म वह उचित उठावे
रहें भिक्षु एकान्त, परम पद तभी कमावे

नरक वर्ग-२२

कुंडलिया संख्या | मूल धम्मपद संख्या

५५२ झूठा नरकम में चले, और एक भी जाय ३०६
जेहि कर कह किये नहीं, उभय नरक में जाय
उभय नरक में जाय, उभय ये गति सम पावे
मर ये दोनो नीच, एक सम दुर्गति पावे
कह भगवन समझाय, झूठ कह पापम भारी
कर के अस्वीकार, पाप बन उत सम भारी

५५३ भगवन से तैर्थिक सभी, डाह हमेशा खाय ३०६ कथा
भिक्षु संघ जब यश गहे, तैर्थिक देख न पाय
तैर्थिक देख न पाय, सभी षड़यन्त्र रचावे
सुन्दरी तभी बुलाय, दुष्ट तब उसे मनावे
मिल सब गढ़े उपाय, सुन्दरी सब से बोले
रति कर गौतम रात, सुबह वह मठ में होले

५५४ चन्द दिन उपरान्त सभी, तैर्थिक रचे उपाय ३०६ कथा
मार जान से सुन्दरी, गुण्डों से छिपवाय
गुण्डों से छिपवाय, दुष्ट तब यही प्रचारे
देख भिक्षु कर्त्तव्य, सुन्दरी वही संहारे
पकड़ भिक्षु तब भूप, अधिक ही कष्ट दिलावे
फिरा फिरा पुर गाँव, भिक्षु को नीच दिखावे

५५५ पीकर गुण्डे दुष्ट सभी, मुंह से सब बक जाय ३०६ कथा
सुन्दरी लाश कँह छिपी, जोर जोर चिल्लाय
जोर जोर चिल्लाय, भूप तब तथ्य सुनावे
तंथिक नृप बुलबाय, दण्ड दे सभी सुनावे
कहे भूप तब दुष्ट, मगर में घूम फिराओ
कहो सुगत निर्दोष, तथ्य सब सभी सुनाओ

५५६ नृप कोशल तब कह चले, क्षमा करें भगवान ३०६ कथा
बिन कारण मैंने किया, मुनि का यों अपमान
मुनि का यों अपमान, सुगत पर शान्त सुनावे
नहीं मुझे कुछ कष्ट, भूप को बोध बतावे
कह भगवन समझाय, वचन यह गाथा बोले
झूठ नहीं टिक पाय, सत्य झट क्षण में खोले

५५७ पीला वस्त्रम कंठ धरे, असंयमी बहुताय ३०७
जो पापी खुद कर्म से, नरक जाय जन्माय
नरक जाय जन्माय, अर्थ रस भाव उठावे
पापी गह के पीत, भुवन में अधिक फिरावे
कह भगवन समझाय, वस्त्र ना अर्थ दिखावे
पापी भी गह पीत, पहन कर पाप उघावे

५५८ गृद्ध कूट पर्वत जहाँ, मौद लखे यों जीव ३०७ कथा
पाँच भिक्षु जल देह से, वस्त्र वदन सब चीज
वस्त्र वदन सब चीज, सुगत तब मौद बुझावे
दुश्चरित्र ये भिक्षु, पूर्व में पाप कमावे
कह भगवन समझाय, पूर्व का पापम भोगे
प्रेत बन जल ज्वाल, पाप वे अब तक भोगे

कु॰ सं॰ ध॰ सं॰

५५९ दुराचारी असंयमी, बन जन के धन खाय ३०८
वर तब सरिस अग्नि शिखा, तप्त लोह बृत खाय
तप्त लोह वृत खाय, अर्थ रस भाव उठावे
राष्ट्र अन्न वेकार, खाय जौं कुपथ उठावे
कह भगवन समझाय, अन्न कर नष्ट कुचारी
कर सब पापम कर्म, असयमी दुराचारी

५६० भगवन वैशाली बसें, भिक्षु आय स्थान ३०८ कथा
बगुमदाती भिक्षु सभी, ऋद्धि करे संधान
ऋद्धि करे संधान, सुगत तब वचन सुनावे
निन्दा कर कह बात, सुगत तब डांट सुनावे
कह भगवन समझाय, भिक्षु ये ढोंग रचावे
नहीं ज्ञान कर प्राप्त, ऋद्धि का ज्ञान दिखावे

५६१ पर स्त्री गामी बने, अरु प्रमाद जो लाय ३०९
अपुण्यम सुख नींद नहीं, निन्दा नरकम जाय
निन्दा नरकम जाय, गतियाँ चतुरम पावे
ऐसे पापी लोग, कष्ट ये चार उठावे
कह भगवन समझाय, पाप न कभी उघाओ
फल रह तेरे हाथ, नरक से स्वयं बचाओ

५६२ अपुण्य लाभ व गति बुरी, पुरुष नार भयभीत ३१०
येहि यदि सहवास करे, सुख हो अल्पातीत
सुख हो अल्पातीत, नृप की सजा भी भारी
अत: गमन पर दार, उचित नहीं दुराचारी
कह भगवन समझाय, बनो मत स्त्री गामी
गतियाँ चार उठाय, बने जौं पर घर गामी

कुं० सं०   ध० स०

५६३ खेम अनाथः भागिना, युवक अति रूपवान ३०९-३१० कथा
उसे देख कर स्त्रियाँ, मोहित रति अरमान
मोहित रति अरमान, खेम भी चाव दिखावे
पर स्त्री में लिप्त, खेम यों समय गमावे
कह भगवन समझाय, खेम तुम यह लत त्यागो
अति घृणित यह कार्य, काम से दूरन भागो

५६४ धरे ठीक से कुश नहीं, तृणम हाथ घुस जाय ३११
त्यों जो श्रमण पन्थ गहे, बस नरकम ले जाय
बस नरकम ले जाय, अर्थ रस भाव उठावे
श्रामण्य नहीं आसान, इसे गह सही निभावे
कह भगवन समझाय, धर्म जों मनुज उठावे
सही करे सब कर्म, नहीं तो नरकम पावे

५६५ जो शिथिल यदि कर्म करे, वृत में मैल दिखाय ३१२
ब्रह्मचर्य अशुद्ध जेहि, महाफल नहीं लाय
महाफल नहीं लाय, अर्थ रस भाव उठावे
कर्म वृत ब्रह्मचर्य, सोच कर मनुज उठावे
कह भगवन समझाय, कर्म ना गौण उठाओ
उत्तम वृत ही ठान, धर्म ना हीन उघाओ

५६६ प्रवृज्या जौं कर्म धरे, करे उसे तब ठीक ३१३
दृढ़ पराक्रम से लगे, आलस ढील न ठीक
आलस ढील न ठीक, धर्म जो ढुलमुल बिखरे
श्रवण धर्म तव मान, अधिकतम मैलम ठहरे
कह भगवन समझाय, अगर नर धर्मम चाहे
दृढ़ पराक्रम लाय, धरम जौं श्रमणः चाहे

कुं० सं० ध० सं०

५६७ जेतवन में भिक्षु कभी, यों ही काटे घास ३११-३१२ कथा
सोच समझ न कर्म करे, काटे कुश सब घास
काटे कुश सब घास, भिक्षु जा सुगत सुनावे
सुन कर ऐसा कर्म, सुगत कटु वचन सुनावे
कह भगवन समझाय, कर्म ना शिथिल उगाहो
कर्म करो कुछ सोच, व्यर्थ ना कर्म उठाओ

५६८ उचित कर्म दुष्कृत नहीं, पापी कर दुख पाय ३१४
सुकृत करना श्रेष्ठ सही, जिसे न कर पछताय
जिसे न कर पछताय, अर्थ रस भाव उठावे
करे न पापम कर्म, जिसे कर कष्ट उठावे
कह भगवन समझाय, सुकृतम कर हर्षाओ
दुष्कृत सारे त्याग, शोक से स्वयं बचाओ

५६९ उपासक एक श्रावस्ती, करे दासी का भोग ३१४ कथा
स्त्री उसकी लख करे, परम नीच उद्योग
परम नीच उद्योग, बांध कर उसे छिपायी
पुनः कन्त के संग, सभा में आय जमायी
घर में पाहुन आय, देख तब दासी खोले
दासी पपिषद जाय, बात सब खुल कर बोले

५७० भगवन सुनकर बात सभी, भिखु गण को समझाय ३१४ कथा
लघु मात्र भी पाप कभी, नर सब नहीं उठाय
नर सब नहीं उठाय, पाप ना गुप्त उठावे
पर वे पुण्यम कर्म, गुप्त भी सहज कमावे
छिपा पाप दे कष्ट, पुण्य छिप हर्ष उघावे
यही सत्य ले मान, कर्म सब श्रेष्ठ उठावे

कु० स० ध० सं०

५७१ जैसे पुर सीमान्त के, रक्षित भीतर बाह्य ३१५
वैसे रक्षा खुद करो, अवसर मत चुक पाय
अवसर मत चुक पाय, अल्प ही चूक सतावे
घातक क्षण लघु चूक, नरक में जाय गिरावे
कह भगवन समझाय, स्वयं को रक्षो वैसे
खुद ही कर के स्वयं, नगर सीमान्ती जैसे

५७२ जेतवन जब भिक्षु चले, करे नमः भगवान ३१५ कथा
गाँव सीमान्त से फिरे, पूछे तब भगवान
पूछे तब भगवान, भिक्षु तब सुगत सुनावे
चोर घुसे उस गाँव, लोग तब गाँव बचावे
सुन भगवन समझाय, करो खुद वैसी रक्षा
जैसे नर कर गाँव, करो तुम अपनी रक्षा

५७३ लज्जा जहाँ ठीक नहीं, पर नर लज्जा लाय ३१६
जहाँ शर्म समुचित बने, वहाँ न लज्जा लाय
वहाँ न लज्जा लाय, झूठ यों दृष्टि उठावे
झूठ दृष्टि नर लाय, पुरुष अति कष्ट उठावे
कह भगवन समझाय, उचित थल कर सब लज्जा
शर्म जित नहीं ठीक, वहाँ मत कर कुछ लज्जा

५७४ जहाँ न भय समुचित जचे, तँह भी नर भयभीत ३१७
जहाँ भयस समुचित लखे, होय न तँह भयभीत
होय न तँह भयभीत, रखे जेहि दृष्टि मिथ्या
दुर्गत नर ये पाय, दृष्टि रख ऐसी मिथ्या
कह भगवन समझाय, उचित बुझ भयम उठाओ
जहाँ नहीं उपयुक्त, वहाँ रह अभय दिखाओ

कु० सं० धo सं०

५७५ जेतवन कुछ भिक्षु गुनें, निर्ग्रंथम कुछ श्रेष्ठ ३१६-३१७ कथा
अचेलक निर्वस्त्र रहे, निर्ग्रंथ रहे श्रेष्ठ
निर्ग्रंथ रहे श्रेष्ठ, निर्ग्रंथ सुन यह बोले
पंशु रज रखे प्राण, इसी से आगे न खोले
पंशु न वर्तन जाय, भीख वे जिसमें माँगे
ध्यान अहिंसा जोर, अचेलक इसे न आंके

५७६ लखे दोष निर्दोष में, दोषी कह निर्दोष ३१८
मिथ्या दृष्टि में फँसा जीव ले दृष्टि दोष
जीव ले दृष्टि दोष, वही नर दुर्गत पावे
ऐसा रत विश्वास, बहुत ही शोक उठावे
कह भगवन समझाय, ठीक से समझो दोषी
कहो न दोष अदोष, अदोषी कहो न दोषी

५७७ दोषी को दोषी कहे, निर्दोषी निर्दोष ३१९
जीव सत्य जौं जान ले, धरे ना दृष्टि दोष
धरे ना दृष्टि दोष, दृष्टि वह सम्यक लावे
पुरुष सुगति को पाय, ज्ञान जो समुचित लावे
कह भगवन समझाय, दोष कर दोषी बोलो
जो न करे कुछ दोष, उसे निर्दोषी बोलो

५७८ तैर्थिक शिष्य ज्ञान धरे, अपने बाल बुझाय ३१८-३१९ कथा
जेतवन मठ जाव नहीं, बालक को धमकाय
बालक को धमकाय, एक दिन वे सब आवे
प्यास लगी अति जोर, बिहारम दौड़े आवे
सुन कर भगवन धर्म, सभी तब धर्म उठावे
बुद्ध धर्म में लीन, प्रौढ़ जन फिर तँह आवे

नाग (गज) वर्ग--२३

कुंडलिया संख्या | मूल धम्मपद संख्या

५७९ जैसे हाथी युद्ध में, सहे छुटे धनु तीर ३२०
उसी तरह मैं सह चलूँ, कटु वचनों की पीर
कटु वचनों की पीर, जिसे दुःशील उचारे
दुष्टित नर दुःहशील, अधिक रह भव में सारे
कह भगवन समझाय, वचन कटु ध्यान न लाओ
सह कर कर स्वीकार, क्रोध मत उस पर लाओ

५८० हाथी जो शिक्षित रहे, लोग समर ले जाय ३२१
दान्त नाग पर ही सभी, भूपति चढ़कर जाय
भूपति चढ़ कर जाय, दान्त नर श्रेष्ठ कहावे
करे स्वयं जो दान्त, वचन कटु वह सह पावे
कह भगवन समझाय, दान्त बन जैसे हाथी
दान्त सहे कटु शब्द, तीर ज्यों शिक्षित हाथी

५८१ घोड़े सिन्धी नश्ल सही, खच्चर गजः सुदन्त ३२२
सुशिक्षित हो श्रेष्ठ बने, पूर्ण दमन कर दन्त
पूर्ण दमन कर दन्त, नरों में श्रेष्ठ कहावे
कर ले जो खुद दान्त, पुरुष अति श्रेष्ठ कहावे
कह भगवन समझाय, दान्त कर पूर्ण बनाओ
वश में कर स्व चित्त, मनुज यों श्रेष्ठ कहाओ

कु॰ सं॰ ध॰ सं॰

५८२ कौशाम्बी जब मुनि बसें, मागन्दिय कर द्वेष ३२०-३२२ कथा
बुद्ध संघ कुमान लिये, रचे ढंग छिप भेष
रचे ढंग छिप भेष, घूस दे लोग सिखावे
गाली दो बुध शिष्य, यही षड्यंत्र रचावे
श्रावक को कह चोर, बैल नर गधा बनावे
सुनकर यह आनन्द, ग्राम पग अन्य बढ़ावे

५८३ भगवन लख आनन्द तजे, आक्रोशन सुन शब्द ३२०-३२२ कथा
रोक तब भगवान कहें, मूल्य न दो कटु शब्द
मूल्य न दो कटु शब्द, दान्त नर सभी उठावे
ज्यों गज पट्ट सह तीर, धीर कटु शब्द सहावे
कह भगवन समझाय, दुष्ट तो द्वेष रचावे
धीर पुरुष सह जाय, नहीं पर भाग फिरावे

५८४ इन यानों से नर नहीं, निर्वाणम तक जाय ३२३
जो खुद चित्त दान्त करे, वही सुदान्तम जाय
वही सुदान्तम जाय, अर्थ रस भाव उठावे
गज सम सारे यान, भुवन नहीं पार लगावे
कह भगवन समझाय, यान ये चल यँह जाने
येहि भुवन के यान, भुवन के पथ पहिचाने

५८५ भिक्षु महावत गज लखे, कहे महावत देख ३२३ कथा
इस अंगम बर्छी धसा, शीघ्र असर तब देख
शीघ्र असर तब देख, नाग तब जल्दी सीखे
शीघ्रम वश में आय, बर्छी यों मारो तीखे
भिक्षु महावत पूर्व, नदी यों बोल सुनावे
जब चल जेत विहार, सुगत तब डाँट धरावे

कु० सँ० धo सं०

५८६ उग्र गज धनपाल बली, सेना दे छितराय ३२४
वह जब बंधन में पड़े, नहीं कवल भी खाय
नहीं कवल भी खाय, नाग स्व वन को सोचे
कड़ुआ रस मुख लाय, सदा वन अपना सोचे
कह भगवन समझाय, ज़कड़ पड़ सभी सिखावे
धनपालक सम नाग, बंधे जब विपिन सुझावे

५८७ श्रवस्ती का विप्र धनी, बांटे धन सब पुत्र ३२४ कथा
चार पुत्र सब धन गहे, सुख से रह सब पुत्र
सुख से रह सब पुत्र, पिता न खाद्य जुटावे
वृद्ध पिता ले पात्र, पेट हित भीख मंगावे
विप्र सुगत से बोल, सुगत तब सीख बतावे
पुत्र पकड़ में आय, पिता हित खाद्य जुटावे

५८८ भगवन पुत्र सीख धरें, गाथा पाँच सिखाय ३२४ कथा
परिषद विप्र जाय कहे, पिता रोय बिलखाय
पिता रोय बिलखाय, विप्र सब क्रोध दिखावे
पुत्र चार सब मार, विप्र सब सजा सुनावे
पुत्र क्षमा तब मांग, पिता को खाद्य जुटावे
सुगत सीख दे वृद्ध, पुत्र से खाद्य दिलावे

५८९ खादूक निद्रालु अलस, जो सो करवट लाय ३२५
अति खाय जो देह यही, सुकर भाँति बढ़ाय
सूकर भाँति बढ़ाय, मन्द वह गर्भ फिरावे
लौट लौट भव आय, जन्म भव चक्र फिरावे
कह भगवन समझाय, सुस्तही अतिशय खाये
ज्ञान धर्म लघु जोर, खाद्य ही परम सुहाये

कुं० सं० | ध० सं०

५९० कोशल नृप प्रसेन जित, धर्म सभा में आय ३२५ कथा
खाद्य अति ही पान करे, सभा बीच झपकाय
सभा बीच झपकाय, सुगत तब भूप जगावे
लाख यत्न कर भूप, नींद नहीं रोक न पावे
कह भगवन समझाय, भूप तुम भोजन भावुक
खाद्य अल्प ही श्रेष्ठ, नहीं तो कष्टम खादूक

५९१ प्रथम मेरा चित्त यही, घूम रहे मनमान ३२६
आज करूँगा वश उसे, ज्यों नाग पीलवान
ज्यों नाग पीलवान, हाथ में अंकुश धारूँ
मत्त नाग ज्यों साध, चित्त पर अंकुश धारूँ
कह भगवन समझाय, प्रण लेय चित्त दबाओ
अंकुश मार पछाड़, चित्त को दान्त बनाओ

५९२ श्रवस्ती में एक रहे, सानु नाम श्रमणेर ३२६ कथा
चन्द दिन रह धर्म गहे, पड़े काम फिर फेर
पड़े काम फिर फेर, लौट घर धर्म छुड़ावे
कुछ दिन के उपरान्त, धरम संवेग जगावे
कह भगवन समझाय, पढ़ो तुम ऐसी गाथा
मन पर कर अधिकार, रटो तुम ऐसी गाथा

५९३ अप्रमाद में रत बनो, रक्षा कर चित धार ३२७
पंक फस गज स्वयं उठे, त्यौं भव स्वयं उबार
त्यौं भव स्वयं उबार, अर्थ रस भाव उठावे
कर नर खुद उद्योग, अन्य न कोई बचावे
कह भगवन समझाय, बनो जीव अप्रमादी
वश में कर चित धार, विशुद्ध बन अप्रमादी

कु० सं० धं० सं०

५९४ कोशल नृप इक गज रखे, बद्धरेक गज नाम ३२७ कथा
सर कीचड़ में फस जभी, दिन जाय भई शाम
दिन जाय भई शाम, लोग तब धुने नगाड़े
सुन भेरी संग्राम, नाग तब पंक पछाड़े
कहृ भगवन समझाय, नाग सम स्वयं उबारो
कुछ ना अन्य उपाय, भुवन से स्वयं उबारो

५९५ विचरण क्षण संगी मिले, मित्र सुधी अनुकूल ३२८
जागृत व प्रसन्न फिरो, सभी विघ्न को भूल
सभी विघ्न को भूल, अर्थ रस भाव उठावे
मित्र गहो नर विज्ञ, चित्त पर आंच न आवे
कह भगवन समझाय, मित्र यों मिलना दुष्कर
सुधी मित्र मिल जाय, गहो तब मनकर सुखकर

५९६ विचरण में सगी मिले, सुधी न मित अनुकूल ३२९
तब भूप की भाँति करो, राष्ट्र पराजित भूल
राष्ट्र पराजित भूल, हस्ति सम घूम अकेले
हस्ति राज सम मस्त, पुरुष तुम घूम अकेले
कह भगवन समझाय, अगर ना मित वर पाओ
घूमो तब एकान्त, हस्ति सम चित्त बनाओ

५९७ मैत्री शठ समुचित नहीं, वास उचित एकान्त ३३०
कभी पाप भी मत करे, विचरण कर एकान्त
विचरण कर एकान्त, घूमें ज्यों हस्ति राजा
वैसे करो विहार, अनुत्सुक मतंग राजा
कह भगवन समझाय, मूर्ख मत मित्र बनाओ
पाप कभी मत लाय, विहर एकान्त फिराओ

कुं० सं० ध० सं०

५९८ एक समय भगवान मुनि, वन में करें विहार ३२८-३३० कथा
अकेले विहार करें, नहीं ध्यान आहार
नहीं ध्यान आहार, भिक्षु तब उनसे पूछे
बहुत कष्ट लें आप, कहें कुछ अनुभव ऊँचे
कह भगवन समझाय, मिले जब मित्र न उत्तम
विचरण कर एकान्त, बने तब सुखकर उत्तम

५९९ सुखकर होय मित्र तभी, काम समय मिल जाय ३३१
जेहि मिल संतोष गहे, वही सुक्ख कहलाय
वही सुक्ख कहलाय, और भी सुक्ख कहावे
मरण बाद जो पुण्य, पुन: सच सुक्ख कहावे
कह भगवन समझाय, पूर्ण वह सुक्ख कहावे
सभी शोक जब नष्ट, परम वह सुक्ख जनावे

६०० सुखकर माता पितृ की, सेवा यह संसार ३३२-३३३
श्रमण भाव को सुख कहे, सुखकर विप्र विचार
सुखकर विप्र विचार, वृद्ध तक शीलम सुखकर
स्थिर श्रद्धा सुक्ख, ज्ञान का लाभम सुखकर
कह भगवन समझाय, पाप ना करना सुखकर
सुख नाम यही सात, कर्म कर ऐसे सुखकर

६०१ एक समय सुगत सुनें, मार धरे उपदेश ३३१-३३३ कथा
आप सुगत राजा बनें, गहें भोग उपदेश
गहें भोग उपदेश, जांन यह भगवन झिगड़े
मार न दो उपदेश, मार को कटु कह रगड़े
कह भगवन तब मार, अन्य सब तेरा सुखकर
सुख अपना रख पास, अन्य बुझ मेरा सुखकर

तृष्णा वर्ग—२४

कुंडलिया संख्या | मूल धम्मपद संख्या

६०२ जो प्रमत बन कर्म करे, तृष्णा अति बढ़ जाय ३३४
बढ़े तृषा ज्यों मालुवा, नर को ढक लिपटाय
नर को ढक लिपटाय, मनुज फिर कपि सम कूदे
विपिन कुसुम हिय चाह, कपि: ज्यों उछले कूदे
जन्म जन्म बहु काल, मनुज पल भटक फिरावे
ज्यों कपि जंगल घूम, फूल हित भटक बितावे

६०३ विष सम तृषा नीच फसा, कर अधीन नर लाय ३३५
बढ़े शोक वर्षा घिरी, वीरण तृण ज्यों धाय
वीरण तृण ज्यों धाय, तृषित को लोभ सतावे
वीरण वर्षा काल, वृद्धि ज्यों अधिक उठावे
कह भगवन समझाय, समझ नर ऐसी तृष्णा
ज्यों लिप्सा वश आय, शोक में डाले तृष्णा

६०४ दुस्त्याज्य तुछ लोभ हरा, भव में जो जय पाय ३३६
उसके शोकम गिर पड़े, ज्यों जल कमल गिराय
ज्यों जल कमल गिराय, अर्थ रस भाव उठावे
तृष्णा को जौं जीत, शोक तब टिक ना पावे
कह भगवन समझाय, तृषा को जीत हराओ
तभी शोक से मुक्त, हर्ष ले काल बिताओ

कु० सं० 　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　ध० सं०

६०५ जैसे नर खस के लिए, खोदे मूल उशीर ३३७
वैसे तुम भी खोद लो, तृष्णा जड़ गंभीर
तृष्णा जड़ गंभीर, नहीं तो मार बहावे
जैसे भीषण बाढ़, नरकट तोड़े गिरावे
जो भी नर एकत्र, सुनो मैं कहता तुमसे
शुभ तुम्हारा सोच, तजो तृष्णा हो जैसे

६०६ जेतवन भगवान वसें, राजा भेजे मीन ३३४-३३७ कथा
सुवर्णम सब देह बनी, दुर्गंधि देय मीन
दुर्गंधि देय मीन, लोग लख अचरज लावे
भूप श्रवस्ती जाल, मच्छ तब सुगत पठावे
तब भगवन बतलाय, भूप जब कारण पूछे
क्यों तन बना सुवर्ण, गंध पर मुख से छूटे

६०७ काश्यप मुनि के काल में, कपिल नाम इक थेर ३३४-३३७ कथा
यही पापी भिक्षु धरे, काश्यप राज्य बिखेर
काश्यप राज्य बिखेर, जन्म फिर मीन उघावे
स्वर्ण वर्ण ले मच्छ, मुंह से गंध उठावे
बुद्ध वचन कर पाठ, वर्ण यह स्वर्णिम पावे
निन्दा कर भिखु लोग, मुंह से गंध उठावे

६०८ जैसे तरु की जड़ गड़ी, पूर्ण नहीं मिट जाय ३३८
तरुवर वही कटा हुआ, पुनः खूब बढ़ जाय
पुनः खूब बढ़ जाय, लोभ यों अनुशय जागे
जौं न पूर्ण मिट जाय, पुनः झट उग कर आवे
कह भगवन समझाय, चक्र यह फ़िर दुख आवे
बार बार फिर आय, शोक दे मनुज सतावे

कु० सं०   ध० सं०

६०९ जिसके स्त्रोत छतीसो, भुवन वस्तु प्रिय भाय ३३९
राग पूर्ण संकल्प तिहि, दुर्दिश ओर बहाय
दुर्दिश ओर बहाय, अर्थ रस भाव उठावे
राग पूर्ण संकल्प, मनुज को झट बहकावे
कह भगवन समझाय, जिसे भव वस्तुम भावे
तृषा पूर्ण संकल्प, लेय वह शोक उघावे

६१० सभी दिश ये स्रोत वहे, लता फूट उग आय ३४०
लता उगी वह देख लो, बुधि से जड़ कटपाय
बुधि से जड़ कट पाय, अर्थ रस भाव उठावे
उगी लता को देख, मूल से उसे कटावे
कह भगवन समझाय, चित मत वस्तु लगाओ
भुवन वस्तु का मोह, ज्ञान ले काट गिराओ

६११ तृष्णा धाराएँ सभी, मन हर प्रियस सुहाय ३४१
नर सुख हित इन नद गिरे, जन्म जरा चक्राय
जन्म जरा चक्राय, अर्थ रस भाव उठावे
गिर तृष्णा की धार, मनुज भव चक्र फिरावे
कह भगवन समझाय, जरा जौं जन्म बचाओ
गिरो न तृष्णा धार, भुवन सुख सोच भुलाओ

६१२ तृष्णा के पीछे अगर, चक्कर काटे लोग ३४२
ज्यों बँधे खरगोश घुमे, चक्कर का ले भोग
चक्कर का ले भोग, नर जेहि बंधन फँसते
पुनः पुनः चिर काल, दुख ही दुख को गहते
कह भगवन समझाय, जीव जो लावे तृष्णा
फिरे सरिस खरगोश, कष्ट दे अतिशय तृष्णा

कुं० सं॰ ध० सं०

६१३ तृष्णा के पीछे जेहि, प्राणी अति पड़ जाय ३४३
ज्यों खरगोश बँधा हुआ, चक्कर खूब लगाय
चक्कर खूब लगाय, भिखु वैराग्य जो चाहे
तृष्णा करे विनाश, राग सब लोभम डाहे
कह भगवन समझाय, भिक्षु तुम त्यागो तृष्णा
तभी वैराग्य प्राप्त, जान यह मिट दो तृष्णा

६१४ राजगीर विहार समय, भगवन कह आनन्द ३३८-३४३ कथा
बच्ची लख यह सूकरी, जन्मी जब ककुसन्ध
जन्मी जब ककुसन्ध, जन्म यह कई उघायी
जन्म चक्र ले आय, वही यह जन्म जुटायी
कह भगवन समझाय, जन्म सब तृष्णा धारे
तथ्य जान यह सोच, सुधी यह तृष्णा बारे

६१५ जिसके भव बंधन छुटे, विपिन वास करपाय ३४४
यद्यपि घर तृष्णा तजे, तृष्णा भव फिर आय
तृष्णा भव फिर आय, पुरुष वह सरिस बुझावे
बंध मुक्त वह जीव, बंध में दौड़े आवे
कह भगवन समझाय, भुवन तज तप हित आवे
फिर जौं वन भव आय, पुनः खुद जाल फसावे

६१६ काश्यप थेर शिष्य परम, चार ध्यान गह पाय ३४४ कथा
सुन्दर युवती देख वही, काम लोभ चित लाय
काम लोभ चित लाय, कर्म वह हीन उठावे
दंड मरण जब पाय, सुमर बुध जान बचावे
कह भगवन समझाय, पुरुष जौं घर भव त्यागे
अगर पुनः पलटाय, स्वयं भव जाल घिरावे

कु० सं० ध० सं०

६१७ लोहे लकड़ी रस्सियाँ, बंधन सुघी न मान ३४५
दृढ़ बंधन मणि कुण्डली, तृषा दार सुत जान
तृषा दार सुत जान, अर्थ रस भाव उठावे
लौह काठ लघु बंध, असल तो राग कहावे
कहु भगवन समझाय, कड़ा ना बधन लोहे
इच्छा बधन सक्त, मनुज को कस कर मोहे

६१८ धीर पुरुष इनको कहे, असली बंधन सूत्र ३४६
मणि में जो इच्छा रखे, कुण्डल स्त्री पुत्र
कुण्डल स्त्री पुत्र, धीर अपहारक कहते
शिथिल तथा दुस्त्याज्य, धीर बंध नामम धरते
रहित अपेक्षा धीर, काम के भोग हटावे
बध राग भव त्याग, धीर यों दीक्षा पावे

६१९ श्रवस्ती में चोर लखे, कहे भिक्षु भगवान ३४५-३४६ कथा
बंधन घर में वे बँधे, बंधन अति बलवान
बंधन अति बलवान, सुगत तब भिक्षु सुनावे
ये न बध बलवान, राग ज्यों सक्त कसावे
कह भगवन समझाय, राग भव बंधन मानो
लौह काठ लघु बंध, जकड़ भव दुष्कर जानो

६२० राग में जो लिप्त फसे, स्वयं धार पड़ जाय ३४७
ज्यों मकड़ी जाली बना, स्वयं पकड़ फस जाय
स्वयं पकड़ फस जाय, धीर यह छेदे धारा
सकल शोक को त्याग, लोभ भव छोड़े सारा
कह भगवन समझाय, धीर तन मुक्त फिरावे
बन आकांक्षा हीन, भुवन संबंध छुड़ावे

कुं० सं० ध० सं०

६२१ बिम्बीसार की महिषी, खेमा नाम धराय ३४७ कथा
अति सुन्दरी होय वही, अहं बहुत उपजाय
अहं बहुत उपजाय, एक दिन सभा पधारी
रूप अन्य तँह देख, छटा लख मग्न निहारी
रूपवती उपजाय, सुगत तब खेमा बोधे
रूप नहीं कुछ सार, देह कह नश्वर बोधे

६२२ आगे बिता बीच यही, भविष भूत यह भाग ३४८
काल इन स्कन्ध सभी, कर दो तुम परित्याग
कर दो तुम परित्याग, भुवन के पारम आओ
कर लो चित्त विमुक्त, जरा औ जन्म छुड़ाओ
कह भगवन समझाय, स्कन्ध जिसके भागे
भूत भविष्य तत्काल, जरा न जन्मम आगे

६२३ राजगीर सुत सेठ धरे, चारु नाम उगसेन ३४८ कथा
नटिन ले वह ब्याह करे, खेल रुचे उगसेन
खेल रुचे उगसेन, नगर जब गिरि ब्रज आवे
मिल कर तब उगसेन, सुगत यह वचन सुनावे
कह भगवन समझाय, खेल मत काल बिताओ
गहो धर्म गुरु ध्यान, काल न व्यर्थ बिताओ

६२४ प्राणी शंका से मथित, तीव्र राग से युक्त ३४९
दर्शक शुभ ही शुभ के, बने तृषा बहु युक्त
बने तृषा बहु युक्त, पुरुष यों लोभ बढ़ावे
बंधन गढ़ के स्वयं, दृढ़ वही और बनावे
कह भगवन समझाय, राग जो शंका लावे
शुभ ही शुभ को देख, तृषा को खूब बढ़ावे

६२५ रत जो शंका शांति में, रह ले नित्य सचेत ३५०
करे अशुभ की भावना, वंध मार वह छेद
बंध मार वह छेद, वही तृष्णा को नाशे
राग नहीं तव आय, लोभ को पूर्ण विनाशे
कह भगवन समझाय, विनाशे तृष्णा प्राणी
. शंका कर जो शांत, सजग बन रह सज्ञानी

६२६ भिक्षु जेत विहार रहे, नारी तृष्णा लाय ३४९-३५० कथा
तरुण भिक्षु को काम से, स्त्री झट फुसलाय
स्त्री झट फुसलाय, भिक्षु पर सुगत सुनावे
तरुण भिक्षु अब स्वयं, बदन से पीत गिरावे
कह भगवन समझाय, विनाशे तृष्णा प्राणी
काम रोग जब आय, विनाशे सब कुछ प्राणी

६२७ जिसने अर्हत पा लिया, बने राग भय हीन ३५१
निर्भय बन तृष्णा रहित, करे शूल भव छिन्न
करे शूल भव छिन्न, देह यह अन्तिम धारे
फिरे न भव वह लौट, पीर यह अन्तिम धारे
कह भगवन समझाय, तादि तन अन्तिम पावे
इसी जन्म कर अन्त, शोक भय पूर्ण छुड़ावे

६२८ तृषा से जो हीन बने, तथा परिग्रह हीन ३५२
निरुक्ति के ज्ञानी बने, सम्पत चतुर प्रवीण
सम्पत चतुर प्रवीण, पुनः जो अक्षर जाने
कौन प्रथम को बाद, सजाना अक्षर जाने
कह भगवन समझाय, महा वह प्रज्ञा जानो
वह अन्तिम तन धार, श्रेष्ठ वह ज्ञानम मानो

कुं० सँ०

६२९ गंधकुटी के सामने, राहुल नींदस लाय ३५२ कथा
मार पहुँच गर्जन करे, राहुल को डरवाय
राहुल को डरवाय, सुगत तब मार सुनावे
ले जो अर्हत ज्ञान, उसे मत मार डिगावे
कह भगवन सुन मार, व्यर्थ तुम यत्नस लाओ
अर्हत अविचल प्राण, उसे ना कभी डिगाओ

६३० सभी हरा मैंने दिया, लिया ज्ञान सब जान ३५३
सभी धर्म निलिप्त हूँ, मैं त्यागी सर्वान
मैं त्यागी सर्वान, मुक्त हूँ तृष्णा तज कर
विमल ज्ञान खुद जान, शुद्ध हूँ खुद ही गुन कर
कह भगवन समझाय, गुरुः मैं किसे बताऊँ
बुद्ध ज्ञान स्व ज्ञान, नाम गुरु किसे धराऊँ

६३१ बोधि तरु जब ज्ञान मिले, भगवन काशी जाय ३५३ कथा
उपक अजीवक पथ मिले, भगवन लख हर्षाय
भगवन लख हर्षाय, फिर कई प्रश्न सुनावे
कौन गुरु केहि धर्म, सुगत को प्रश्न धरावे
कह भगवन समझाय, कोई न शिक्षक मेरा
स्वयं प्राप्त यह ज्ञान, कोई न शास्ता मेरा

६३२ धर्म दान वर दान बुझें, सब रस में रस धर्म २५४
सब रतियों में वर कहें, परम श्रेष्ठ रति धर्म
परम श्रेष्ठ रति धर्म, लोभ जो नाश मिटावे
सब दुख को तब जीत, अशोक वन मुक्त फिरावे
कह भगवन समझाय, मनुज जो तृष्णा जीते
सभी शोक ले जीत, पूर्ण जब लिप्सा जीते

कु० सं० ध० सं०

६३३ श्रवस्ती आ शक्र करे, भगवन से कुछ प्रश्न ३५४ कथा
रस रति जीत दान भुवन, श्रेष्ठ कौन कर प्रश्न
श्रेष्ठ कौन कर प्रश्न, सुगत तब शक्र बुझावे
धर्म दान रस धर्म, श्रेष्ठ रति धर्म बुझावे
नाश तृषा नर जीत, सुगत यह शक्र सुनावे
शोक सभी मिट जाय, लोभ जो पुरुष हरावे

६३४ कोशिश भव के पार में, जो न करे नर मूढ़ ३५५
भोग क्षय कर पाय उसे, जो ऐसे बन मूढ़
जो ऐसे बन मूढ़, बने जो तृष्णा भोगी
कर वह खुद नर ध्वस्त, समझ मन पर क्षय भोगी
कह भगवन समझाय, मूढ़ खुद कष्ट उठावे
भोग राग में लिप्त, ज्ञान ना स्वयं जगावे

६३५ अपुत्रक जब सेठ मरे, नृप प्रसेन गह द्रव्य ३५५ कथा
महा धनी सेठी रहे, किये खर्च ना द्रव्य
किये खर्च ना द्रव्य, भूप जा सुगत सुनावे
सेठ वही मर जाय, जो न कुछ दान करावे
कह भगवन समझाय, अपुत्रक पुत्र न पाया
नहीं दान कर पुण्य, व्यर्थ वह जन्म गमाया

६३६ खेत दोष तो कुश कहें, मनुज दोष कह राग ३५६
महाफल दे दान उसे, पुरुष रहित जो राग
पुरुष रहित जो राग, भाव रस अर्थ उठावे
प्राणी हितकर श्रेष्ठ, मनुज जब राग मिटावे
कह भगवन समझाय, महाफल वह नर पावे
राग रहित को दान, दान का फल गुरु पावे

कृ० सं० ध० सं०

६३७ खेत दोष तो तृण कहें, मनुज द्वेष कह द्वेष ३५७
महाफ़ल दे दान उसे, पुरुष रहित जो द्वेष
पुरुष रहित जो द्वेष, अर्थ रस भाव उठावे
दान ढंग भी ढंग, सभी नर समझ न पावे
कह भगवन समझाय, महाफल वह नर पावे
द्वेष रहित को दान, दान का फल गुरु पावे

६३८ खेत दोष तो तृण कहें, मनुज दोष कह मोह ३५८
महाफल दे दान उसे, मनुज रहित जो मोह
मनुज रहित जो मोह, अर्थ रस भाव उठावे
दानी बने पवित्र, सही नर दान करावे
कह भगवन समझाय, महाफल वह नर पावे
मोह रहित को दान, दान वह दान कहावे

६३९ खेत दोष तो कुश कहें, दोष मनुज यह चाह ३५९
महाफल दे दान उसे, मनुज रहित जो चाह
मनुज रहित जो चाह, अर्थ रस भाव उठावे
इच्छा घर दुष्कर्म, कष्ट का महल उठावे
कह भगवन समझाय, महाफल वह नर पावे
लोभ रहित को दान, दान वह दान कहावे

६४० इन्दक अंकुर की कथा, दोनों नर कर दान ३५६-३५९ कथा
इन्दक श्रेष्ठ दान करे, अंकुर का घट दान
अंकुर का घट दान, सुगत सुन वचन सुनावे
श्रेष्ठ पुरुष को दान, दान तब श्रेष्ठ कहावे
कह भगवन समझाय, दान कह बीजः खेती
बीज नहीं उग पाय, अगर वर खेत न खेती

भिक्षु वर्ग—२५

कुंडलिया संख्या | मूल धम्मपद संख्या

६४१ संयम आँखों का भला, उत्तम संयम कान ३६०-३६१
संयम जिह्वा हो भला, उत्तम संयम घ्राण
उत्तम संयम घ्राण, काम का संयम अच्छा
वाणी संयम श्रेष्ठ, चित्त का संयम अच्छा
संयम सभी इन्द्रिय, युक्त जो भिक्षु जुटावे
संयम रख सर्वत्र, शोक से मुक्त फिरावे

६४२ जेतवन में पाँच अलग, छेड़ें भिक्षु विवाद ३६०-३६१ कथा
पंचेन्द्रिय में गुरु कहे, अमुक कठिन प्रतिवाद
अमुक कठिन प्रतिवाद, पुनः वे सुगत सुनावे
भगवन तब भिखु बोध, अर्थ औ तथ्य बतावे
कह भगवन समझाय, सँवर हो सब का गुरुतम
लघु दीर्घ नहीं जान, दमन हो सबका उत्तम

६४३ जिसके हाथ पैर वचन, संयम से हो युक्त ३६२
उत्तम बन जो संयमी, घट भीतर रत युक्त
घट भीतर रत युक्त, समाधिम ध्यानम लावे
अलग रहे संतुष्ट, वही तो भिक्षु कहावे
कह भगवन समझाय, अध्यात्म चित्त लगावे
घट भीतर रह ढूँढ़, भिक्षु वह शुद्ध कहावे

कु॰ सं॰ धं॰ सं॰

६४४ जेतवन के भिक्षु तरुण, मार गिरावे हंस ३६२ कथा
पत्थर फेंके आँख में, आँख फूट गिर हंस
आँख फूट गिर हंस, भिक्षु कुछ सुगत सुनावे
सुगत उसे बुलवाय, कठिन कटु शब्द सुनावे
कह भगवन समझाय, जीव मत मार गिराओ
भिक्षु जनित बहु पाप, जीव मत प्राण उठाओ

६४५ संयम जो मुख में रखे, चिंतन कर कुछ बोल ३६३
उद्धत जो होये नहीं, अर्थ धर्म जो खोल
अर्थ धर्म जो खोल, मधुर वह वाक कहावे
ऐसे जो नर बोल, कान को श्रेष्ठ सुहावे
कह भगवन समझाय, वाक पर संयम लाओ
सोच समझ कर बोल, वाक फल मधुर उठाओ

६४६ जेतवन की कथा सुनें, कोकालिक इक थेर ३६३ कथा
मुख पर ना संयम रखे, आक्रोशन कर ढेर
आक्रोशन कर ढेर, कभी अग श्रावक डांटे
कभी किसी पर क्रोध, बिगड़ कर सब को डांटे
कह भगवन समझाय, मुख जेहि संयम लावे
सोच समझ जो बोल, मधुर तब वाक कहावे

६४७ धर्म में जो रमण करे, अनुरक्ति रखे धर्म ३६४
धर्मम का चिंतन करे, अनुसरण करे धर्म
अनुसरण करे धर्म, भिक्षु वह क्यों भरमावे
सद्धर्म से नहीं च्युत, चित्त वह धर्म लगावे
कह भगवन समझाय, धर्म का अवसर पाओ
हर संभव उद्योग, उठाकर धर्म उघाओ

कुं० सं॰ ध० सं०

६४८ परि निर्वाणम पूर्व ही, सुगत करावे ज्ञान ३६४ कथा
चार मास उपरान्त ही, छोड़ूँगा मैं प्राण
छोड़ूँगा मैं प्राण, सुन धम्मराम विचारे
इसी काल लूँ धर्म, सोच एकान्त विहारे
नहीं किसी से बोल, धर्म में चित्त लगावे
सुन भगवन यह तथ्य, उचित तब बात बतावे

६४९ टालो स्वय लाभ नहीं, चाहो मत पर लाभ ३६५
वह न भिक्षु समाधि गहे, जो चाहे पर लाभ
जो चाहे पर लाभ, अर्थ रस भाव उठावे
अपने हित दे ध्यान, प्रथम खुद स्वयं उठावे
कह भगवन समझाय, करो मत स्वयं उपेक्षा
अपना हित तुम सोच, करो मत लाभ उपेक्षा

६५० चाहे लाभ अल्प सही, भिखु मत उसको छोड़ ३६६
शुद्ध गहे जो जीविका, दे आलस जो छोड़
दे आलस जो छोड़, देव वह भिक्षु प्रशसे
गुण जो ये सब रख, देव सब भिक्षु प्रशंसे
कह भगवन समझाय, जीविका शुद्ध जुटाओ
आलस सारे त्याग, लाभ स्व स्वयं जुटाओ

६५१ तरुण भिक्षु भोजन गहे, देवदत्त घर आय ३६५-३६६ कथा
देवदत्त आदर करे, पुनः भिक्षु फिर आय
पुनः भिक्षु फिर आय, वेणुवन वास विहारे
भगवन सुन यह बात, भिक्षु से वचन उचारे
कह भगवन समझाय, विरोध की करो न सेवा
धरो लाभ न विपक्ष, सदा कर अपनी सेवा

६५५ ममता जो रक्खे नहीं, नाम रूप स्कन्ध ३६७
श्रौर न मन में दुख रखे, अगर न रह स्कन्ध
अगर न रह स्कन्ध, वही सच भिक्षु कहावे
नाम रूप सब त्याग, भिक्षु ना शोक उठावे
कह भगवन समझाय, स्कन्ध पूर्ण मिटाओ
नाम रूप सब त्याग, तभी तुम शोक हटाओ

६५३ विप्र पंचग्ग श्रावथी, करे प्रश्न भगवान ३६७ कथा
भिक्षु कहे बुध धर्म सें, भिक्षु कौन भगवान
भिक्षु कौन भगवान, पंचग्ग आतुर पूछे
भगवन कह पंचग्ग, भिक्षु तो प्राणी ऊँचे
कह भगवन समझाय, भिक्षु भव त्याग हटावे
नाम रूप सब त्याग, भिक्षु तब भिक्षु कहावे

६५४ मित्र बन जो भिक्षु फिरे, खुश रह शासन बुद्ध ३६८
संस्कार वह शमन करे, पावे सुखपद शुद्ध
पावे सुखपद शुद्ध, अर्थ रस भाव उठावे
हर पल चल हर ठाम, मित्र बन भिक्षु फिरावे
कह भगवन समझाय, भिक्षु पद सुखमय पावे
संस्कार कर शान्त, शोक सब शान्त करावे

६५५ भिक्षु उलीचो नाव यह, हलकी बन गति आय ३६९
राग द्वेष सब छिन्न कर, फिर निर्वाणम पाय
फिर निर्वाणम पाय, अर्थ रस भाव उठावे
नौका मनुज शरीर, दुषित जल भाव कहावे
जब तक मन में राग, सुगति का मिले न मौका
मुक्तिम तब हो प्राप्त, उलीचो भिखु जब नौका

कु० सं० ध० सं०

६५६ काटे सब संयोजना, अवर भागीय पाँच ३७०
छोड़े सब संयोजना, ऊर्ध्वभागीय पाँच
ऊर्ध्वभागीय पाँच, भावना इन्द्रिय पांचो
उनके लिए प्रहाण, संगति छोड़े पांचो
अति क्रमण कर पाय, वही तब भिक्षु कहावे
ओधम चारो पार, वही सच भिक्षु कहावे

६५७ सत्य काम व विचिकित्सा, परामर्श व्रत शील ३७० विशेष
काम राग व्यापाद कहें, अवर भागीय कील
अवर भागीय कील, रुप राग अरूप रागा
औद्धत्य तथा मान, अविद्या ऊर्ध्व भागा
संयोजन ये पूर्ण, यही बंधन कहलावे
इनको ज़ो दे काट, वही भिक्षुम कहलावे

६५८ श्रद्धावीर्य औ स्मृति, प्रज्ञा समाधि पांच ३७० विशेष
इन इंद्रिय की भावना, संयोजन हित पांच
संयोजन हित पांच, पांच संसर्ग त्यागे
राग द्वेष और मोह, मान झूठ दृष्टि त्यागे
ओघम होवे चार, काम भव दीठि अविद्या
पार करे ये ओघ, भिक्षु हित पूर्णम विद्या

६५९ भिक्षु ध्यानम मग्न रहो, गहो न तुम प्रमाद ३७१
भोग चक्र न चित्त पड़े, प्रमत्त न गह प्रमाद
प्रमत्त न गह प्रमाद, न निगलो गोले लोहे
फिर मत रोओ दग्ध, शोक न तब फिर ढोहे
कह भगवन समझाय, बनो मत कभी प्रमादी
भोगम कर मत लिप्त, बनो मत दुख का भागी

६६० प्रज्ञा हीन मनुष्य को, ध्यान नहीं उपलब्ध ३७२
ध्यान नहीं जो नर करे, ज्ञान नहीं उपलब्ध
ज्ञान नहीं उपलब्ध, पुरुष जो दोनों रख ले
ध्यान और प्रज्ञान, वही निर्वाणम गह ले
कह भगवन समझाय, ध्यान औ ज्ञानम संज्ञा
भिन्न तत्व मिल एक, विफल हर ध्यानम प्रज्ञा

६६१ शून्य धाम प्रवेश करे, परम शान्ति ले चित्त ३७३
सम्यक धर्म विपश्यना, भिक्षु: गह जो चित्त
भिक्षु: गह जो चित्त, वही आनन्द उघावे
रति अमानुषी भोग, भोग लोकोत्तर पावे
कह भगवन समझाय, नर जो ध्यान प्रत्यासी
असीम सुख वह पाय, ज्ञान ले ध्यान निवासी

६६२ ज्यों ज्यों भिखु स्कन्ध का, उग मिट करे विचार ३७४
ज्ञानी की प्रीतिरूपी, खुशी सुधा आहार
खुशी सुधा आहार, अर्थ रस भाव उठावे
जन्म नाश स्कन्ध, जान भिखु अमृत पावे
कहु भगवन समझाय, स्कन्धम पँच ऐसे
जौं इनको सब जान, मिले निर्वाणम जैसे

६६३ भिक्षु प्रज्ञावान करे, सर्व प्रथम इस धर्म ३७५
इन्द्रिय को वश में करे, इन्द्रिय संयम कर्म
इन्द्रिय सयम कर्म, तुष्टि प्रति मोक्ष रक्षा
शुद्ध जीविका लाभ, निरालस मित्रम अच्छा
कह भगवन समझाय, इन्द्रिय में संयम लाओ
प्रातिमोक्ष विधि ध्यान, उचित गह भिक्षु कहाओ

६६४ सेवा औ सत्कार का, स्वभावम जो लाय ३७६
निपुण होय आचार में, शोक अन्त सुख आय
शोक अन्त सुख आय, अर्थ रस भाव उठावे
मित्र भाव रख जीव, बहुत आनन्द उठावे
कह भगवन समझाय, नरों की कर लो सेवा
सब का कर सत्कार, हर्ष का गह लो मेवा

६६५ माता कूटिकण्ण सुने, श्रावस्ती में धर्म ३६८-३७६ कथा
घर में इधर चोर घुसे, धाय कहे जा मर्म
धाय कहे जा धर्म, दार पर सभा न त्यागी
लेने दो सब चोर, बोल वह सभा न त्यागी
जान चोर सरदार, वस्तु सब द्रव्यम त्यागे
पुनः चोर सरदार, चोर सह धर्म उठावे

६६६ जैसे जूही की लता, कुम्हले कुसुम गिराय ३७७
भिक्षु: को त्यों चाहिए, राग द्वेष बिलगाय
राग द्वेष बिलगाय, अर्थ रस भाव उठावे
गहे न मन में मोह, राग को शीघ्र हटावे
कह भगवन समझाय, यही मन ध्यान उघाओ
राग द्वेष सब त्याग, अमत तब भोग उठाओ

६६७ जेतवन में भिक्षु कई, गह ले कर्म स्थान ३७७ कथा
प्रातः वे जूही लखे, मन में उठ तब ज्ञान
मन में उठ तब ज्ञान, भिक्षु तब देखे जूही
कुसुम फूल गदराय, भिक्षु मन प्रेरे जूही
मन में भिक्षु: सोच, राग हम त्याग रहेंगे
मुरझ फूल गिर पूर्व, द्वेष सब त्याग रहेंगे

कु० सं० ध० सं०

६६८ जिसकी देह शान्त बनी, वाणी जिसकी शान्त ३७८
चित्त शान्त समाधि लिये, भिक्षु वही उपशान्त
भिक्षु वही उपशान्त, भोग जो त्याग गिरावे
लौकिक सारे भोग, पूर्ण कर जेहि भगावे
कह भगवन समझाय. शान्ति गुण सब में लाओ
वाणी तन औ चित, सबों में शान्ति उघाओ

६६९ जेतवन में एक रहे, शान्तकाय सुधु थेर ३७८ कथा
हर अंग में शान्ति लिये, ऐसे स्थिर थेर
ऐसे स्थिर थेर, हाथ ना पैर हिलावे
उत्सुकता मन लाय, भिक्षु सब सुगत सुनावे
कह भगवन समझाय, करो सब थेर: जैसे
पूर्ण रूप बन शान्त, भिक्षु बन सचमुच जैसे

६७ अपने खुद प्रेरित करो, करो आप संलग्न ३७९
आत्म मुक्त स्मृति लिये, बिहरो भिखु तब मग्न
बिहरो भिखु तब मग्न, अर्थ रस भाव उठावे
भिखु कर हर्ष विहार, स्वयं जेहि श्रम उठावे
कह भगवन समझाय, स्वयं जो आप लगावे
गहे ज्ञान कर यत्न, हर्ष ले विहर फिरावे

६७१ अपना स्वामी खुद बने, गति भी बन खुद आप ३८०
अत: स्वयं बन संयमी, वणिक अश्व सिख आप
वणिक अश्व सिख आप, अर्थ रस भाव उठावे
संयत कर वह अश्व, अन्य ना अश्व सिखावे
कह भगवन समझाय, मनुज सब अपना स्वामी
अपनी गति वह आप, अन्य ना नर का स्वामी

कु० सं० धo सo

६७२ श्रावस्ती किसान बसे, खेत जोत भर पेट ३७९-३८० कथा
नित्य खेत को जोत वही, दीन दुखी भर पेट
दीन दुखी भर पेट, तभी वह दीक्षा पावे
अपना नंगल बांद, वृक्ष पर बांध टंगावे
कुछ दिन तक वह जीव, धर्म का पाठ धरावे
भिक्षु: बन धर पीत, भटक कर दान उघावे

६७३ चन्द दिन के बाद वही, दे न ध्यान मन धर्म ३७९-३८० कथा
धर्म कर्म में चित्त नहीं, बहुरे वह हल कर्म
बहुरे वह हल कर्म, वृक्ष तक लौट फिरावे
चाहे जोतूँ खेत, किन्तु मन धर्म उठावे
बार बार तरु जाय, बार बहु लौट फिरावे
अन्तिम सच संवेग, पुनः ना कभी फिरावे

६७४ भिक्षु जेहि प्रमोद गहे, खुश रह शासन बुद्ध ३८१
वही भाव उपशान्त करे, वही गहे सुख शुद्ध
वही गहे सुख शुद्ध, अर्थ रस भाव उठावे
सुखमय जो पद शान्त, भिक्षु तब वही कमावे
कह भगवन समझाय, मार्ग यह श्रेष्ठ जनावे
धर्म बुद्ध रह हर्ष, वही पद शान्त उघावे

६७५ श्रवस्ती इक विप्र रहे, वक्कलि नामक विज्ञ ३८१ कथा
बुद्ध तन वह देख रमे, दीक्षा गह ले विज्ञ
दीक्षा गह ले विज्ञ, सदा भगवान निहारे
जहाँ कहीं भी बुद्ध, भिक्षु यह सुगत निहारे
जान सुगत यह बात, नहीं कुछ उससे बोले
जभी गहे वह ज्ञान, मर्म वह खुद तब खोले

६७६ वक्कलि ना आदत तजे, लखे सदा भगवान ३८१ कथा
जहाँ कहीं भगवान रहें, वक्कलि दे तन ध्यान
वक्कलि दे तन ध्यान, सुगत तब डांट सुनावे
सदा न तन तुम देख, थेर को डाँट भगावे
कह भगवन समझाय, धर्म सम मूल्य उघाओ
नश्वर बुद्ध शरीर, धर्म में चित्त लगाओ

६७७ दहर भिक्षु जों आ कभी, शासन बुद्ध समाय ३८२
मेघ हीन नभ शशि सरिस, दीपित भुवन कराय
दीपित भुवन कराय, अर्थ रस भाव उठावे
दहर भिक्षु धम आय, लोक में ज्योति बढ़ावे
कह भगवन समझाय, दहर पद शीघ्र उठावे
शुद्ध चित्त रख स्वच्छ, धर्म को उच्च बनावे

६७८ पूर्वाराम विहार में, सुमन नाम श्रमणेर ३८२ कथा
लघु आयु में दहर यही, चमत्कार कर ढेर
चमत्कार कर ढेर, कठिन भी कार्य उठावे
सुगत जान सब तथ्य, सुमन को भिक्षु कहावे
कह भगवन समझाय, दायज्य तुम अधिकारी
अल्प आयु ही पाय, शुद्ध तुम वर व्रतधारी

ब्राह्मण वर्ग--२६

कुंडलिया संख्या | मूल धम्मपद संख्या

६७९ ब्राह्मण तृष्णा स्रोत को, काटो कर दो छिन्न ३८३
पराक्रम कर काम को, दूर करो विहिछिन्न
दूर करो विहिछिन्न, सस्कार क्षय है जानो
संस्कार होय नाश, सत्य तुम इसको मानो
कर लोगे साक्षात, अकृत निर्वाण ब्राह्मण
काट तृषा के स्रोत, जान भव नाशम ब्राह्मण

६८० श्रवस्ती के विप्र बने, बुद्ध धर्म के भक्त ३८३ कथा
भिक्षु को अर्हन्त कहे, आदर से वह भक्त
आदर से वह भक्त, भिक्षु पर बुरा विचारे
संबोधन सुन विप्र, भिक्षु सब भात बिसारे
भगवन भिक्षु बुझाय, अदिल से तुझे बुलावे
जो नर तृष्णा काट, शुद्ध मन विप्र जनावे

६८१ ब्राह्मण जब दो धर्म में, पारंगत हो जाय ३८४
जानकार उस विप्र के, बंधन सब मिट जाय
बंधन सब मिट जाय, धर्म ये युगल कहावे
शमथ विपश्यना द्वि, सार जो तत्व उठावे
कह भगवन समझाय, धर्म ये मूल कहावे
विप्र युगल ले जान, भव सब ग्रन्थि मिटावे

कु० सं० ध० सं०

६८२ जेतवन आ भिक्षू करे, अपने बीच विचार ३८४ कथा
सजग प्राप्त अर्हत लिये, चिन्तन करे विचार
चिन्तन करे विचार, सारिपुत तथ्यम जाने
भगवन से कर प्रश्न, धर्म दो कौन बखाने
कह भगवन समझाय, विपश्यना शमथ मानो
यही धर्म दो मूल, पूर्ण कर इनको जानो

६८३ जिसको नहीं पार रहे, रक्खे नहीं अपार ३८५
और नहीं जो नर रखे, तत्वम पारापार
तत्वम पारापार, उसे मैं ब्राह्मण बोलूँ
निर्भयी व निर्लिप्त, मनुज को ब्राह्मण बोलूँ
कह भगवन समझाय, तत्व ये नर जो लावे
उसे कहूँ सच शुद्ध, वही ब्राह्मण कहलावे

६८४ काया आँख कान जीभ, वाक चित्त सब पार ३८५ विशेष
रूप शब्द स्पर्श रस, धर्मम गंध अपार
धर्मम गंध अपार दो पारापार जानें
मैं औ मेरा तत्व, युगल ये तत्व बखानें
कह परफुल चँदराय, नर जो इन्हें न लावे
उसे सुगत कह विप्र, वही ब्राह्मण कहलावे

६८५ जेतवन मठ मध्य घुसे, मनुज रूप में मार ३८५ कथा
भगवन का दर्शन करे, पूछ विषय क्या पार
पूछ विषय क्या पार, सुगत तब डाँट सुनावे
तुम क्या समझो पार, मार न बुझ यही पावे
कह भगवन समझाय, मार तुम पार न समझो
वीत राग बुझ पाय, दूर हट तुम क्या समझो

६८६ ध्यानी औ निर्मल रहे, स्थिर औ आसीन ३८६
कृत अकृत विहीन रहे, आश्रव से जो हीन
आश्रव से जो हीन, उसे मैं ब्राह्मण बोलूँ
पावे जो निर्वाण, शुद्ध गुण ग्राही बोलूँ
कह भगवन समझाय, ध्यान जेहि शुद्धि लावे
सकल पाप जो त्याग, वही ब्राह्मण कहलावे

६८७ भगवन जेत धाम बसें, प्रश्न करे इक विप्र ३८६ कथा
भगवन अपने शिष्य को, आप पुकारें विप्र
आप पुकारें विप्र, जाति मैं ब्राह्मण पाऊँ
मुझे न कह क्यों विप्र, जन्म मैं उत्तम पाऊँ
कह भगवन समझाय, सुनो तुम द्विज वर प्राणी
जाति गोत सब झूठ, वहीं वे ब्राह्मण ज्ञानी

६८८ तपे सूर्य दिन में परम, निशि में चन्द्र प्रकाश ३८७
नृप आभूषण में बरे, ध्यानी द्विज प्रकाश
ध्यानी द्विज प्रकाश, बुद्ध पर अपने जलते
बुद्ध तेज स्व तेज, रात दिन तपते रहते
कह भगवन समझाय, बुद्ध मत तेज हटावे
पाँच भांति के तेज, दीप्त रह रश्मि दिखावे

६८९ पूर्वाराम विहार में, शिष्य कहे भगवान ३८७ कथा
सब द्युति में बुद्ध द्युति, श्रेष्ठ अति द्युतिमान
श्रेष्ठ अति द्युतिमान, सुगत तब शिष्य सुनावे
बुद्ध तेज स्व तेज, सदा जो दीप्त दिखावे
कह भगवन आनन्द, आप जो आप जलावे
वही तेज बुध तेज, स्वयं जो बरे सुहावे

कुं० सं० ध० सं०

६९० धोये पाप बहाय जो, ब्राह्मण कहने योग्य ३८८
समता सुआचरण करे, श्रमणः कहने योग्य
श्रमणः कहने योग्य, विप्र मल चित्त हटावे
प्रवजित वही कहाय, चित्त वह स्वच्छ बनावे
कह भगवन सयझाय, चित्त मल जेहि हटावे
वही विप्र सच विप्र, वही ही दीक्ष कहावे

६९१ एक विप्र दीक्षा गहे, कहीं अन्य स्थान ३८८ कथा
विप्र वह भगवान कहे, मुझको दें सम्मान
मुझको दें सम्मान, कहे मैं दीक्षा पाऊँ
बुध के शिष्य समान, भिक्षु की संज्ञा चाहूँ
कह भगवन वह विप्र, पूर्ण जो पाप हटावे
वही विप्र कह विप्र, अन्य ना विप्र कहावे

६९२ निष्पापी तन द्विज पर, अनुचित सकल प्रहार ३८९
द्विज क्रोध मारक करे, अनुचित कहीं अपार
अनुचित कहीं अपार, अर्थ रस भाव उठावे
मारक द्विज धिक्कार, धिक्क जौं क्रोध उगावे
कह भगवन समझाय, नीच जो विप्र प्रहारे
उससे द्विजः नीच, द्विज जौं क्रोध उचारे

६९३ कल्याणी विधि कम नहीं, विप्र लिये प्रिय त्याग ३९०
अपनी प्रिय हर वस्तु को, कर दे मन से त्याग
कर दे मन से त्याग, जहाँ भी मन वध त्यागे
वहाँ वहाँ दुख शान्त, अगर मन हिंसा त्यागे
कह भगवन समझाय, विप्र मन दूर हटावे
प्रिय वस्तु सभी त्याग, सुमंगल तथ्य कहावे

कुं सं॰ ध॰ सं॰

६९४ अवरती इक विप्र अधम, ताड़ेय सारिपुत्र ३८९-३९० कथा
पीछे से घुसा लगा, मारेय सारि पुत्र
मारेय सारिपुत्र, सारि पर क्रोध न लावे
सीधे पथ पर जाय, वचन पर दुक्ख न लावे
कह भगवन समझाय, सारि वह ब्राह्मण ज्ञानी
ज्ञानी करे न क्रोध, विप्र यों निर्मल प्राणी

६९५ काया वाणी चित्त से, जो न करे कुछ पाप ३९१
इन तीनों से पुरुष यदि, संयत बन निष्पाप
संयत बन निष्पाप, उसे मैं ब्राह्मण मानूँ
संवर रख यह तीन, उसे मैं विप्र बखानूँ
कह भगवन समझाय, पुरुष जो पाप न लावे
उसे सत्य कह विप्र, वही ब्राह्मण कहलावे

६९६ जेतवन कई भिक्षुणी, मन में कर संदेह ३९१ कथा
महा प्रजापति साथ रह, संशय कर संदेह
संशय कर संदेह, सुगत तब बोध बुझावे
प्रजापति सभी ज्ञान, पुनः क्या शंका लावे
कह भगवन समझाय, वाक तन मन जो धोये
प्रजापति वही विप्र, विप्र जो पाप न ढोये

६९७ जिससे सम्यक संबुधिह, धम्मम का ले ज्ञान ३९२
उसे कहे आचार्य गुरु, आदर करे प्रणाम
आदर करे प्रणाम, विप्र ज्यों होत्री करते
अग्नि होत्र को विप्र, नमः ज्यों आदर करते
कह भगवन समझाय, गुरु पूज नमः पुकारो
जो दे सम्यक ज्ञान, भक्ति का शब्द उचारो

क्रु० सं० ध० सं०

६९८ गुरु प्रथम सारि पुत्र के, अश्वजीत कह नाम ३९२ कथा
दिशा जिसी में गुरु रहें, सारि करेय प्रणाम
सारि करेय प्रणाम, भिक्षु सब सुगत सुनावे
दिशा सारि यों पूज, भिक्षु यों सुगत बुझावे
कह भगवन समझाय, सारि गुरु आदर करते
वे न दिशा को पूज, भक्ति बस गुरु हित धरते

९ जटा गोत्र व जन्म धरे, होय नहीं नर विप्र ३९३
सत्य धर्म जिसमें रहे, वही शुचि वही विप्र
वही शुचि वही विप्र, अर्थ रस भाव उठावे
सत्य धर्म ले जान, वही ब्राह्मण कहलावे
कह भगवन समझाय, विप्र,ना सब वन पावे
जटा गोत्र ले जन्म, कोई न विप्र कहावे

७०० विप्र जटाधारी कहे, जेत विपिन जा बुद्ध ३९३ कथा
ब्राह्मण वंश जन्म धरूँ, क्यों न विप्र मैं शुद्ध
क्यों न विप्र मैं शुद्ध, सुगत तब विप्र बुझावे
जटा गोत्र ले जन्म, नहीं सब विप्र कहावे
कह भगवन समझाय, विप्र ना जन्मम धारी
गोत्र गुण नहीं विप्र, विप्र नहीं जटाधारी

७०१ ब्राह्मण दुर्बुद्धिः सुनो, जटा करे क्या लाभ ३९४
ओढ़ो मृग त्वचा भले, भीतर मन तो राग
भीतर मन तो राग, मलों से चित्तः पूरा
बाहर धोय बेकार, चित्त में मैलम पूरा
कह भगवन समझाय, जटा मत लाभ दिलावे
मृगा चर्म बेकार, चित्त जौं मैल भरावे

कुं० सं० | ध० संत

७०२ एक दिन वैशाली में, ब्राह्मण कुहक डराय ३९४ कथा
पाखण्डी तरु पर चढ़े, झुलकर पैर हिलाय
झुलकर पैर हिलाय, डरा कर द्रव्य कमावे
जान भिक्षु सब बात, सुगत को जाय सुनावे
कह भगवन समझाय, विप्र बन सभी डरावे
ठग पाखण्डी विप्र, रूप सब लोग दिखावे

७०३ ओढ़े नर जो चीथड़े, तन से हो कृशकाय ३९५
तथा नसों से तन मढ़े, वन में अलग फिराय
वन में अलग फिराय, उसे मैं ब्राह्मण मानूँ
ध्यान मग्न वन घूम, उसे मैं विप्र बखानूँ
कह भगवन समझाय, पंशु कुल जेहि चढ़ावे
देह क्षीण वन घूम, वही ब्राह्मण कहलावे

७०४ गृद्ध कूट भगवन वसें, शक्र जाय कर प्रश्न ३९५ कथा
पंशु कुल क्यों पहन किसा, शक्र करे यह प्रश्न
शक्र करे यह प्रश्न, प्रश्न ले अचरज पूछे
भगवन उसे बताय, थेरी चल नभ से नीचे
कह भगवन समझाय, किसा यह पुत्री मेरी
वस्त्र पंशु कुल ओढ़, गोतमी आयी थेरी

७०५ माता योनि जन्म लिये, मैं न कहूँ वह विप्र ३९६
भोवादी धन संग्रही, तेहि न मानूँ विप्र
तेहि न मानूँ विप्र, विप्र न परिग्रह लावे
त्यागी नर जो होय, वही सच विप्र कहावे
कह भगवन समझाय, विप्र जो त्याग उठावे
परिग्रह जो त्याग, विप्र वह विप्र कहावे

कु० स०　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　ध० सं०

७०६ अवस्ती का विप्र कहे, भगवन मैं भी विप्र　३९६ कथा
विप्र कुल जब जन्म लिया, कहें मुझे भी विप्र
कहें मुझे भी विप्र, सुगत तब विप्र बुझावे
शुद्ध नहीं तुम विप्र, जन्म ना विप्र बनावे
कह भगवन समझाय, उसे मैं ब्राह्मण मानूँ
त्यागी निर्मल चित्त, शुद्ध मैं विप्र बखानूँ

७०७ सारे बंधन काट दे, डरे न लिप्सा विप्र　३९७
राग आसक्ति से विरत, उसे कहूँ मैं विप्र
उसे कहूँ मैं विप्र, राग से भय ना खावे
संयोजन सब त्याग, वही सच विप्र कहावे
कह भगवन समझाय, विप्र जो राग हरावे
उससे भय मत खाय, राग को पूर्ण दबावे

७०८ उग्रसेन सुत सेठ के, राजगिरी कर वास　३९७ कथा
धर्म गह मन शान्त करे, तजे राग सब आश
तजे राग सब आश, स्वयं वह निडर जनावे
मैं निर्भय हूँ जीव, सभी को यही सुनावे
कह भगवन समझाय, उग्र अब निर्भय ज्ञानी
तृष्णा कर सब शान्त, उग्र अब ब्राह्मण प्राणी

७०९ तृष्णा रूपी रस्सियाँ, क्रोध: रूपी नुद्ध　३९८
मतवादी रूप पगहा, काटे जो बन बुद्ध
काटे जो बन बुद्ध, फेंक दे अनुशय जावे
जूया तुल अज्ञान, फेंक कर बुद्ध कहावे
कह भगवन समझाय, बुद्ध जो लोभ मिटावे
क्रोध त्याग अज्ञान, बुद्ध बन विप्र कहावे

कुं० सं०   ध० सं०

७१० विप्र उभय श्रावस्ती के, अपने में कर होड़ ३९८ कथा
अपने अपने बैल के, विप्र लगावे होड़
विप्र लगावे होड़, यान पर बालू लादे
रस्सी बंधन टूट, रेत जब गाड़ी लादे
कह भगवन समझाय, कहो न जीत कट रस्सी
जीत तभी कह जीत, क्रोध की काटो रस्सी

७११ गाली वध बंधन सहे, बिन दूषित कर चित्त ३९९
जेहि सेना सेनापति, क्षमा शक्ति रख चित्त
क्षमा शक्ति रख चित्त, उसे मैं ब्राह्मण बोलूँ
क्षमा शील बल धैर्य, गहे सब ब्राह्मण बोलूँ
कह भगवन समझाय, बात सुन क्रोध न लावे
सुन कर पी अपमान, वही सच विप्र कहावे

७१२ राजगीर में चार बसे, ब्राह्मण भारद्वाज ३९९ कथा
लड़कर सुगत पास चले, क्रोधित भारद्वाज
क्रोधित भारद्वाज, गहे धम्म चारों भाई
क्रोध धैर्य ले जाय, क्रोध तज चारों भाई
कह भगवन समझाय, क्रोध तज शान्ति उघाऊँ
जन हित कर उद्धार, इसी से बुद्ध कहाऊँ

७१३ अक्रोधी व पुरुष व्रती, अनुत्सुक जो दान्त ४००
शीलवान जो नर रहे, अन्तिम तन ले शान्त
अन्तिम तन ले शान्त, उसे मैं ब्राह्मण मानूँ
सत्पुरुष जेहि जीव, उसे सच विप्र बखानूँ
कह भगवन समझाय, विप्र मत क्रोध जगावे
सँयम रख शीलवंत, सत्य वह विप्र कहावे

कु० सं० ग्र० सं०

७१४ सारिपुत बहु भिक्ष लिये, मां घर भोजन पाय ४०० कथा
सारिपुत को मातु तभी, कर्कश वचन सुनाय
कर्कश वचन सुनाय, सारि पर मुंह ना खोले
गाली सिर धर राख, चित्त ना क्षण भर डोले
राहुल से सुन बात, सुगत तब भिक्षु बुलावे
धीर करे मत क्रोध, सारि यों विप्र कहावे

७१५ जैसे जल ठहरे नहीं चिकने सरसिज पात ४०१
आरी नोंकों पर अटक, सरसों ना टिक पात
सरसों ना टिक पात, ठीक यों ब्राह्मण मानूँ
भोग न जँह टिक पाय, उसे मैं विप्र बखानूँ
कह भगवन समझाय, विप्र तज भोग कहावे
जिस पर भोग न आय, विप्र वह शुद्ध कहावे

७१६ जेतवन की कथा सुनें, भिक्षुगण चर्चे काम ४०१ कथा
उप्पलवण्णा थेरी पर, बलात्कार जब शाम
बलात्कार जब शाम, भिक्षु सुन तर्क बढ़ावे
क्षीणाश्रव क्या काम, सुगत सुन वचन सुनावे
कह भगवन समझाय, निष्पाप काम न लावे
क्षीणाश्रव तज काम, उभय पथ काम हटावे

७१७ यहीं इसी जो जन्म में, दुख विनाश ले जान ४०२
बोझ स्वयं का फेंक दे, लिप्ति रहित बन प्राण
लिप्ति रहित बन प्राण, उसे मैं विप्रः मानूँ
ज्ञानी जो इस जन्म, उसे मैं विप्र बखानूँ
कह भगवन समझाय, बोझ जो फेंक गिरावे
स्वयं भार को फेंक, वही ब्राह्मण कहलावे

कुं० सं० घ० सं०

७१८ श्रवस्ती का विप्र गहे, घर में कोई दास ४०२ कथा
दास घर से भाग चले, गहे धर्म बुध पास
गहे धर्म बुध पास, निकल कर भिक्षा मांगे
ब्राह्मण पकड़े हाथ, दास जब भिक्षा मांगे
भगवन विप्र बुझाय, दास यह बोझ हटावे
बोझ मनुज सब फेंक, ज्ञान ले विप्र कहावे

७१९ जो बुद्धि गंभीर गहे, मेधावी गह ज्ञान ४०३
ज्ञाता मार्ग अमार्ग का, उत्तम ले निर्वाण
उत्तम ले निर्वाण, उसे मैं ब्राह्मण मानूँ
मेधावी सज्ञान, उसे मैं विप्र बखानूँ
कह भगवन समझाय, ज्ञान ही विप्र बनावे
प्रज्ञा ले गंभीर, वही ब्राह्मण कहलावे

७२० गृद्ध कूट भगवन बसें, पूछ कुशल जा शक्र ४०३ कथा
चीथड़ में खेमा लखे, पावे अचरज शक्र
पावे अचरज शक्र, पुनः वह भगवन पूछे
भगवन उसे बताय, खेम चल नभ से नीचे
कह भगवन समझाय, खेम यही सुती मेरी
वस्त्र पंशु कुल ओढ़, खेम यों आयी मेरी

७२१ रखे जो संसर्ग नहीं, गिरहथ या घरहीन ४०४
बिना ठिकान जो घूमे, इच्छा से जो हीन
इच्छा से जो हीन, उसे मैं ब्राह्मण मानूँ
बेघर गृही असंग, उसे मैं विप्र बखानूँ
कह भगवन समझाय, पुरुष जो राग न लावे
अतिशय जो अल्पेक्ष, वही ब्राह्मण कहलावे

कु० सं०　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　ध० सं०

७२२ जेतवन में धर्म गहे, गुफा जाय इक तिस्स ४०४ कथा

गुफा रह एक देवता, विघ्न धरे वह तिस्स
विघ्न धरे वह तिस्स, तिस्स पर क्रोध न लावे
मन में रख संवेग, तिस्स यों अर्हत पावे
भगवन भिक्षु बुझाय, तिस्स ना झूठ उठावे
तिस्स बने मम पुत्र, मार्ग पद अर्हत पावे

७२३ चर अचर सब प्राणी में, जो हो विरत प्रहार
जो न कभी कुछ मारते, प्रेरे नहीं प्रहार
प्रेरे नहीं प्रहार, उसे मैं ब्राह्मण मानूँ
इन गुण से सम्पन्न, शुद्ध मैं विप्र बखानूँ
कह भगवन समझाय, विप्र न प्राण मिटावे
जे न जीव दे दण्ड, वही ब्राह्मण कहलावे

७२४ जेतवन भिखु धर्म गहे, कर्मण स्थल प्राप्त ४०५ कथा
अर्हत गह वन से फिरे, मार्ग सहे उत्पात
मार्ग सहे उत्पात, गाँव से नारी भागी
साथ वही भिखु जाय, मार्ग मिल नारी भागी
पथ में पति तब आय, भिक्षु को पीट सतावे
भिक्षु मन नहीं क्रोध, मार वह सहज उठावे

७२५ सभी विरोधी बीच में, बने विरोधी हीन ४०६
दण्ड धार के बीच में, बने जो दण्ड हीन
बने जो दण्ड हीन, द्रव्य जो नहीं जुटावे
संग्रह कर्ता बीच, हीन बन निधन फिरावे
कह भगवन समझाय, उसे मैं ब्राह्मण मानूँ
धनी बीच धन हीन, विप्र को विप्र बखानूँ

कु० सं० 										ध० सं०

७२६ एक विप्र श्रवस्ती में, श्रामणेर कुछ लाय ४०६ कथा
भोजन हित स्व धाम में, गृहिणी लख अकुलाय
गृहिणी लख अकुलाय, भिक्षु लघु खाद्य न पावे
गृहिणी कर अति क्रोध, भिक्षु ना क्रोध उघावे
कह भगवन समझाय, भिक्षु हो गुरु या छोटे
श्रामणेर भी श्रेष्ठ, क्रोध कर बने न खोटे

७२७ ज्यों सरसों आरा नुकी, नहीं टिके दे फेंक ४०७
राग द्वेष जो मान तिम, क्रोध चित्त से फेंक
क्रोध चित्त से फेंक, उसे मैं ब्राह्मण मानूँ
दुर्गण दे जो फेंक, शुद्ध मैं विप्र बखानूँ
कह भगवन समझाय, नोंक न राई टिकावे
राग द्वेष त्यों विप्र, चित्त ना कभी धरावे

७२८ वेणुवन की कथा सुनें, महा पंथक बन थेर ४०७ कथा
चूल पंथ भाई सगा, रहे संग यह थेर
रहे संग यह थेर, महा पर चूल भगावे
भिक्षु भिक्षु में बात, महा तो क्रोध जगावे
कह भगवन समझाय, महा तो क्रोध न लावे
अर्थ धर्म रख ध्यान, मठ से चूल भगावे

७२९ बिन कर्कश सार्थक बना, सत्य वचन जो बोल ४०८
जो उचरे यों वाक सुधु, कष्ट न दे कुछ बोल
कष्ट न दे कुछ बोल, उसे मैं ब्राह्मण मानूँ
शब्द मधुर जो बोल, शुद्ध मैं विप्र बखानूँ
कह भगवन समझाय, सत्य भी मधुर सुनावे
सार्थक मधुरम बोल, शुद्ध ब्राह्मण कहलावे

कु० सं० धं० सं०

७३० पिलिन्द वच्छ गेण, वसे, सबको वसल पुकार ४०८ कथा
जान नीच अर्थक यही, भिखु मन उगे विकार
भिखु मन उगे विकार, भिक्षु सब सुगत सुनावे
जान थेर से तथ्य, सुगत तब भिक्षु बुझावे
कह भगवन समझाय, पूर्व भिखु ध्यान लगावे
वसलवाद ले ध्यान, वही अब कह दुहरावे

७३१ ह्रस्व दीर्घ पीन पतली, सभी अशुभ शुभ चीज ४०९।
बिना दिये जो ना गहे, भव में कोई चीज
भव में कोई चीज, उसे मैं ब्राह्मण मानूँ
बिन दे मत जो लेय शुद्ध मैं विप्र बखानूँ
कह भगवन समझाय, द्रव्य लघु वर कुछ आवे
बिन दे नहीं उठाय, वही ब्राह्मण कहलावे

७३२ विप्र श्रवस्ती एक दिन, चादर रख लटकाय ४०९ कथा
एक थेर उस वस्त्र को, चीथड़ समझ उठाय
चीथड़ समझ उठाय, विप्र यह लख के लपके
चादर उससे छीन, वचन कह अतिशय झिड़के
देय भिक्षु को दोष, थेर को सभी चिढ़ावे
भगवन सभी बुझाय, भूल से भिक्षु उठावे

७३३ इहलोक परलोक सभी, आशा जिसकी लुप्त ४१०
आशा व आसक्ति रहित, तृष्णा से जो मुक्त
तृष्णा से जो मुक्त, उसे मैं ब्राह्मण मानूँ
आश युगल भव मुक्त, शुद्ध मैं विप्र बखानूँ
कह भगवन समझाय, विप्र ना सभी कहावे
तृषा आसक्ति त्याग, वही ब्राह्मण कहलावे

७३४ सारिपुत्र देहात बसे, वर्षा वास बिताय ४१० कथा
जेतवन फिर शीघ्र चले, चीवर नहीं उघाय
चीवर नहीं उघाय, लोग से कहे पठावे
सुन भिक्षु यही बात, लोभ की बात बतावे
कह भगवन समझाय, सारि ना लोभ उगावे
पुण्य बहर ले ध्यान, वस्त्र पर ध्यान लगावे

७३५ जो न लोभ आलस रखे, संशय मिट ले ज्ञान ४११
पैठ पदम अमृत सदिश, जेहि गहे निर्वाण
जेहि गहे निर्वाण, उसे मैं ब्राह्मण मानूँ
संशय रहित सुजान, विज्ञ जो विप्र बखानूँ
कह भगवन समझाय, अमत पद जेहि उठावे
नहीं भिन्न वह बुद्ध, वही ब्राह्मण कहलावे

७३६ जेतवन के भिक्षु गहे, मन में अति सन्देह ४११ कथा
महामोद लोभी कहे, उनमें कर संदेह
उनमें कर संदेह, सुगत तब ज्ञान बतावे
क्षीणाश्रव तज लोभ, मोद सब लोभ हटावे
कह भगवन समझाय, मोद गुरु थेर कहावे
तज कर सारे पाप, सही ब्राह्मण कहलावे

७३७ आसक्ति पुन पाप यहाँ, जो नर युगल हटाय ४१२
निर्मल औ विशुद्ध बने, शोक रहित बन जाय
शोक रहित बन जाय, उसे मैं ब्राह्मण मानूँ
पाप पुण्य द्वि त्याग, उसे मैं विप्र बखानूँ
कह भगवन समझाय, चित्त जो शुद्ध करावे
शोक रहित तज लोक, वही ब्राह्मण कहलावे

कुं० सं० | ध० स०

७३८ पूर्वाराम विहार में, भिक्षु प्रशंसे थेर ४१२ कथा
रेवत को सराह सभी, चर्चे अरु सब थेर
चर्चे अरु सब थेरे, सुगत यह जान बुझावे
पाप पुण्य सब त्याग, रेवत यों मुनि कहावे
कह भगवन समझाय, थेर कुछ फर्क न लावे
पाप पुण्य सब एक, रेवत यों मुनि कहावे

७३९ चन्द्रमा सम जेहि विमल, शुद्ध स्वच्छ स्पष्ट ४१३
सकल जन्म की कामना, जेहि करे सब नष्ट
जेहि करे सब नष्ट, उसे मैं ब्राह्मण मानूँ
निर्मल शशि सम शुद्ध, शुद्ध मैं विप्र बखानूँ
कह भगवन समझाय, सकल जो लोभ हटावे
सभी जन्म के लोभ, वही ब्राह्मण कहलावे

७४० राजगिरि में एक रहे, विप्र नाम चन्दाभ ४१३ कथा
नाभी से आभा उगी, नाम धरे चन्दाभ
नाम धरे चन्दाभ, पूर्व में पुण्य कमावे
चन्दन काश्यप चैत्य पूज कर आभा पावे
विप्र उसे ले घूम, दान औ द्रव्य कमावे
अगर करो स्पर्श, पूर्ण यह चाह करावे

७४१ एक दिन चन्दाभ वही, भगवन सम्मुख आय ४१३ कथा
जैसे बुध सम्मुख हुआ, लुप्त रश्मि हो जाय
लुप्त रश्मि हो जाय, चन्दाभ समझ न पावे
कहे सुगत से जाय, युक्ति यह उसे दिलावे
धर्म गहे चन्दाभ, शीघ्र ही अर्हत पावे
बने ध्यान में लिप्त, लौट ना कहीं फिरावे

कु० सं० 　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　ध० सं०

७४२ जो दुर्गम संसार के, जन्म मरण तज चक्र ४१४
मोह रूप पथ त्याग दे, पथ जो उलटा वक्र
पथ जो उलटा वक्र, पारंगत भव से जानूँ
ध्यानी भव से तीर्ण, उसे मैं विप्र बखानूँ
कह भगवन समझाय, मार्ग भव चक्र हटावे
ध्यानी भव तर जीव, वही ब्राह्मण कहलावे

७४३ कोलिय कन्या सुपवसा, सात वर्ष रख गर्भ ४१४ कथा
बालक सीवलि जन्म ले, अति कष्ट ले गर्भ
अति कष्ट ले गर्भ, सीवलि तब ताडि पावे
भिखु कह फिर क्यों कष्ट, गर्भ में ताडि उठावे
कह भगवन समझाय, कष्ट तज अमृत पावे
गह कर वह निर्वाण, विहर कर अभी फिरावे

७४४ नर जो यहाँ भोग तजे, दीक्षा ले घर हीन ४१५
जिसके सभी भोग मिटे, बने जन्म से हीन
बने जन्म से हीन, उसे मैं ब्राह्मण मानूँ
बेघर हो तज काम, उसे मैं विप्र बखानूँ
कह भगवन समझाय, विप्र जो जन्म मिटावे
पुनः नहीं भव आय, वही ब्राह्मण कहलावे

७४५ इक सुन्दर समुद्र बसे, राजगीर में जाय ४१५ कथा
कुलपुत्र श्रवस्ती यही, धर्म्म दीक्षा पाय
धर्म्म दीक्षा पाय, धाम वह तज कर आवे
सुन्दर गणिका भेज, पिता पुत चाह फिरावे
हाव भाव लख मुग्ध, समुद्र नारी सटावे
पर हो झट संवेग, स्वयं को स्वच्छ बचावे

धं० सं०

कु० सं०

७४६ तृष्णा जो तज दे यहाँ, दीक्षित हो घर हीन ४१६
जिसकी तृषा जन्म सकल, नष्ट पूर्ण जड़हीन
नष्ट पूर्ण जड़हीन, उसे मैं ब्राह्मण बोलूँ
दीक्षा ले घर हीन, सच मैं द्विजवर बोलूँ
कह भगवन समझाय, लोभ जो सकल मिटावे
जन्म पूर्ण कर अन्त, वही ब्राह्मण कहलावे

७४७ राजगिरि में बास करे, जटिल नाम सुधु सेठ ४१६ कथा
धन दौलत सब त्याग कर, दीक्षा ले ले सेठ
दीक्षा ले ले सेठ, शीघ्र वह अर्हत पावे
तीनों श्रेष्ठी पुत्र, खर्च कर संघ खिलावे
कह भगवन समझाय, जटिल सब त्याग किरावे
उसे न तृष्णा मान, शोक से हीन फिरावे

७४८ राजगिरि में वास करे, जोतिय नामक सेठ ४१६ कथा
धन दौलत सब त्याग कर, दीक्षा ले ले सेठ
दीक्षा ले ले सेठ, शीघ्र वह अर्हत पावे
अर्हत के उपरान्त, धर्म में जन्म बितावे
स्त्री धन प्रासाद, सभी को तुच्छम समझे
शोक त्याग ले ज्ञान, भोग को व्यर्थम समझे

७४९ मानुषी तज ग्रंथि सभी, दिव्य बंध जो त्याग ४१७
बंधन से विहीन बने, त्याग ग्रंथि सब भाग
त्याग ग्रंथि सब भाग, उसे मैं ब्राह्मण मानूँ
संयोजन जो त्याग, उसे मैं विप्र बखानूँ
कह भगवन समझाय, दिव्य नर गांठ मिटावे
पूर्ण रूप सब त्याग, वही ब्राह्मण कहलावे

कु॰ सं॰ ध॰ सं॰

७५० राजगिरि में वास करे, खेल चतुर नट पुत्र ४१७ कथा
वेणुवन जा धर्म गहे, अर्हत ले नट पुत्र
अर्हत ले नट पुत्र, सुगत यह तथ्य बुझावे
नटी पुत्र भव पुत्र, पुनः ला बहुर फिरावे
कह भगवन समझाय, खेल नट इसे न भावे
संगत भव यह त्याग, इसे न भोग लुभावे

७५१ रति अरति जो छोड़ सभी, बन जाये उपशान्त ४१८
क्लेश रहित सब भय जयी, विजयी वीर सुदान्त
विजयी वीर सुदान्त, उसे मैं ब्राह्मण मानूँ
पूर्ण रूप उपशान्त, उसे मैं विप्र बखानूँ
कह भगवन समझाय, विप्र सब भोग मिटावे
क्लेश रहित बन जाय, तभी ब्राह्मण कहलावे

७५२ राजगिरि में वास करे, खेल चतुर नट पुत्र ४१८ कथा
वेणु वन जा धर्म गहे, अर्हत ले नट पुत्र
अर्हत ले नट पुत्र, शीघ्र ही शोक मिटावे
भव क्लेश को त्याग, ज्ञान का लाभ उठावे
कह भगवन समझाय, पुत्र नट फिर न फिरावे
अर्हत बन के पुत्र, पूर्ण सब शोक मिटावे

७५३ जो जीवों की उत्पतिह, मृत्यु सभी ले जान ४१९
जो आसक्ति हीन बने, सुगत बुद्ध सज्ञान
सुगत बुद्ध सज्ञान, उसे मैं ब्राह्मण मानूँ
सुन्दर गति को प्राप्त, सुगत को विप्र बखानूँ
कह भगवन समझाय, सुगत ही विप्र कहावे
ज्ञानी बन जो बुद्ध, वही ब्राह्मण कहलावे

७५४ राजगिरि में वास करे, खेल चतुर नट पुत्र ४१९ कथा
वेणु वन में धर्म गहे, अर्हत ले नट पुत्र
अर्हत ले नट पुत्र, खेल से स्नेह मिटावे
जो भी पूछे लोग, सबों से यही बतावे
कह भगवान समझाय, पुत्र यह मेरा ज्ञानी
सब बंधन को त्याग, बना यह अर्हत ध्यानी

७५५ जिसकी गति को देवता, नर गंधर्व न जान ४२०
जो क्षीणाश्रव बन गए, अर्हत बने सुजान
अर्हत बने सुजान, उसे मैं ब्राह्मण मानूँ
गह ले जो निर्वाण, उसे मैं विप्र बखानूँ
कह भगवन समझाय, विप्र वह पुरुष कहावे
क्षीणाश्रव संपूर्ण, वही ब्राह्मण कहलावे

७५६ जिसके पूर्वम कुछ नहीं, जिसका गत भी शून्य ४२१
अकिंचन परिग्रह रहित, मध्य भाग भी शून्य
मध्य भाग भी शून्य, उसे मैं ब्राह्मण मानूँ
भूत भविष्य यह शून्य, जिसे मैं विप्र बखानूँ
कह भगवन समझाय, सदा जो शून्य कमावे
सभी काल रह शून्य, वही ब्राह्मण कहलावे

७५७ राजगिरि में वास करे, विप्र एक वंगीश ४२०-४२१ कथा
मृतक सिर को ठोक कहे, जन्म मरण वंगीश
जन्म मरण वंगीश, सुगत इक सिर दे पूछे
करे अनेकों यत्न, विप्र को कुछ ना सूझे
अन्त सुगत समझाय, विप्र तब धर्म उचावे
ज्ञान सुगत से पाय, शीघ्र ही अर्हत पावे

कु०सं० धं० सं०

७५८ वीर प्रवर व ऋषभ जेहि, विजयी महर्षि बुद्ध ४२२
स्नातक अकम्प्य जेहि, ऐसे नर जो शुद्ध
ऐसे नर जो शुद्ध, उसे मैं ब्राह्मण मानूँ
आठ गुणों से युक्त, तिसे मैं विप्र बखानूँ
कह भगवन समझाय, उक्त गुण जेहि जुटावे
वही पुरुष सत्पुरुष, वही ब्राह्मण कहलावे

७५९ जेतवन भगवान बसें, भिखुगण पूछे प्रश्न ४२२ कथा
अंगुलि क्या अर्हत गहे, भगवन से कर प्रश्न
भगवन से कर प्रश्न, सुगत तब भिक्षु बुझावे
अंगुलि बन निर्भीक, किसी से नहीं डरावे
कह भगवन समझाय, पुत्र मम पुण्य जुटावे
अर्हत अंगुलिमाल, शुद्ध अब वीर कहावे

७६० पूर्व जन्म जो जान ले, स्वर्ग अगति लख जान ४२३
पुनर्जन्म जो नर तजे, गहे पूर्ण प्रज्ञान
गहे पूर्ण प्रज्ञान, उसे मैं ब्राह्मण मानूँ
सब कुछ कर जो पूर्ण, उसे मैं विप्र बखानूँ
कह भगवन समझाय, जन्म जेहि पूर्ण मिटावे
अपना कर सब पूर्ण, वही ब्राह्मण कहलावे

७६१ जेतवन भगवान बसे, भगवन को हो रोग ४२३ कथा
पेट दर्द भीषण उठे, वायु विकारे रोग
वायु विकारे रोग, देवंगिक दवा पिलावे
गर्म सलिल में राब, पिलाकर चैन दिलावे
देवंगिक कह बुद्ध, दान फल श्रेष्ठ बतावें
किस नर को दूँ दान, तथ्य यह आप सुनावें

७६२ देवंगिक से तब कहें, गाथा यह भगवान ४२३ कथा
किस पुरुष को दान करे, समझाये भगवान
समझाये भगवान, दान कर ऐसे ज्ञानी
पूर्ण शुद्ध जो विप्र, उसे दे दानम प्राणी
कह भगवन समझाय, दान वह फल अति लावे
अगर दान कर विप्र, विप्र जो शुद्ध कहावे

—:—

मूल धम्मपद

१--यमक वग्गो

१ मनो पुब्बङ्गमा धम्मा मनो सेट्ठा मनोमया ।
मनसा चे पदुट्ठेन भासति वा करोति वा
ततो नं दुक्खमन्वेति चक्कं'व वहतो पदं १

२ मनो पुब्बङ्गमा धम्मा मनो सेट्ठा मनोमया
मनसा चे पसन्नेन भासति वा करोति वा
ततो नं सुखमन्वेति छाया'व अनपायिनी २

३ अक्कोच्छि मं अवधि मं अजिनि मं अहासि मे
ये तं उपनय्हन्ति वेरं तेस न सम्मति ३

४ अक्कोच्छि मं अवधि मं अजिनि मं अहासि मे
ये तं न उपनय्हन्ति वेरं तेसूपसम्मति ४

५ न हि वेरेन वेरानि सम्मन्तीध कुदाचनं
अवेरेन च सम्मन्ति एस धम्मो सनन्तनो ५

६ परे च न विजानन्ति मयमेत्थ यमामसे
ये च तत्थ विजानन्ति ततो सम्मन्ति मेधगा ६

७ सुभानुपस्सिं विहरन्तं इन्द्रियेसु असंवुतं
भोजनम्हि अमत्तञ्ञुं कुसीतं हीनवीरियं
तं वे पसहति मारो वातो रुक्खं'व दुब्बलं ७

८ असुभानुपस्सिं विहरन्तं इन्द्रियेसु सुसंवुतं
भोजनम्हि च मत्तञ्ञुं सद्धं आरद्धवीरियं
तं वे नप्पसहति मारो वातो सेलं'व पब्बतं ८

९ अनिक्कसावो कासावं यो वत्थं परिदहेस्सति
अपेतो दमसच्चेन न सो कासावमरहति ९

१० यो च वन्तकसावस्स सीलेसु सुसमाहितो
उपेतो दमसच्चेन स वे कासावमरहति १०

११ असारे सारमतिनो सारे चासारदस्सिनो
ते सारं नाधिगच्छन्ति मिच्छासङ्कप्पगोचरा ११

१२ सारञ्च सारतो ञत्वा असारञ्च असारतो
ते सारं अधिगच्छन्ति सम्मासङ्कप्पगोचरा १२

१३ यथागारं दुच्छन्नं वुट्ठि समतिविज्झति
एवं अभावितं चित्तं रागो समितिविज्झति १३

१४ यथागारं सुच्छन्नं वुट्ठि न समतिविज्झति
एवं सुभावितं चित्तं रागो न समतिविज्झति १४

१५ इध सोचति पेच्च सोचति पापकारी उभयत्थ सोचति
सो सोचति सो विहञ्ञति दिस्वा कम्मकिलिट्ठमत्तनो १५

१६ इध मोदति पेच्च मोदति कतपुञ्ञो उभयत्थ मोदति
सो मोदति सो पमोदति दिस्वा कम्मविसुद्धिमत्तनो १६

१७ इध तप्पति पेच्च तप्पति पापकारी उभयत्थ तप्पति
पापं मे कतन्ति तप्पति भिय्यो तप्पति दुग्गतिङ्गतो १७

१८ इध नन्दति पेच्च नन्दति कतपुञ्ञो उभयत्थ नन्दति
पुञ्ञं मे कतन्ति नन्दति भिय्यो नन्दति सुग्गतिं गतो १८

१६ बहुम्पि चे सहितं भासमानो न तक्करो होति नरो पमत्तो
गोपो'व गावो गणयं परेस न भागवा सामञ्ञस्स होति १६

२० अप्पम्पि चे सहित भासमानो धम्मस्स होति अनुधम्मचारी
रागञ्च दोसञ्च पहाय मोहं सम्मप्पजानो सुविमुत्तचित्तो
अनुपादियानो इध वा हुरं वा स भागवा सामञ्ञस्स होति २०

२—अप्पमाद वग्गो

२१ अप्पमादो अमतपदं पमादो मच्चुनो पदं
अप्पमत्ता न मीयन्ति ये पमत्ता यथा मता १

२२ एत विसेसतो ञत्वा अप्पमादम्हि पण्डिता
अप्पमादे पमोदन्ति अरियानं गोचरे रता २

२३ ते झायिनो साततिका निच्चं दल्ह-परक्कमा
फुसन्ति धीरा निब्बानं योगक्खेमं अनुत्तरं ३

२४ उट्ठानवतो सतिमतो सुचिकम्मस्स निसम्मकारिनो
सञ्ञतस्स च धम्मजीविनो अप्पमत्तस्स यसोभिवड्ढति ४

२५ उट्ठानेनप्पमादेन सञ्ञमेन दमेन च
दीपं कयिराथ मेधावी यं ओघो नाभिकीरति ५

२६ पमादमनुयुञ्जन्ति बाला दुम्मेधिनो जना
अप्पमानञ्च मेधावी धनं सेट्ठं' व रक्खति ६

२७ मा पमादमनुयुञ्जेथ मा कामरतिसन्थवं
अप्पमत्तो हि झायन्तो पप्पोति विपुलं सुखं ७

२८ पमादं अप्पमादेन यदा नुदति पण्डितो
पञ्ञापासादमारुय्ह असोको सोकिनिं पजं
पब्बतट्ठो'व भूमट्ठे धीरो बाले अवेक्खति ८

२९ अप्पमत्तो पमत्तेसु सुत्तेसु बहुजागरो
अबलस्सं'व सीघस्सो हित्वा याति सुमेधसो ९
३० अप्पमादेन मघवा देवानं सेट्ठतं गतो
अप्पमादं पसंसन्ति पमादो गरहितो सदा १०
३१ अप्पमादरतो भिक्खु पमादे भयदस्सि वा
संयोजनं अणुं थूलं डहं अग्गी'व गच्छति ११
३२ अप्पमादरतो भिक्खु पमादे भयदस्सि वा
अभब्बो परिहानाय निब्बानस्सेव सन्तिके १२

३—चित्तवग्गो

३३ फन्दनं चपलं चित्तं दुरक्खं दुन्निवारयं
उजुं करोति मेधावी उसुकारो'व तेजनं १
३४ वारिजो'व थले खित्तो ओकमोकत-उब्भतो
परिफन्दतिदं चित्तं मारधेय्यं पहातवे २
३५ दुन्निग्गहस्स लहुनो यत्थकाम-निपातिनो
चित्तस्स दमथो साधु चित्तं दन्तं सुखावहं ३
३६ सुदुद्दसं सुनिपुणं यत्थकाम - निपातिनं
चित्तं रक्खेय्य मेधावी चित्तं गुत्तं सुखावहं ४
३७ दूरङ्गमं एकचरं असरीरं गुहासयं
ये चित्तं सञ्ञमेस्सन्ति मोक्खन्ति मारबन्धना ५
३८ अनवट्ठितचित्तस्स सद्धम्मं अविजानतो
परिप्लवपसादस्स पञ्ञा न परिपूरति ६

३९ अनवस्सुतचित्तस्स अनन्वाहतचेतसो
पुञ्ञपापपहीणस्स नत्थि जागरतो भयं ७

४० कुम्भूपमं कायमिमं विदित्वा नगरूपमं चित्तमिदं ठपेत्वा
योधेथ मारं पञ्ञायुधेन जितं च रक्खे अनिवेसनो सिया ८

४१ अचिरं वत'यं कायो पठविं अधिसेस्सति
छुद्धो अपेतविञ्ञाणो निरत्थं'व कलिङ्गरं ९

४२ दिसो दिसं यन्तं कयिरा वेरी वा पन वेरिनं
मिच्छापणिहितं चित्तं पापियो नं ततो करे १०

४३ न तं माता पिता कयिरा अञ्ञे वापि च ञातका
सम्मापणिहितं चित्तं सेय्यसो नं ततो करे ११

४—पुप्फवग्गो

४४ को इमं पठविं विजेस्सति यमलोकञ्च इमं सदेवकं
को धम्मपदं सुदेसितं कुसलो पुप्फमिव पचेस्सति १

४५ सेखो पठविं विजेस्सति यमलोकञ्च इमं सदेवकं
सेखो धम्मपदं सुदेसितं कुसलो पुप्फमिव पचेस्सति २

४६ फेणूपमं कायमिमं विदित्वा मरीचिधम्मं अभिसम्बुधानो
छेत्वान मारस्स पपुप्फकानि अदस्सनं मच्चुराजस्स गच्छे ३

४७ पुप्फानि हेव पचिनन्तं व्यासत्तमनसं नरं
सुत्तं गामं महोघो'व मच्चु आदाय गच्छति ४

४८ पुप्फानि हेव पचिनन्तं व्यासत्तमनसं नरं
अतित्तं येव कामेसु अन्तको कुरुते वसं ५

४९ यथापि भमरो पुप्फं वण्णगन्धं अहेठयं
पलेति रसमादाय एवं गामे मुनि चरे ६

५० न परेसं विलोमानि न परेसं कताकतं
अत्तनो'व अवेक्खेय्य कतानि अकतानि च ७

५१ यथापि रुचिरं पुप्फं वण्णवन्त सकन्धकं
एव सुभासिता वाचा अफला होति अकुब्बतो ८

५२ यथापि रुचिरं पुप्फं वण्णवन्तं सगन्धकं
एवं सुभासिता वाचा सफला होति कुब्बतो ९

५३ यथापि पुप्फरासिम्हा कयिरा मालागुणे बहू
एवं जातेन मच्चेन कत्तब्बं कुसलं बहुं १०

५४ न पुप्फगन्धो पटिवातमेति न चन्दनं तगरमल्लिका वा
सतञ्च गन्धो पटिवातमेति सब्बा दिसा सप्पुरिसो पवाति ११

५५ चन्दनं तगर वापि उप्पलं अथ वास्सकी
एतेसं गन्धजातानं सीलगन्धो अनुत्तरो १२

५६ अप्पमत्तो अयं गन्धो या'य तगरचन्दनी
यो च सीलवतं गन्धो वाति देवेसु उत्तमो १३

५७ तेसं सम्पन्नसीलानं अप्पमादविहारिनं
सम्मदञ्ञा विमुत्तानं मारो मग्गं न विन्दति १४

५८ यथा संकारधानस्मिं उज्झितस्मिं महापथे
पदुमं तत्थ जायेथ सुचिगन्धं मनोरमं १५

५९ एवं संकारभूतेसु अन्धभूते पुथुज्जने
अतिरोचति पञ्ञाय सम्मासम्बुद्धसावको १६

५-बालवग्गो

६० दीघा जागरतो रत्ति दीघं सन्तस्स योजनं
दीघो बालानं संसारो सद्धम्म अविजानतं १
६१ चरञ्चे नाधिगच्छेय्य सेय्यं सदिसमत्तनो
एकचरियं दल्हं कयिरा नत्थि बाले सहायता २
६२ पुत्ता मत्थि धनम्मत्थि इति बालो विहञ्ञति
अत्ता हि अत्तनो नत्थि कुतो पुत्तो कुतो धनं ३
६३ यो बालो मञ्ञति बाल्यं पण्डितो वापि तेन सो
बालो च पण्डितमानी स वे बालो'ति वुच्चति ४
६४ यावजीवम्पि चे बालो पण्डितं पयिरुपासति
न सो धम्मं विजानाति दब्बी सूपरसं यथा ५
६५ मुहुत्तमपि चे विञ्ञू पण्डित पयिरुपासति
खिप्पं धम्मं विजानाति जिह्वा सूपरसं यथा ६
६६ चरन्ति बाला दुम्मेधा अमित्तेनेव अत्तना
करोन्तो पापकं कम्मं यं होति कटुकप्फलं ७
६७ न त कम्मं कतं साधु य कत्वा अनुतप्पति
यस्स अस्सुमुखो रोद विपाकं कटुसेवति ८
६८ तञ्च कम्मं कतं साधु यं कत्वा नानुतप्पति
यस्स पतीतो सुमनो विपाकं पटिसेवति ९
६९ मधुवा मञ्ञती बालो याव पापं न पच्चति
यदा च पच्चती पापं अथ बालो दुक्खं निगच्छति १०
७० मासे मासे कुसग्गेन बालो भुञ्जेथ भोजनं
न सो संखतधम्मानं कलं अग्घति सोलसिं ११

७१ न हि पापं कतं कम्मं सज्जु खीर'व मुच्चति
डहन्तं बालमन्वेति भस्माच्छन्नो'व पावको १२
७ यावदेव अनत्थाय ञत्तं बालस्स जायति
हन्ति बालस्स सुक्कंसं मुद्धमस्स विपातयं १३
७३ असतं भावनमिच्छेय्य पुरेक्खारञ्च भिक्खुसु
आवासेसु च इस्सरियं पूजा परकुलेसु च १४
७४ ममेव कतमञ्ञन्तु गिही पब्बजिता उभो
ममेवातिवसा अस्सु किच्चाकिच्चेसु किस्मिचि
इति बालस्स सङ्कप्पो इच्छा मानो च वड्ढति १५
७५ अञ्ञा हि लाभूपनिसा अञ्ञा निब्बानगामिनी
एवमेतं अभिञ्ञाय भिक्खु बुद्धस्स सावको
सक्कारं नाभिनन्देय्य विवेकमनुब्रूहये १६

६—पण्डितवग्गो

७६ नीधीनं'व पवत्तारं यं पस्से वज्जदस्सिनं
निग्गय्हवादिं मेधाविं तादिसं पण्डितं भजे
तादिसं भजमानस्स सेय्यो होति न पापियो १
७७ ओवदेय्यानुसासेय्य असब्भा च निवारये
सतं हि सो पियो होति असतं होति अप्पियो २
७८ न भजे पापके मित्ते न भजे पुरिसाधमे
भजेथ मित्ते कल्याणे भजेथ पुरिसुत्तमे ३
७९ धम्मपीती सुखं सेति विप्पसन्नेन चेतसा
अरियप्पवेदिते धम्मे सदा रमति पण्डितो ४

८० उदकं हि नयन्ति नेत्तिका उसुकारा नमयन्ति तेजनं
दारुं नमयन्ति तच्छका अत्तानं दमयन्ति पण्डिता ५

८१ सेलो यथा एकघनो वातेन न समीरति
एवं निन्दापसंसासु न समिञ्जन्ति पण्डिता ६

८२ यथापि रहदो गम्भीरो विप्पसन्नो अनाविलो
एवं धम्मानि सुत्वान विप्पसीदन्ति पण्डिता ७

८३ सब्बत्थ वे सप्पुरिसा चजन्ति न कामकामा लपयन्ति सन्तो
सुखेन फुट्ठा अथवा दुखेन न उच्चावचं पण्डिता दसयन्ति ८

८४ न अत्तहेसु न परस्स हेतु
न पुत्तमिच्छे न धनं न रट्ठं
न इच्छेय्य अधम्मेन समिद्धिमत्तनो
स सीलवा पञ्ञवा धम्मिको सिया ९

८५ अप्पका ते मनुस्सेसु ये जना पारगामिनो
अथायं इतरा पजा तीरमेवानुधावति १०

८६ ये च खो सम्मदक्खाते धम्मे धम्मानुवत्तिनो
ते जना पारमेस्सन्ति मच्चुधेय्यं सुदुत्तरं ११

८७ कण्हं धम्मं विप्पहाय सुक्कं भावेथ पण्डितो
ओका अनोकं आगम्म विवेके यत्थ दूरमं १२

८८ तत्राभिरतिमिच्छेय्य हित्वा कामे अकिञ्चनो
परियोदपेय्य अत्तानं चित्तक्लेसेहि पण्डितो १३

८९ येसं सम्बोधि-अङ्गेसु सम्मा चित्तं सुभावितं
आदान-पटिनिस्सग्गे अनुपादाय ये रता
खीणासवा जुतीमन्तो ते लोके परिनिब्बुता १४

७—अरहन्तवग्गो

९० गतद्धिनो विसोकस्स विप्पमुत्तस्स सब्बधि
सब्बगन्थप्पहीनस्स परिलाहो न विज्जति १

९१ उय्युञ्जन्ति सतीमन्तो न निकेते रमन्ति ते
हंसा'व पल्ललं हित्वा ओकमोकं जहन्ति ते २

९२ येसं सन्निचयो नत्थि ये परिञ्ञातभोजना
सुञ्ञतो अनिमित्तो च विमोक्खो यस्स गोचरो
आकासे'व सकुन्तानं गति तेसं दुरन्नया ३

९३ यस्सा'सवा परिक्खीणा आहारे च अनिस्सितो
सुञ्ञतो अनिमित्तो च विमोक्खो यस्स गोचरो
आकासे'व सकुन्तानं पदं तस्स दुरन्नयं ४

९४ यस्सिन्द्रियानि समथं गतानि, अस्सा यथा सारथिना सुदन्ता
पहीनमानस्स अनासवस्स, देवापि तस्स पिहयन्ति तादिनो ५

९५ पठवीसमो नो विरुज्झति इन्दखीलूपमो तादि सुब्बतो
रहदो'व अपेतकद्दमो संसारा न भवन्ति तादिनो ६

९६ सन्तं तस्स मनं होति सन्ता वाचा च कम्म च
सम्मदञ्ञा विमुत्तस्स उपसन्तस्स तादिनो ७

९७ अस्सद्धो अकतञ्ञू च सन्धिच्छेदो च यो नरो
हतावकासो वन्तासो स वे उत्तमपोरिसो ८

९८ गामे वा यदि वारञ्ञे निन्ने वा यदि वा थले
यत्थारहन्तो विहरन्ति तं भूमिं रामणेय्यकं ९

९९ रमणीयानि अरञ्ञानि यत्थ न रमते जनो
वीतरागा रमिस्सन्ति न ते कामगवेसिनो १०

८--सहस्सवग्गो

१०० सहस्समपि चे वाचा अनत्थपदसंहिता
एकं अत्थपद सेय्यो यं सुत्वा उपसम्मति १

१०१ सहस्समपि चे गाथा अनत्थपदसंहिता
एक गाथपदं सेय्यो यं सुत्वा उपसम्मति २

१०२ यो च गाथासत भासे अनत्थपदसहिता
एकं धम्मपदं सेय्यो यं सुत्वा उपसम्मति ३

१०३ यो सहस्सं सहस्सेन सङ्गामे मानुसे जिने
एकं च जेय्यमत्तानं स वे सङ्गामजुत्तमो ४

१०४ अत्ता हवे जित सेय्यो या चायं इतरा पजा
अत्तदन्तस्स पोसस्स निच्चं सञ्ञतचारिनो ५

१०५ नेव देवो न गन्धब्बो न मारो सह ब्रह्मना
जित अपजितं कयिरा तथारूपस्स जन्तुनो ६

१०६ मासे मासे सहस्सेन यो यजेथ सत समं
एकञ्च भावितत्तानं मुहुत्तमपि पूजये ७
सा येव पूजना सेय्यो यं चे वस्ससत हुतं ७

१०७ यो च वस्ससतं जन्तु अग्गि परिचरे वने
एकञ्च भावितत्तानं मुहुत्तमपि पूजये
सा येव पूजना सेय्यो यं चे वस्ससत हुतं ८

१०८ यं किञ्चि यिट्ठं च हुतं च लोके
संवच्छरं यजेथ पुञ्ञपेक्खो
सब्बम्पि तं न चतुभागमेति
अभिवादना उज्जुगतेसु सेय्यो ९

१०९ अभिवादनसीलिस्स निच्चं वद्धापचायिनो
चत्तारो धम्मा वड्ढन्ति आयु वण्णो सुखं बलं १०

११० यो च वस्ससतं जीवे दुस्सीलो असमाहितो
एकाहं जीवितं सेय्यो सीलवन्तस्स झायिनो ११

१११ यो च वस्ससतं जीवे दुप्पञ्ञो असमाहितो
एकाहं जीवितं सेय्यो पञ्ञावन्तस्स झायिनो १२

११२ यो च वस्ससतं जीवे कुसीतो हीनवीरियो
एकाहं जीवितं सेय्यो विरियमारभतो दळ्हं १३

११३ यो च वस्ससतं जीवे अपस्सं उदयब्बयं
एकाहं जीवितं सेय्यो पस्सतो उदयब्बयं १४

११४ यो च वस्ससतं जीवे अपस्सं अमतं पदं
एकाहं जीवितं सेय्यो पस्सतो अमतं पदं १५

११५ यो च वस्ससतं जीवे अपस्सं धम्ममुत्तमं
एकाहं जीवितं सेय्यो पस्सतो धम्ममुत्तमं १६

९--पापवग्गो

११६ अभित्थरेथ कल्याणे पापा चित्तं निवारये
दन्धं हि करोतो पुञ्ञं पापस्मिं रमते मनो १

११७ पापञ्चे पुरिसो कयिरा न तं कयिरा पुनप्पुनं
न तम्हि छन्दं कयिराथ दुक्खो पापस्स उच्चयो २

११८ पुञ्ञञ्चे पुरिसो कयिरा कयिराथेनं पुनप्पुनं
तम्हि छन्दं कयिराथ सुखो पुञ्ञस्स उच्चयो ३

११९ पापोपि पस्सति भद्रं याव पापं न पच्चति
यदा च पच्चति पापं अथ पापो पापानि पस्सति ४

१२० भद्रोपि पस्सति पापं याव भद्रं न पच्चति
यदा च पच्चति भद्रं अथ भद्रो भद्रानि पस्सति ५

१२१ मावमञ्ञेथ पापस्स न मन्तं आगमिस्सति
उदबिन्दुनिपातेन उदकुम्भोपि पूरति
पूरति बालो पापस्स थोकथोकम्पि आचिनं ६

१२२ मावमञ्ञेथ पुञ्ञस्स न मन्त आगमिस्सति
उदबिन्दुनिपातेन उदकुम्भोपि पूरति
पूरति धीरो पुञ्ञस्स थोकथोकम्पि आचिनं ७

१२३ वाणिजो'व भयं मग्गं अप्पसत्थो महद्धनो
विसं जीवितुकामो'व पापानि परिवज्जये ८

१२४ पाणिम्हि चे वणो नास्स हरेय्य पाणिना विसं
नाब्बणं विसमन्वेति नत्थि पाप अकुब्बतो ९

१२५ यो अपदुट्ठस्स नरस्स दुस्सति सुद्धस्स पोसस्स अनङ्गणस्स
तमेव बालं पच्चेति पापं सुखुमो रजो पटिवातं'व खित्तो १०

१२६ गब्भमेके उप्पज्जन्ति निरय पापकम्मिनो
सग्गं सुगतिनो यन्ति परिनिब्बन्ति अनासवा ११

१२७ न अन्तलिक्खे न समुद्दमज्झे न पब्बतानं विवरं पविस्स
न विज्जती सो जगतिप्पदेसो यत्थट्ठितो मुञ्चेय्य पापकम्मा १२

१२८ न अन्तलिक्खे न समुद्दमज्झे न पब्बतानं विवरं पविस्स
न विज्जती सो जगतिप्पदेसो यत्थट्ठितं नप्पसहेय्य मच्चू १३

१०—दण्डवग्गो

१२९ सब्बे तसन्ति दण्डस्स सब्बे भायन्ति मच्चुनो
अत्तानं उपमं कत्वा न हनेय्य न घातये १

१३० सब्बे तसन्ति दण्डस्स सब्बेसं जीवितं पियं
अत्तानं उपमं कत्वा न हनेय्य न घातये २

१३१ सुखकामानि भूतानि यो दण्डेन विहिंसति
अत्तनो सुखमेसानो पेच्च सो न लभते सुखं ३

१३२ सुखकामानि भूतानि यो दण्डेन हिंसति
अत्तनो सुखमेसानो पेच्च सो लभते सुखं ४

१३३ मावोच फरुसं कञ्चि वुत्ता पटिवदेय्यु तं
दुक्खा हि सारम्भकथा पटिदण्डा फुसेय्यु तं ५

१३४ सचे नेरेसि अत्तानं कंसो उपहतो यथा
एस पत्तोसि निब्बानं सारम्भो ते न विज्जति ६

१३५ यथा दण्डेन गोपालो गावो पाचेति गोचरं
एवं जरा च मच्चू च आयुं पाचेन्ति पाणिनं ७

१३६ अथ पापानि कम्मानि करं बालो न बुज्झति
सेहि कम्मेहि दुम्मेधो अग्गिदड्ढो'व तप्पति ८

१३७ यो दण्डेन अदण्डेसु अप्पदुट्ठेसु दुस्सति
दसन्नमञ्ञतरं ठानं खिप्पमेव निगच्छति ९

१३८ वेदनं फरुसं जानिं सरीरस्स च भेदनं
गरुकं वापि आबाधं चित्तक्खेपं व पापुणे १०

१३९ राजतो वा उपस्सग्गं अब्भक्खानं व दारुणं
परिक्खयं व ञातीनं भोगानं व पभङ्गुरं ११

१४० अथवस्स अगारानि अग्गी डहति पावको
कायस्स भेदा दुप्पञ्ञो निरयं सो'पपज्जति १२

१४१ न नग्गचरिया न जटा न पङ्का
नानासका थण्डिलसायिका वा
रजो व जल्लं उक्कुटिकप्पधानं
सोधेन्ति मच्चं अवितिण्णकङ्खं १३

१४२ अलङ्कतो चेपि समं चरेय्य
सन्तो दन्तो नियतो ब्रह्मचारी
सब्बेसु भूतेसु निधाय दण्डं
सो ब्राह्मणो सो समणो स भिक्खू १४

१४३ हिरीनिसेधो पुरिसो कोचि लोकस्मि विज्जति
यो निन्द अप्पबोधति अस्सो भद्रो कसामिव १५

१४४ अस्सो यथा भद्रो कसानिविट्ठो
आतापिनो संवेगिनो भवाथ
सद्धाय सीलेन च वीरियेन च
समाधिना धम्मविनिच्छयेन च
सम्पन्नविज्जाचरणा पतिस्सता
पहस्सथ दुक्खमिदं अनप्पकं १६

१४५ उदकं हि नयन्ति नेत्तिका उसुकारा नमयन्ति तेजनं
दारुं नमयन्ति तच्छका अत्तानं दमयन्ति सुब्बता १७

११-जरावग्गो

१४६ कोनुहासो किमानन्दो निच्चं पज्जलिते सति
अन्धकारेन ओनद्धा पदीपं न गवेस्सथ १

१४७ पस्स चित्तकतं बिम्बं अरुकायं समुस्सितं
आतुरं बहुसंकप्पं य स नत्थि धुवं ठिति २

१४८ परिजिण्णमिदं रूपं रोगनिड्डं पभङ्गुरं
भिज्जति पूतिसन्देहो मरणन्तं हि जीवितं ३

१४९ यानि'मानि अपत्थानि अलाबूनेव सारदे
कापोतकानि अट्ठीनि तानि दिस्वान का रति ४

१५० अट्ठीनं नगरं कतं मंसलोहितलेपनं
यत्थ जरा च मच्चू च मानो मक्खो च ओहितो ५

१५१ जीरन्ति वे राजरथा सुचित्ता अथो सरीरम्पि जरं उपेति
सतं च धम्मो न जरं उपेति सन्तो हवे सब्भि पवेदयन्ति ६

१५२ अप्पस्सुतायं पुरिसो बलिवद्दो'व जीरति
मंसानि तस्स वड्ढन्ति पञ्जा तस्स न वड्ढति ७

१५३ अनेकजातिसंसारं सन्धाविस्सं अनिब्बिसं
गहकारकं गवेसन्तो दुक्खा जाति पुनप्पुनं ८

१५४ गहकारक ! दिट्ठोसि पुन गेहं न काहसि
सब्बा ते फासुका भग्गा गहकूटं विसङ्खितं
विसङ्खारगतं चित्तं तण्हानं खयमज्झगा ९

१५५ अचरित्वा ब्रह्मचरियं अलद्धा योब्बने धनं
जिण्णकोञ्चा'व झायन्ति खीणमच्छे'व पल्लले १०

१५६ अचरित्वा ब्रह्मचरियं अलद्धा योब्बने धनं
सेन्ति चापातिखित्ता'व पुराणानि अनुत्थुनं ११

१२-अत्तवग्गो

१५७ अत्तानं चे पियं जञ्ञा रक्खेय्य तं सुरक्खितं
तिण्णमञ्ञतरं याम पटिजग्गेय्य पण्डितो १

१५८ अत्तानमेव पठमं पतिरूपे निवेसये
अथञ्ञमनुसासेय्य न किलिस्सेय्य पण्डितो २

१५९ अत्तानञ्चे तथा कयिरा यथञ्ञमनुसासति
सुदन्तो वत दम्मेथ अत्ता हि किर दुद्दमो ३

१६० अत्ता हि अत्तनो नाथो को हि नाथो परो सिया
अत्तना'व सुदन्तेन नाथं लभति दुल्लभं ४

१६१ अत्तना'व कतं पापं अत्तजं अत्तसम्भवं
अभिमन्थति दुम्मेधं वजिरं'व'स्ममयं मणिं ५

१६२ यस्सच्चन्तदुस्सीलयं मालुवा सालमिवोततं
करोति सो तथत्तानं यथा नं इच्छति दिसो ६

१६३ सुकरानि असाधूनि अत्तनो अहितानि च
यं वे हितञ्च साधुञ्च तं वे परमदुक्करं ७

१६४ यो सासनं अरहतं अरियानं धम्मजीविनं
पटिक्कोसति दुम्मेधो दिट्ठिं निस्साय पापिकं
फलानि कट्ठकस्सेव अत्तघञ्ञाय फल्लति ८

१६५ अत्तना'व कतं पापं अत्तना संकिलिस्सति
अत्तना अकतं पापं अत्तना'व विसुज्झति
सुद्धि असुद्धि पच्चत्तं नाञ्ञो अञ्ञं विसोधये ९

१६६ अत्तदत्थं परत्थेन बहुनापि न हापये
अत्तदत्थमभिञ्ञाय सदत्थपसुतो सिया १०

१३-लोकवग्गो

१६७ हीनं धम्मं न सेवेय्य, पमादेन न संवसे
मिच्छा दिट्ठि न सेवेय्य न सिया लोकवड्ढनो १

१६८ उत्तिट्ठे नप्पमज्जेय्य धम्मं सुचरितं चरे
धम्मचारी सुखं सेति अस्मि लोके परम्हि च २

१६९ धम्मं चरे सुचरित न तं दुच्चरितं चरे
धम्मचारी सुखं सेति अस्मि लोके परम्हि च ३

१७० यथा बुब्बुलकं पस्से यथा पस्से मरीचिकं
एवं लोकं अवेक्खन्तं मच्चुराजा न पस्सति ४

१७१ एथ पस्सथिमं लोकं चित्तं राजरथूपमं
यत्थ बाला विसीदन्ति नत्थि सङ्गो विजानतं ५

१७२ यो च पुब्बे पमज्जित्वा पच्छा सो नप्पमज्जति
सो'मं लोकं पभासेति अब्भा मुत्तो'व चन्दिमा ६

१७३ यस्स पापं कतं कम्मं कुसलेन पिधीयति
सो'मं लोकं पभासेति अब्भा मुत्तो'व चन्दिमा ७

१७४ अन्धभूतो अयं लोको तनुकेत्थ विपस्सति
सकुन्तो जालमुत्तो'व अप्पो सग्गाय गच्छति ८

१७५ हंसादिच्चपथे यन्ति आकासे यन्ति इद्धिया
नीयन्ति धीरा लोकम्हा जेत्वा मारं सवाहिनिं ९

१७६ एकं धम्मं अतीतस्स मुसावादिस्स जन्तुनो
वितिण्णपरलोकस्स नत्थि पापं अकारियं १०

१७७ न वे कदरिया देवलोकं वजन्ति
बाला हवे नप्पसंसन्ति दान
धीरो च दानं अनुमोदमानो
तेनेव सो होति सुखी परत्थ ११

१७८ पथव्या एकरज्जेन सग्गस्स गमनेन वा
सब्बलोकाधिपच्चेन सोतापत्तिफलं वरं १२

१४–बुद्धवग्गो

१७९ यस्स जितं नावजीयति जितमस्स नो याति कोचि लोके
तं बुद्धमनन्तगोचरं अपदं केन पदेन नेस्सथ १

१८० यस्स जालिनी विसत्तिका तण्हा नत्थि कुहिञ्चि नेतवे
तं बुद्धमनन्तगोचरं अपदं केन पदेन नेस्सथ २

१८१ ये झानपसुता धीरा नेक्खम्मूपसमे रता
देवापि तेसं पिहयन्ति सम्बुद्धानं सतीमतं ३

१८ किच्छो मनुस्सपटिलाभो किच्छं मच्चान जीवितं
किच्छं सद्धम्मसवण किच्छो बुद्धान उप्पादो ४

१८३ सब्बपापस्स अकरणं कुसलस्स उपसम्पदा
सचित्तपरियोदपनं एतं बुद्धान' सासन ५

१८४ खन्ती परमं तपो तितिक्खा निब्बानं परमं वदन्ति बुद्धा
न हि पब्बजितो परूपघाती समणो होति परं विहेठयन्तो ६

१८५ अनूपवादो अनूपघातो पातिमोक्खे च सवरो
मत्तञ्ञता च भत्तस्मिं पन्तञ्च सयनासनं
अधिचित्ते च आयोगो एतं बुद्धान' सासनं ७

१८६ न कहापणवस्सेन तित्ति कामेसु विज्जति
अप्पस्सादा दुखा कामा इति विञ्ञाय पण्डितो ८

१८७ अपि दिब्बेसु कामेसु रतिं सो नाधिगच्छति
तण्हक्खयरतो होति . सम्मासम्बुद्धसावको ९

१८८ बहुं वे सरणं यन्ति पब्बतानि वनानि च
आरामरुक्खचेत्यानि मनुस्सा भयतज्जिता १०

१८९ नेतं खो सरणं खेमं नेतं सरणमुत्तमं
नेतं सरणमागम्म सब्बदुक्खा पमुच्चति ११

१९० यो च बुद्धञ्च धम्मञ्च संघञ्च सरणं गतो
चत्तारि अरियसच्चानि सम्मप्पञ्ञाय पस्सति १२

१९१ दुक्खं दुक्खसमुप्पादं दुक्खस्स च अतिक्कमं
अरियञ्चट्ठङ्गिकं मग्गं दुक्खूसमगामिनं १३

१९२ एतं खो सरणं खेमं एतं सरणमुत्तमं
एतं सरणमागम्य सब्बदुक्खा पमुच्चति १४

१९३ दुल्लभो पुरिसाजञ्ञो न सो सब्बत्थ जायति
यत्थ सो जायति धीरो तं कुलं सुखमेधति १५

१९४ सुखो बुद्धानं उप्पादो सुखा सद्धम्मदेसना
सुखा संघस्स सामग्गी समग्गानं तपो सुखो १६

१९५ पूजारहे पूजयतो बुद्धे यदि व सावके
पपञ्चसमतिक्कन्ते तिण्णसोकपरिद्दवे १७

१९६ ते तादिसे पूजयतो निब्बुते अकुतोभये
न सक्का पुञ्ञं संखातुं इमेत्तम्पि केनचि १८

१५—सुखवग्गो

१९७ सुसुखं वत ! जीवाम वेरिनेसु अवेरिनो
वेरिनेसु मनुस्सेसु विहराम अविरिनो १

१९८ सुसुखं वत ! जीवाम आतुरेसु अनातुरा
आतुरेसु मनुस्सेसु विहराम अनातुरा २

१९९ सुसुखं वत ! जीवाम उस्सुकेसु अनुस्सुका
उस्सुकेसु मनुस्सेसु विहराम अनुस्सुका ३

२०० सुसुखं वत ! जीवाम येसं नो नत्थि किञ्चनं
पीतिभक्खा भविस्साम देवा आभस्सारा यथा ४

२०१ जयं वेरं पसवति दुक्खं से'त पराजितो
उपसन्तो सुखं सेति हित्वा जयपराजयं ५

२०२ नत्थि रागसमो अग्गि नत्थि दोससमो कलि
नत्थि खन्धसमा दुक्खा नत्थि सन्तिपरं सुखं ६

२०३ जिघच्छा परमा रोगा, संखारा परमा दुखा
एतं ञत्वा यथाभूत निब्बानं परमं सुखं ७

२०४ आरोग्यपरमा लाभा सन्तुट्ठी परमं धनं
विस्सासपरमा ञाती निब्बानं परमं सुखं ८

२०५ पविवेकरसं पीत्वा रसं उपसमस्स च
निद्दरो होति निप्पापो धम्मपीतिरसं पिवं ९

२०६ साधु दस्सनमरियानं सन्निवासो सदा सुखो
अदस्सनेन बालानं निच्चमेव सुखी सिया १०

२०७ बालसंगतिचारी हि दीघमद्धान सोचति
दुक्खो बालेहि संवासो अमित्तेनेव सब्बदा
धीरो च सुखसंवासो ञातीनं'व समागमो ११

२०८ तस्माहि:—
धीरञ्च पञ्ञञ्च बहुस्सुत च धोरय्हसील वतवन्तमरियं
तं तादिस सप्पुरिसं सुमेधं भजेथ नक्खत्तपथं'व चन्दिमा १२

१६- पियवग्गो

२०९ अयोगे युञ्जमत्तानं योगस्मिञ्च अयोजय
अथं हित्वा पियग्गाही पिहेतत्तानुयोगिनं १
२१० मा पियेहि समागञ्छि अप्पियेहि कुदाचनं
पियानं अदस्सनं दुक्खं अप्पिनानञ्च दस्सनं २
२११ तस्मा पियं न कयिराथ पियापायो हि पापको
गन्था तेसं न विज्जन्ति येसं नत्थि पियाप्पियं ३
२१२ पियतो जायते सोको पियतो जायते भय
पियतो विप्पमुत्तस्स नत्थि सोको कुतो भयं ४
२१३ पेमतो जायते सोको पेमतो जायते भयं
पेमतो विप्पमुत्तस्स नत्थि सोको कुतो भय ५
२१४ रतिया जायते सोको रतिया जायते भयं
रतिया विप्पमुत्तस्स नत्थि सोको कुतो भयं ६
२१५ कामतो जायते सोको कामतो जायते भयं
कामतो विप्पमुत्तस्स नत्थि सोको कुतो भयं ७

२१६ तण्हाय जायते सोको तण्हाय जायते भयं
तण्हाय विप्पमुत्तस्स नत्थि सोको कुतो भयं ८

२१७ सीलदस्सनसम्पन्नं धम्मट्ठं सच्चवादिनं
अत्तनो कम्मकुब्बानं त जनो कुरुते पियं ९

२१८ छन्दजातो अनक्खातो मनसा च फुटो सिया
कामेसु च अप्पटिबद्धचित्तो उद्धसोतो'ति वुच्चति १०

२१९ चिरप्पवासिं पुरिसं दूरतो सोत्थिमागतं
ञातिमित्ता सुहज्जा च अभिनन्दन्ति आगत ११

२२० तथेव कतपुञ्ञम्पि अस्मा लोका परं गतं
पुञ्ञानि पतिगण्हन्ति पियं ञातीव आगतं १२

१७—कोधवग्गो

२२१ कोधं जहे विप्पजहेय्य मानं
सञ्ञोजनं सब्बमति कमेय्य
तं नामरूपस्मिं असज्जमानं
अकिञ्चनं नानुपतन्ति दुक्खा १

२२२ यो वे उप्पतितं कोधं रथं भन्तं'व धारये
तमहं सारथिं ब्रूमि, रस्मिग्गाहो इतरो जनो २

२२३ अक्कोधेन जिने कोधं असाधुं साधुना जिने
जिने कदरियं दानेन सच्चेन अलिकवादिनं ३

२२४ सच्चं भणे न कुज्झेय्य दज्जाप्पस्मिम्पि याचितो
एतेहि तीहि ठानेहि गच्छे देवान सन्तिके ४

२२५ अहिंसका ये मुनयो निच्चं कायेन संवुता
ते यन्ति अच्चुतं ठानं यत्थ गन्त्वा न सोचरे ५

२२६ सदा जागरमानानं अहोरत्तानुसिक्खिनं
निब्बानं अधिमुत्तानं अत्थं गच्छन्ति आसवा ६

२२७ पोराणमेतं अतुल ! नेतं अज्जतनामिव
निन्दन्ति तुण्हीमासीनं निन्दन्ति बहुभाणिनं
मितभाणिनम्पि निन्दन्ति नत्थि लोके अनिन्दितो ७

२२८ न चाहु न च भविस्सति न चेतरहि विज्जति
एकन्तं निन्दितो पोसो एकन्तं वा पसंसितो ८

२२९ यञ्चे विञ्ञू पसंसन्ति अनुविच्च सुवे सुवे
अच्छिद्दवुत्तिं मेधाविं पञ्ञासीलसमाहितं ९

२३० नेक्खं जम्बोनदस्सेव को तं निन्दितुमरहति
देवापि नं पसंसन्ति ब्रह्मुनापि पससितो १०

२३१ कायप्पकोपं रक्खेय्य कायेन सवुतो सिया
कायदुच्चरितं हित्वा कायेन सुचरितं चरे ११

२३२ वचीपकोपं रक्खेय्य वाचाय संवुतो सिया
वची दुच्चरितं हित्वा वाचाय सुचरितं चरे १२

२३३ मनोपकोपं रक्खेय्य मनसा संवुतो सिया
मनोदुच्चरितं हित्वा मनसा सुचरितं चरे १३

२३४ कायेन संवुता धीरा अथो वाचाय संवुता
मनसा सवुता धीरा ते वे सुपरिसंवुता १४

१८—मलवग्गो

२३५ पण्डुपलासो'व दानिसि यमपुरिसापि च तं उपट्ठिता
उय्योगमखे च तिट्ठसि पाथेय्यम्पि च ते न विज्जति १

२३६ सो करोहि दीपमत्तनो खिप्पं वायम पण्डितो भव
निद्धन्तमलो अनङ्गणो दिब्बं अरियभूमिमेहिसि २

२३७ उपनीतवयो च दानिसि सम्पयातोसि यमस्स सन्तिकं
वासोपि च ते नत्थि अन्तरा पाथेय्यम्पि च ते न विज्जति ३

२३८ सो करोहि दीपमत्तनो खिप्प वायम पण्डितो भव
निद्धन्तमलो अनङ्गणो न पुन जातिजरं उपेहिसि ४

२३९ अनुपुब्बेन मेधावी थोकथोकं खणे खणे
कम्मारो रजतस्सेव निद्धमे मलमत्तनो ५

२४० अयसा'व मलं समुट्ठितं तदुट्ठाय तमेव खादति
एवं अतिधोनचारिनं सककम्मानि नयन्ति दुग्गतिं ६

२४१ असज्झायमला मन्ता अनुट्ठानमला घरा
मलं वण्णस्स कोसज्जं पमादो रक्खतो मलं ७

२४२ मलित्थिया दुच्चरितं मच्छेरं ददतो मल
मला वे पापका धम्मा अस्मिं लोके परम्हि च ८

२४३ ततो मला मलतरं अविज्जा परमं मलं
एतं मलं पहत्वान निम्मला होथ भिक्खवो ९

२४४ सुजीवं अहिरिकेन काकसूरेन धंसिना
पक्खन्दिना पगब्भेन संकिलिट्ठेन जीवितं १०

२४५ हिरिमता च दुज्जीवं निच्चं सुचिगवेसिना
अलीनेनप्पगब्भेन सुद्धाजीवेन पस्सता ११

२४६ यो पाणमतिपातेति मुसावादञ्च भासति
लोके अदिन्नं आदियति परदारञ्च गच्छति १२

२४७ सुरामेरयपानञ्च यो नरो अनुयुञ्जति
इधेवमेसो लोकस्मिं मूलं खनति अत्तनो १३

२४८ एवं भो पुरिस ! जानाहि पापधम्मा असञ्ञता
मा त लोभो अधम्मा च चिरं दुक्खाय रन्धयुं १४

२४९ ददाति वे यथासद्धं यथापसादनं जनो
तत्थ यो मङ्कु भवति परेसं पानभोजनं
न सो दिवा वा रत्तिं वा समाधिं अधिगच्छति १५

२५० यस्स चेतं समुच्छिन्नं मूलघच्चं समूहतं
स वे दिवा वा रत्तिं वा समाधिं अधिगच्छति १६

२५१ नत्थि रागसमो अग्गि नत्थि दोससमो गहो
नत्थि मोहसमं जालं नत्थि तण्हासमा नदी १७

२५२ सुदस्सं वज्जमञ्ञेसं अत्तनो पन दुद्दसं
परेसं हि सो वज्जानि ओपुणाति यथाभुसं
अत्तनो पन छादेति कलिं व कितवा सठो १८

२५३ परवज्जानुपस्सिस्स निच्चं उज्झानसञ्ञिनो
आसवा तस्स वड्ढन्ति आरा सो आसवक्खया १९

२५४ आकासे च पदं नत्थि समणो नत्थि बाहिरे
पपञ्चाभिरता पजा निप्पपञ्चा तथागता २०

२५५ आकासे च पद नत्थि समणो नत्थि बाहिरे
सङ्खारा सस्सता नत्थि, नत्थि बुद्धानमिञ्जित २१

१९--धम्मट्ठवग्गो

२५६ न तेन होति धम्मट्ठो येनत्थं सहसा नये
यो च अत्थ अनत्थञ्च उभो निच्छेय्य पण्डितो १

२५७ असाहसेन धम्मेन समेन नयती परे
धम्मस्स गुत्तो मेधावी धम्मट्ठो'ति पवुच्चति २

२५८ न तेन पण्डितो होति यावता बहु भासति
खेमी अवेरी अभयो पण्डितो'ति पवुच्चति ३

२५९ न तावता धम्मधरो यावता बहु भासति
यो च अप्पम्पि सुत्वान धम्मं कायेन पस्सति
स वे धम्मधरो होति यो धम्म नप्पमज्जति ४

२६० न तेन थेरो होति येनस्स पलित सिरो
परिपक्को वयो तस्स मोघजिण्णो'ति वुच्चति ५

२६१ यम्हि सच्चञ्च धम्मो च अहिंसा सञ्ञमो दमो
स वे वन्तमलो धीरो थेरो'ति पवुच्चति ६

२६२ न वाक्करणमत्तेन वण्णपोक्खरताय वा
साधुरूपो नरो होति इस्सुकी मच्छरी सठो ७

२६३ यस्स चेतं समुच्छिन्नं मूलघच्चं समूहतं
स वन्तदोसो मेधावी साधुरूपोति वुच्चति ८

२६४ न मुण्डकेन समणो अब्बतो अलिकं भणं
इच्छालाभसमापन्नो समणो किं भविस्सति ९

२६५ यो च समेति पापानि अणुं थूलानि सब्बसो
समितत्ता हि पापानं समणो'ति पवुच्चति १०

२६६ न तेन भिक्खु होति यावता भिक्खते परे
विस्सं धम्मं समादाय भिक्खु होति न तावता ११

२६७ योध पुञ्ञञ्च पापञ्च वाहित्वा ब्रह्मचरियवा
सङ्खाय लोके चरति स वे भिक्खू'ति वुच्चति १२

२६८ न मोनेन मुनी होति मूल्हरूपो अविद्दसु
यो च तुलं'व पग्गय्ह वरमादाय पण्डितो १३

२६९ पापानि परिवज्जेति स मुनी तेन सो मुनी
यो मुनाति उभो लोके मुनी तेन पवुच्चति १४

२७० न तेन अरियो होति येन पाणानि हिंसति
अहिंसा सब्बपाणानं अरियो'ति पवुच्चति १५

२७१ न सीलब्बतमत्तेन बाहुसच्चेन वा पुन
अथवा समाधि लाभेन विवित्तसयनेन वा १६

२७२ फुसामि नेक्खम्मसुखं अपुथुज्जनसेवितं
भिखु ! विस्सासमापादि अप्पत्तो आसवक्खयं १७

२०—*मग्गवग्गो*

२७३ मग्गानट्ठङ्गिको सेट्ठो सच्चानं चतुरो पदा
विरागो सेट्ठो धम्मानं द्विपदानञ्च चक्खुमा १

२७४ एसोव मग्गो नत्थञ्ञो दस्सनस्स विसुद्धिया
एतं हि तुम्हे पटिपज्जथ मारस्सेतं पमोहनं २

२७५ एतं हि तुम्हे पटिन्ना दुक्खस्सन्तं करिस्सथ
अक्खातो वे मया मग्गो अञ्ञाय सल्लसन्थनं ३

२७६ तुम्हेहि किच्चं आतप्पं अक्खातारो तथागता
पटिपन्ना पमोक्खन्ति झायिनो मारबन्धना ४

२७७ सब्बे सङ्खारा अनिच्चा'ति यदा पञ्ञाय पस्सति
अथ निब्बिन्दति दुक्खे, एस मग्गो विसुद्धिया ६

२७८ सब्बे सङ्खारा दुक्खा'ति यदा पञ्ञाय पस्सति
अथ निब्बिन्दति दुक्खे एस मग्गो विसुद्धिया ६

२७९ सब्बे धम्मा अनत्ता'ति यदा पञ्ञाय पस्सति
अथ निब्बिन्दति दुक्खे एस मग्गो विसुद्धिया ७

२८० उट्ठानकालम्हि अनुट्ठहानो युवा बली आलसियं उपेतो
संसन्नसङ्कप्पमनो कुसीतो पञ्ञाय मग्गं अलसो न विदन्ति ८

२८१ वाचानुरक्खी मनसा सुसंवुतो कायेन च अकुसलं न कयिरा ९
एते तयो कम्मपथे विसोधये आराधये मग्गमिसिप्पवेदित

२८२ योगा वे जायती भूरि अयोगा भूरिसङ्खयो
एत द्वेधापथं ञत्वा भवाय विभवाय च
तथत्तानं निवेसेय्य यथा भूरि पवड्ढति १०

२८३ वनं छिन्दथ मा रुक्खं वनतो जायती भयं
छेत्वा वनञ्च वनथञ्च निब्बना होथ भिक्खवो ११

२८४ यावं हि वनथो न छिज्जति अणमत्तोपि नरस्स नारिसु
पटिबद्धमनो नु ताव सो वच्छो खीरपको'व मातरि १२

२८५ उच्छिन्द सिनेहमत्तनो कुमुदं सारदिकं' व पाणिना
सन्तिमग्गमेव ब्रूहय निब्बान सुगतेन देसितं १३

२८६ इध वस्सं बसिस्सामि इध हेमन्त गिम्हसु
इति बालो विचिन्तेति अन्तरायं न बुज्झति १४

२८७ तं पुत्तपसुसम्मत्तं व्यासत्तमनस नरं
सुत्तं गामं महोघो' व मच्चु आदाय गच्छति १५

२८८ न सन्ति पुत्ता ताणाय पिता नापि बन्धवा
अन्तकेनाधिपन्नस्स नत्थि ञातिसु ताणता १६

२८९ एतमत्थवसं ञत्वा पण्डितो सीलसंवुतो
निब्बानगमनं मग्गं खिप्पमेव विसोधये १७

२१--पकिण्णकवग्गो

२९० मत्तासुखपरिच्चागा पस्से चे विपुलं सुखं
चजे मत्तासुखं धीरो सम्पस्सं विपुलं सुखं १

२९१ परदुक्खूपदानेन यो अत्तनो सुखमिच्छति
वेरसंसग्गसंसट्ठो वेरा सो न परिमुच्चति २

२९२ यं हि किच्चं तदपविद्धं अकिच्चं पुन कयिरति
उन्नलानं पमत्तानं तेसं बड्ढन्ति आसवा ३

२९३ येसञ्च ससुमारद्धा निच्चं कायगतासति
अकिच्चन्ते न सेवन्ति किच्चे सातच्चकारिनो
सतानं सम्पजानानं अत्थं गच्छन्ति आसवा ४

२९४ मातरं पितरं हन्त्वा राजानो द्वे च खत्तियो
रट्ठं सानुचरं हन्त्वा अनीघो याति ब्राह्मणो ५

२९५ मातरं पितरं हन्त्वा राजानो द्वे च सोत्थिये
वेय्यग्घपञ्चमं हन्त्वा अनीघो याति ब्राह्मणो ६

२९६ सुप्पबुद्धं पबुज्झन्ति सदा गोतमसावका
येसं दिवा च रत्तो च निच्चं बुद्धगता सति ७

२९७ सुप्पबुद्धं पबुज्झन्ति सदा गोतमसावका
येसं दिवा च रत्तो च निच्चं धम्मगता सति ८

२९८ सुप्पबुद्धं पबुज्झन्ति सदा गोतमसावका
येसं दिवा च रत्तो च निच्चं संघगता सति ९

२९९ सुप्पबुद्धं पबुज्झन्ति सदा गोतमसावका
येसं विवा च रत्तो च निच्चं कायगता सति १०

३०० सुप्पबुद्धं पबुज्झन्ति सदा गोतमसावका
येसं दिवा च रत्तो च अहिंसाय रतो मनो ११

३०१ सुप्पबुद्धं पबुज्झन्ति सदा गोतमसावका
येसं दिवा च रत्तो च भावनाय रतो मनो १२

३०२ दुप्पब्बज्जं दुरभिरमं दुरावासा घरा दुखा
दुक्खो 'समानसंवासो दुक्खानुपतितद्धगू
तस्मा न च अद्धगू सिया न च दुक्खानुपतितो सिया १३

३०३ सद्धो सीलेन सम्पन्नो यसोभोगसमप्पितो
यं यं पदेसं भजति तत्थ तत्थेव पूजितो १४

३०४ दूरे सन्तो पकासेन्ति हिमवन्तो'व पब्बतो
असन्तेत्थ न दिस्सन्ति रत्ति खित्ता यथा सरा १५

३०५ एकासनं एकसेय्यं एको चरमतन्दितो
एको दमय अत्तानं वनन्ते रमतो सिया १६

२२—निरयवग्गो

३०६ अभूतवादी निरय उपेति यो चापि कत्वा 'न करोमीति' चाह
उभोपि ते पेच्च समा भवन्ति निहीनकम्मा मनुजा परत्थ १

३०७ कासावकण्ठा बहवो पापधम्मा असञ्ञता
पापा पापेहि कम्मेहि निरयन्ते उपपज्जरे २

३०८ सेय्यो अयोगुलो भुत्तो तत्तो अग्गिसिखूपमो
यञ्चे भुञ्जेय्य दुस्सीलो रट्ठपिण्डं असञ्ञतो ३

३०९ चत्तारि ठानानि नरो पमत्तो आपज्जती परदारूपसेवी
अपुञ्ञलाभं न निकामसेय्यं निन्दं ततियं निरयं चतुत्थं ४

३१० अपुञ्ञलाभो च गती च पापिका
भीतस्स भीताय रती च थोकिका
राजा च दण्डं गरुकं पणेति
तस्मा नरो परदारं न सेवे ५

३११ कुसो यथा दुग्गहीतो हत्थमेवानुकन्तति।
सामञ्ञं दुप्परामट्ठं निरयाय उपकड्ढति ६

३१२ यं किञ्चि सिथिलं कम्मं सङ्किलिट्ठं च यं वतं
संकस्सरं ब्रह्मचरियं न तं होति महप्फलं ७

३१३ कयिरा चे कयिराथेनं दल्हमेनं परक्कमे।
सिथिलो हि परिब्बाजो भिय्यो आकिरते रजं ८

३१४ अकतं दुक्कतं सेय्यो पच्छा तपति दुक्कतं
कतञ्च सुकतं सेय्यो यं कत्वा नानुतप्पति ९

३१५ नगरं यथा पच्चन्तं गुत्तं सन्तरबाहिरं
एवं गोपेथ अत्ताणं खणो वे मा उपच्चगा
खणातीता हि सोचन्ति निरयम्हि समप्पिता १०

३१६ अलज्जिता ये लज्जन्ति लज्जिता ये न लज्जरे
मिच्छादिट्ठिसमादाना सत्ता गच्छन्ति दुग्गतिं ११

३१७ अभये च भयदस्सिनो भये च अभयदस्सिनो
मिच्छादिट्ठिसमादाना सत्ता गच्छन्ति दुग्गतिं १२

३१८ अवज्जे वज्जमतिनो वज्जे च'वज्जदस्सिनो
मिच्छादिट्ठिसमादाना सत्ता गच्छन्ति दुग्गतिं १३

३१९ वज्जञ्च वज्जतो ञत्वा अवज्जञ्च अवज्जतो
सम्मादिट्ठिसमादाना सत्ता गच्छन्ति सुग्गतिं १४

२३--नागवग्गो

३२० अहं नागोव सङ्गामे चापतो पतितं सरं
अतिवाक्यं तितिक्खिस्सं दुस्सीलो हि बहुज्जनो १

३२१ दन्तं नयन्ति समितिं दन्तं राजाभिरूहति
दन्तो सेट्ठो मनुस्सेसु योतिवाक्यं तितिक्खति २

३२२ रंव अस्सतरा दन्ता आजानीया च सिन्धवा
कुञ्जरा च महानागा अत्तदन्तो ततो वरं ३

३२३ न हि एतेहि यानेहि गच्छेय अगतं दिसं
यथात्तना सुदन्तेन दन्तो दन्तेन गच्छति ४

३२४ धनपालको नाम कुञ्जरो कटुकप्पभेदनो दुन्निवारियो
बद्धो कवलं न भुञ्जति सुमरति नागवनस्स कुञ्जरो ५

३२५ मिद्धी यदा होति महग्घसो च
निद्दायिता सम्परिवत्तसायी
महावराहो'व निवापपुट्ठो
पुनप्पुनं गब्भमुपेति मन्दो ६

३२६ इदं पुरे चित्तमचारि चारिकं
येनिच्छकं यत्थकामं यथासुखं
तदज्जहं निग्गहेस्सामि योनिसो
हत्थिप्पभिन्नं विय अंकुसग्गहो ७

३२७ अप्पमादरता होथ स-चित्तमनुरक्खथ
दुग्गा उद्धरथत्तानं पंके सत्तोव कुञ्जरो ८

३२८ सचे लभेथ निपकं सहायं

सद्धिं चरं साधुविहारिधीरं

अभिभुय्य सब्बानि परिस्सयानि

चरेय्य तेनत्तमनो सतीमा ९

३२९ नो चे लभेथ निपकं सहायं

सद्धिं चरं साधुविहारिधीरं

राजाव रट्ठं विजित पहाय

एको चरे मातङ्गरञ्ञेव नागो १०

३३० एकस्स चरितं सेय्यो नत्थि बाले सहायता

एको चरे न च पापानि कायिरा

अप्पोस्सुक्को मातङ्गरञ्ञेव नागो ११

३३१ अत्थम्हि जातम्हि सुखा सहाया

तुट्ठी सुखा या इतरीतरेन

पुञ्ञं सुखं जीवितसंखयम्हि

सब्बस्स दुक्खस्स सुखं पहाणं १२

३३२ सुखा मेत्तेय्यता लोके अथो पेत्तेय्यता सुखा

सुखा सामञ्ञता लोके अथो ब्रम्हञ्ञता सुखा १३

३३३ सुखं याव जरा सीलं सुखा सद्धा पतिट्ठिता

सुखो पञ्ञाय पटिलाभो पापानं अकरणं सुखं १४

२४--तण्हावग्गो

३३४ मनुजस्स पमत्तचारिनो तण्हा वड्ढति मालुवा विय
सो प्लवति हुराहुरं फलमिच्छं'व वनस्मि वानरो १

३३५ यं एसा सहती जम्मी तण्हा लोके विसत्तिका
सोका तस्स पवड्ढन्ति अभिवट्ठं'व बीरणं २

३३६ यो चेतं सहती जम्मिं तण्हं लोके दुरच्चयं
सोका तम्हा पपतन्ति उदबिन्दू'व पोक्खरा ३

३३७ तं बो वदामि भद्दं वो यावन्तेत्थ समागता
तण्हाय मूलं खणथ उसीरत्थो'व बीरणं
मा वो नलं'व सोतो' व मारो भञ्जि पुनप्पुनं ४

३३८ यथापि मूले अनुपद्दवे दल्हे छिन्नोपि रुक्खो पुनरेव रूहति
एवम्पि तण्हानुसये अनूहत निब्बत्तति दुक्खमिदं पुनप्पुनं ५

३३९ यस्स छत्तिंसति सोता मनापस्सवना भुसा
वाहा वहन्ति दुद्दिट्ठिं सङ्कप्पा रागनिस्सिता ६

३४० सवन्ति सब्बधि सोता लता उब्भिज्ज तिट्ठति
तञ्च दिस्वा लतं जातं मूलं पञ्ञाय छिन्दथ ७

३४१ सरितानि सिनेहितानि च सोमनस्सानि भवन्ति जन्तुनो
ते सोतसिता सुखेसिनो ते वे जातिजरूपगा नरा ८

३४२ तसिणाय पुरक्खता पजा परिसप्पन्ति ससो'व बाधितो
सञ्ञोजनसंसत्ता दुक्खमुपेन्ति पुनप्पुनं चिराय ९

३४३ तसिणाय पुरक्खता पजा परिसप्पन्ति ससो'व बाधितो
तस्मा तसिणं विनोदये भिक्खु आकङ्खी विरागमत्तनो १०

३४४ यो निब्बनथो वनाधिमुत्तो बनमुत्तो वनमेव धावति
तं पुग्गलमेव पस्सथ मुत्तो बन्धनमेव धावति ११

३४५ न तं दल्हं बन्धनमाहु धीरा यदायसं दारुजं बब्बजञ्च
सारत्तरत्ता मणिकुण्डलेसु पुत्तेसु दारेसु च या अपेक्खा १२

३४६ एतं दल्हं बन्धनमाहु धीरा ओहारिनं सिथिलं दुप्पमुञ्चं
एतम्पि छेत्वान परिब्बजन्ति अनपेक्खिनो कामसुखं पहाय १३

३४७ ये रागरत्तानुपतन्ति सोतं
सयं कतं मक्कटकोव जालं
एतम्पि छेत्वान वजन्ति धीरा
अनपेक्खिनो सब्बदुक्खं पहाय १४

३४८ मुञ्च पुरे मुञ्च पच्छतो मज्झे मुञ्च भवस्स पारगू
सब्बत्थ विमुत्तमानसो न पुन जातिजरं उपेहिसि १५

३४९ वितक्कपमथितस्स जन्तुनो तिब्बरागस्स सुभानुपस्सिनो
भिय्यो तण्हा पवड्ढति एस खो दल्हं करोति बन्धनं १६

३५० वितक्कूपसमे च यो रतो असुभं भवायति सदा सतो
एस खो व्यन्तिकाहिनी एसच्छेच्छति मारबन्धनं ॥१७॥

३५१ निट्ठङ्गतो असन्तासी वीततण्हो अनङ्गणो ।
अच्छिन्दि भवसल्लानि अन्तिमोयं समुस्सयो ॥१८॥

३५२ वीततण्हो अनादानो निरुत्तिपदकोविदो ।
अक्खरानं सन्निपातं जञ्ञा पुब्बापरानि च ।।
स वे अन्तिमसारीरो महापञ्ञोति वुच्चति ।।१९ ।।

३५३ सब्बाभिभू सब्बविदूहमस्मि सब्बेसु धम्मेसु अनूपलित्तो ।
सब्बञ्जहो तण्हक्खये विमुत्तो सयं अभिञ्ञाय कमुद्दिसेय्यं २०

३५४ सब्बदानं धम्मदानं जिनाति
सब्बं रसं धम्मरसो जिनाति ।
सब्बं रतिं धम्मरतो जिनाति
तण्हक्खयो सब्बदुक्खं जिनाति ।। २१ ।।

३५५ हनन्ति भोगा दुम्मेधं नो चे पारगवेसिनो ।
भोगतण्हाय दुम्मेधो हन्ति अञ्ञे'व अत्तनं ।। २२ ।।

३५६ तिणदोसानि खेत्तानि रागदोसा अयं पजा ।
तस्मा हि वीतरागेसु दिन्नं होति महप्फलं ।। २३ ।।

३५७ तिणदोसानि खेत्तानि दोसदोसा अयं पजा ।
तस्मा हि वीतदोसेसु दिन्नं होति महप्फलं ।। २४ ।।

३५८ तिणदोसानि खेत्तानि मोहदोसा अयं पजा ।
तस्मा हि वीतमोहेसु दिन्नं होति महप्फलं ।। २५ ।।

३५९ तिणदोसानि खेत्तानि इच्छादोसा अयं पजा ।।
तस्मा हि विगतिच्छेसु दिन्नं होति महप्फलं ।। २६ ।।

२५--भिक्खुवग्गो

३६० चक्खुना संवरो साधु साधु सोतेन संवरो
धाणेन संवरो साधु साधु जिह्वाय संवरो १

३६१ कायेन संवरो साधु साधु वाचाय संवरो
मनसा संवरो साधु साधु सब्बत्थ संवरो
सब्बत्थ संवुतो भिक्खु सब्बदुक्खा पमुच्चति २

३६२ हत्थसञ्ञतो पादसञ्ञतो वाचाय सञ्ञतो सञ्ञतुत्तमो
अज्झत्तरतो समाहितो एको सन्तुसितो तमाहु भिक्खुं ३

३६३ यो मुखसञ्ञतो भिक्खु मन्तभाणी अनुद्धतो
अत्थं धम्मञ्च दीपेति मधुरं तस्स भासितं ४

३६४ धम्मारामो धम्मरतो धम्मं अनुविचिन्तयं
धम्मं अनुस्सरं भिक्खु सद्धम्मा न परिहायति ५

३६५ सलाभं नातिमञ्ञेय्य नाञ्ञेसं पिहयं चरे
अञ्ञेसं पिहयं भिक्खू समाधिं नाधिगच्छति ६

३६६ अप्पलाभोपि चे भिक्खु सलाभं नातिमञ्ञति
तं वे देवा पसंसन्ति सुद्धाजीविं अतन्दितं ७

३६७ सब्बसो नामरूपस्मिं यस्स नत्थि ममायितं
असता च न सोचति स वे भिक्खूति वुच्चति ८

३६८ मेत्ताविहारी यो भिक्खु पसन्नो बुद्धसासने
अधिगच्छे पदं सन्तं संखारूपसमं सुखं ९

३६९ सिञ्च भिक्खु ! इमं नावं सिता ते लहुमेस्सति
छेत्वा रागञ्च दोसञ्च ततो निब्बानमेहिसि १०

३७० पञ्च छिन्दे पञ्च जहे पञ्च चुत्तरि भावये
पञ्च सङ्गातिगो भिक्खु ओघतिण्णोति वुच्चति ११

३७१ झाय भिक्खु! मा च पमादो मा ते कामगुणे भमस्सु चित्तं
मा लोहगुलं गिली पमत्तो मा कन्दि दुक्खमिदन्ति डय्हमानो १२

३७२ नत्थि ज्ञानं अपञ्ञस्स पञ्ञा नत्थि अझायतो
यम्हि झानञ्च पञ्ञा च स वे निब्बानसन्तिके १३

३७३ सुञ्ञागारं पविट्ठस्स सन्तचित्तस्स भिक्खुनो
अमानुसी रति होति सम्माधम्मं विपस्सतो १४

३७४ यतो यतो सम्मसति खन्धानं उदयब्बयं
लभति पीतिपामोज्जं अमतं तं विजानतं १५

३७५ तत्रायमादि भवति इध पञ्ञस्स भिक्खुनो
इन्द्रियगुत्ति सन्तुट्ठि पातिमोक्खे च संवरो
मित्ते भजस्सु कल्याणे सुद्धाजीवे अतन्दिते १६

३७६ पटिसन्थारवुत्तस्स आचारकुसलो सिया
ततो पामोज्जबहुलो दुक्खस्सन्तं करिस्सति १७

३७७ वस्सिका विय पुप्फानि मद्दवानि पमुञ्चति
एवं रागञ्च दोसञ्च विप्पमुञ्चेथ भिक्खवो १८

३७८ सन्तकायो सन्तवाचो सन्तवा सुसमाहितो
वन्तलोकामिसो भिक्खु उपसन्तोति वुच्चति १९

३७९ अत्तना चोदयत्तानं पटिवासे अत्तमत्तना
सो अत्तगुत्तो सतिमा सुखं भिक्खु विहाहिसि २०

३८० अत्ता हि अत्तनो नाथो अत्ता हि अत्तनो गति
तस्मा सञ्ञमयत्तान अस्सं भद्र'व वाणिजो २१

३८१ पामोज्जबहुलो भिक्खु पसन्नो बुद्धसासने
अधिगच्छे पदं सन्तं सखारूपसमं सुखं २२

३८२ यो हवे दहरो भिक्खु युञ्जति बुद्धसासने
सो इमं लोकं पभासेति अब्भा मुत्तोव चन्दिमा २३

२६—ब्राह्मणवग्गो

३८३ छिन्द सोतं परक्कम्म कामे पनुद ब्राह्मण
सङ्खारानं खयं ञत्वा अकतञ्ञूसि ब्राह्मण १

३८४ यदा द्वयेसु धम्मेसु पारगू होति ब्राह्मणो
अथस्स सब्बे संयोगा अत्थं गच्छन्ति जानतो २

३८५ यस्स पारं अपारं वा पारापारं न विज्जति
वीतद्दरं विसञ्ञुत्तं तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ३

३८६ झायिं विरजमासीनं कतकिच्चं अनासवं
उत्तमत्थं अनुप्पत्तं तहमं ब्रूमि ब्राह्मणं ४

३८७ दिवा तपति आदिच्चो रत्तिं आभाति चन्दिमा
सन्नद्धो खत्तियो तपति झायी तपति ब्राह्मणो
अथ सब्बमहोरत्तिं बुद्धो तपति तेजसा ५

३८८ वाहितपापोति ब्राम्हणो समचरिया समणोति वुच्चति
पब्बाजयमत्तनो मलं तस्मा पब्बजितोति वुच्चति ६

३८९ न ब्राम्हणस्स पहरेय्य नास्स मुञ्चेथ ब्राह्मणो
धि ब्राम्हणस्स हन्तारं ततो धि यस्स मुञ्चति ७

३९० न ब्राम्हणस्सेतद किञ्चि सेय्यो यदा निसेधो मनसो पियेहि
यतो यतो हिंसमनो निवत्तति ततो ततो सम्मति एव दुक्खं ८

३९१ यस्स कायेन वाचाय मनसा नत्थि दुक्कतं
संवुतं तीहि ठानेहि तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ९

३९२ यम्हा धम्मं विजानेय्य सम्मासम्बुद्धदेसित
सक्कच्चं तं नमस्सेय्य अग्गिहुत्तं व ब्राह्मणो १०

३९३ न जटाहि न गोत्तेहि न जच्चा होति ब्राह्मणो
यम्हि सच्चञ्च धम्मो चसो सुची सो च ब्राह्मणो ११

३९४ किं ते जटाहि दुम्मेध। किं ते अजिनसाटिया
अब्भन्तरं ते गहनं बाहिरं परिमज्जसि १२

३९५ पंसुकूलधरं जन्तुं किसं धमनिसन्थतं
एकं वनस्मिं झायन्तं तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं १३

३९६ न चाहं ब्राम्हणं ब्रूमि योनिजं मत्तिसम्भवं
'भो वादि' नाम सो होति स चे होति सकिञ्चनो
अकिञ्चनं अनादानं तमहं ब्रूमि ब्राहम्णं १४

३९७ सब्बसञ्ञोजनं छेत्वा यो वे न परितस्सति
सङ्गातिगं विसञ्ञुत्तं तमहं ब्रूमि ब्राहम्णं १५

३९८ छेत्था नन्दि वरत्तञ्च सन्दामं सहनुक्कमं
उक्खित्तपलिघं बुद्धं तमहं ब्रूमि ब्राहम्णं १६

३९९ अक्कोसं वधबन्धञ्च अदुट्ठो यो तितिक्खति
खन्तिबल बलानीकं तमहं ब्रूमि ब्राहम्णं १७

४०० अक्कोधनं वतवन्तं सीलवन्तं अनुस्सुत
दन्तं अन्तिमसारीरं तमह ब्रूमि ब्राहम्णं १८

४०१ वारि पोक्खरपत्ते'व आरग्गेरिव सासपो
यो न लिप्पति कानेसु तमह ब्रूमि ब्राम्हणं १९.

४०२ यो दुक्खस्स पजानाति इधेव खयमत्तनो
पन्नभारं विसञ्ञुत्तं तमह ब्रूमि ब्राम्हणं २०

४०३ गम्भीरपञ्ञं मेधावि मग्गामग्गस्स कोविदं
उत्तमत्थ अनुप्पत्तं तमहं ब्रूमि ब्राहम्णं २१

४०४ असंसट्ठं गहट्ठेहि अनागारेहि चूभयं
अनोकसारिं अप्पिच्छं तमह ब्रूमि ब्राहम्ण २२

४०५. निधाय दण्डं भूतेसु तसेसु थावरेसु च
यो हन्ति न घातेति तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं २३

४०६ अविरुद्धं विरुद्धेसु अत्तदण्डेसु निब्बुतं
सादानेसु अनादानं तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं २४

४०७ यस्स रागो च दोसो च मानो मक्खो च पातितो
सासपोरिव आरग्गा तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं २५

४०८ अकक्कसं विञ्ञापनिं गिरं सच्चं उदीरये
याय नाभिसजे किञ्चि तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं २६

४०९ योध दीघं व रस्सं वा अणुं थूलं सुभासुभं
लोके अदिन्नं नादियते तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं २७

४१० आसा यस्स न विज्जन्ति अस्मिं लोके परम्हि च
निरासयं विसंयुत्तं तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं २८

४११ यस्सालया न विज्जन्ति अञ्ञाय अकथंकथी
अमतोगधं अनुप्पत्तं तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं २९

४१२ योध पुञ्ञञ्च पापञ्च उभो सङ्गं उपच्चगा
असोकं विरजं सुद्धं तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ३०

४१३ चन्दं'व विमलं सुद्धं विप्पसन्नमनाविलं
नन्दीभवपरिक्खीणं तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ३१

४१४ यो इमं पलिपथं दुग्गं संसारं मोहमच्चगा
तिण्णो पारगतो झायी अनेजो अकथंकथी

अनुपादाय निब्बुतो तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ३२

४१५ योध कामे पहत्वान अनागारो परिब्बजे
कामभवपरिक्खीणं तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ३३

४१६ योध तण्हं पहत्वान अनागारो परिब्बजे
तण्हाभवपरिक्खीणं तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ३४

४१७ हित्वा मानुसकं योगं दिब्बं योगं उपच्चगा
सब्बयोगविसंयुत्तं तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ३५

४१८ हित्वा रतिञ्च अरतिञ्च सीतिभूतं निरूपधिं
सब्बलोकाभिभुं वीरं तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ३६

४१९ चुतिं यो वेदि सत्तानं उपपत्तिञ्च सब्बसो
असत्तं सुगतं बुद्धं तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ३७

४२० यस्स गतिं न जानन्ति देवा गन्धब्बमानुसा
खीणासवं अरहन्तं तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ३८

४२१ यस्स पुरे च पच्छा च मज्झे च नत्थि किञ्चनं
अकिञ्चनं अनादानं तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ३९

४२२ उसभं पवरं वीरं महेसिं विजिताविनं
अनेजं नहातकं बुद्धं तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं ४०

४२३ पुब्बेनिवासं यो वेदि सग्गापायञ्च पस्सति
अथो जातिक्खयं पत्तो अभिञ्ञावोसितो मुनी
सब्बवोसितवोसानं तमहं ब्रूमि ब्राम्हणं ४१

१— तीनो रत्नम धम्म के, बुद्ध धम्म औ संघ
शरण तीन की श्रृंखला, करे मोह को भंग
करे मोह को भंग, मनुज गहु बन ले ज्ञानी
श्रद्धा रख बुद्ध धर्म, मनुज तब बन ले ध्यानी
कहु परफुल कविराय, सजग नर चित को वीनो
बुद्ध धर्म के रत्न, शरण जा गहलो तीनो

२— हिंसा मत प्राणी करो, चोरी कर्म न लाव
झूठ कभी बोलो नहीं, व्यभिचार ठुकराव
व्यभिचार ठुकराव, कभी मत जी धर मदिरा
पंचशील ये कर्म, गहो ये मन धर पहरा
फिर परफुल दुहराय, कर्म कर गुन कर मंसा
चोरी झूठ कुचाल, मद्य ना मत कर हिंसा

३— हिंसा मत प्राणी करो, चोरी कर्म न लाव
झूठ कभी बोलो नहीं, व्यभिचार ठुकराव
व्यभिचार थुकराव, कभी मत जी धर मदिरा
विकाल भोजन त्याग, सुनो ना नृत्य मुजरा
माला गंध न लेप, ऊँच मन बैठ लगाओ
गहो न चाँदी स्वर्ण, शील दश चित्त धराओ

४— भोगे भव अति सुख लिये, जीवन का इक धेय
तपहिन अति कष्ट धरे, जीवन का द्विय धेय
जीवन का द्वि धेय, युगल दो छोर धरावे
इसके बीचो बीच, मध्यम पथ बुद्ध जनावे
कहु परफुल कवि राय, मार्ग नर मध्यम जोगे
नहीं अधिक कर कष्ट, नहीं भव छककर भोगे

५ अष्टांगिक मारग कहें सही दृष्टि सच काम
वाणी सम्यक जीविका, सम्यक गह व्यायाम
सम्यक गह व्यायाम, संकल्प सम्यक लावें
सम्यक गह फिर ध्यान, स्मृति सम्यक पावें
कह परफुल कविराय, मार्ग दो प्रज्ञा लावे
चार आचार शील, मार्ग दो योग सिखावे

६ बोधे जग को बुद्ध मुनि, चार आर्य सत्याय
दुक्ख दुख सब दुक्ख यहाँ, कारण तृष्णा, लाय
कारण तृष्णा लाय, दुक्ख पर मिटभी सकता
दुख निरोध का मार्ग, नाम पथ अष्टम धरता
कह परफुल कविराय तर्क पर मुनि सब सोधे
दुख कारण पथ रोक, सत्य कह चतुरम बोधे

७ तृतिया सत्यम मानिए, दुख काहै अवरोध
तृष्णा और निदान को, तज गह दुक्ख निरोध
तज गह दुःख निरोध, यही निब्बाण कहावे
यही दशा अथ मुक्त, यही संसार छुड़ावे
कह परफुल कविराय, कष्ट सब मूलम दुतिया
इसको जो नर त्याग, मोक्ष गह सत्यम तृतिया

८ प्रज्ञा उसको बोलिए, सही वस्तु सच ज्ञान
ठीक रुप में लख सके, ऐसा तब प्रज्ञान
ऐसा तब प्रज्ञान, सत्य तब दीप्ति लावे
औरों को दूँ मार्ग, हृदय गुण मधुरम जागे
कह परफुल कविराय, धर्म दे मन को आज्ञा
नर नर को दो ज्ञान, बोधि कह उसको प्रज्ञा

९ शक्ति वीर्य कह बोलिए, मन में जब यों व्याप्त
तब तक उद्यम में लगूँ, जब तक करूँ न प्राप्त
जब तक करूँ न प्राप्त, हृदय का प्रण हो ऐसा
इसमें हो निर्भीक, सबल हो मन जब ऐसा
कह परफुल कविराय, प्राणी कर ऐसी युक्ति
सेवा में उपयोग लगाओ, यही सब शक्ति

१० गह लो मन में कामना, करूँ सकल मैं दान
धन यौवन या प्राण ही, ऐसा लो अरमान
ऐसा लो अरमान, सोच नर हितकर पाऊँ
सबसे बढ़कर दान, ज्ञान का धर्म निभाऊँ
कह परफुल कविराय, दान गुण उत्तम गुन लो
दोउर में दे हर्ष, कर्म यह धम्मम गह लो

११ इच्छा गह नि:स्वार्थ की, पूर्ण बने तब प्राण
खुद जेहि संतोष धरे, ऐसा तब हो मान
ऐसा तब हो मान, न फटके मन में तृष्णा
कर दूँ खुद उत्सर्ग, त्याग की लो तब तृष्णा
कह परफुल कविराय, त्याग कह निर्मल शिक्षा
कर भव वेड़ा पार, त्याग की उज्जवल इच्छा

१२ शास्ता भुवन चीज कहे, नष्ट नष्ट सब नष्ट
जन्म-जरा-मर याम नर, कष्ट कष्ट सब कष्ट
कष्ट कष्ट सब कष्ट, सुगत यों ज्ञान करावे
भव के जन बहु मूढ़, तेहि को याद दिलावे
कह परफुल कविराय, बुद्ध जो हर्ष उघाता
जो ज्ञानी बन वीर, हर्ष जग लेता शास्ता

१३ जाति गोत्र के विप्र को, झूठ झूठ कह झूठ
जटा तिलक व लेप रखे, कर्म कांड कर लूट
कर्म कांड कर लूट, विप्र जो त्याग उठावे
पूर्ण ज्ञान ले द्विज, राग जो पाप मिटावे
कह परफुल कविराय, विप्र सच बुद्ध कहावे
विप्र बुद्ध ना भिन्न, अर्थ द्वि एक जनावे

१४ श्रमण बुद्ध ब्राह्मण कहें, सुधी धीर कह वीर
चक्षुमान निष्पाप कह, ध्यानी सुगत प्रवीर
ध्यानी सुगत प्रवीर, तथागत मुनि वर त्यागी
अमत प्रभंकर संत, साधु व ज्ञानी अरागी
कह परफुल कविराय, ऋजू गुरु आर्य कहावे
अर्हत ऋषि भयहीन, अशोक व मुक्त फिरावे

१५ ज्ञानी बुद्ध को मानिए, नर कुल में इक फूल
बहु मानव रज बीच में, अनुपम मोती झूल
अनुपम मोती झूल, पतझड़ तरु एक पत्ता
अन्धकार में दीप, सौर ज्यों आदित सत्ता
कह परफुल कविराय, जीव कुल ज्यों नर प्राणी
मूढ़ बीच त्यों बुद्ध, तथागत ध्यानी ज्ञानी

१६ मोक्ष स्वर्ग जो चाहिए, इसी जन्म इह लोक
नेक्खम ले विमुक्त फिरो, लेकर तन भू लोक
लेकर तन भू लोक, ज्ञान यह दशा दिलावे
अमृत पद निर्बाण, मनुज को यहाँ दिलावे
कह परफुल कविराय, कर्म से स्वर्ग कमाओ
ध्यान ज्ञान ले पुण्य, सजग बन मोक्ष फिराओ

१७ अपने मन में सोचिए, बार बार बहु बार
तभी धम्म को मानिए, मन जौं कर स्वीकार
मन जौं कर स्वीकार, तर्क पर तर्क उठावे
इसकी तह तह जाँच, पुनः तब पैर बढ़ावे
कह परफुल कविराय, वेद सम सत्य न गुनने
तभी मान कुछ सत्य, तर्क जब कह दे अपने

१८ अच्छा बनकर देखिए, प्रेम दया ले धर्म
ज्ञान ध्यान ले सोचिए, कुशल पुण्य गढ़ कर्म
कुशल पुण्य गढ़ कर्म, हर्ष तब वैसे पावे
रात गई झट प्रात, ध्रुव यह जैसे आवे
कह परफुल कविराय, वृत्ति जौं बनती स्वच्छा
लाख मारकर यतन, कष्ट न पावे अच्छा

१९ बोये जैसे बीज तुम, गहो फल वही रंग
जबसे पृथ्वी है बनी, यही चाल यही ढंग
यही चाल यही ढंग, पुण्य यह जान कमाओ
मानव जीवन श्रेष्ठ, व्यर्थ ना जीव गमाओ
कह परफुल कविराय, जाग जो कब से सोये
सोच कर्म के पौध, बीज तुम जैसे बोये

२० भंगुरता भव सत्य का, बहुत कठिन है ज्ञान
नाम रूप मिट जाँयगे, बहुत कठिन है मान
बहुत कठिन है मान, तथापि सत्य यही है
नाम रूप का लोप, बात यह सत्य सही है।
कह कवि परफुलराय, सत्य जो मन यह धरता
वही तथागत बुद्ध, भुवन जो लखता मिटता।

२१ भाषा धम्मम जानिए, समझेंगे तब धम्म
बोली शुद्धि शील गहे, पैठेंगे तब धम्म
पैठेंगे तब धम्म, धम्म दे उज्जवल जीना
ज्ञान सत्य का दीप, दिखावे निर्मल जीना
कह परफुल कविराय, जिसे है सुख की आशा
निर्मल बोली बोल, सीख कर मुनि की भाषा

२२ मनसा कह स्वाधीन तब, दुर्गुण ना दे भार
अशुद्धि जब दूर हुई, लिप्सा घृणा न भार
लिप्सा घृणा न भार, नहीं अज्ञान दबावे
दुष्ट भाव नहीं पास, चित्त सच शुद्ध सुहावे
कह परफुल कविराय, स्वाधीन मन लग वैसा
जैसे शीशा साफ, शुद्ध लग वैसी मनसा

२३ चाहे युद्ध प्रवीण हो, अपराधी क्या वीर
राज अर्थ की चाह से, लड़ता क्या वह वीर
लड़ता क्या वह वीर, भले ही जीता रण में
दुष्ट भाव का शूर, कलुष है उसके मन में
कह परफुल कबिराय, वीर वह रागम डाहे
वही वीर फिर वीर, लोक हित मिट जो चाहे

२४ शिक्षा सच प्रकाश लिये, उलथूँ धमपद बोल
जो भी पुस्तक को पढ़े, तथ्य ज्ञान ले खोल
तथ्य ज्ञान ले खोल, यही शिक्षा मर्यादा
यही काव्य का मोल, यही दीक्षा मर्यादा
कह कवि परफुल राय, प्रथम पर खुद कर दीक्षा
अपने को कर निष्ठ, बोल तब दुष्कर शिक्षा

२५ दृढ़ता व संकल्प गहो, ले मन अडिग विचार
उत्तम जो आचार है, कर वह पूर्ण प्रकार
कर वह पूर्ण प्रकार, सदा मन सजग बनाओ
मन तो हो चट्टान, हृदय पर सुमन बनाओ
कह परफुल कविराय, प्रण तब प्रण बन फबता
जब पीछे हित नेक, शुद्ध तब प्रण कह दृढ़ता

२६ मेत्ता की गह भावना, प्रेम दया ले ध्यान
जीवन में दो तत्व को, रखे एक ही म्यान
रखें एक ही म्यान, करुणा के संगम मैत्री
जीवन का आधार, दया सह अच्छी मैत्री
कह परफुल कविराय, मान नर करुणासत्ता
सकल जीव सम मान, दया सह प्रीतिह मेत्ता

२७ कल्याणी मित भावना, सुखकर परम विवाह
जीवन सागर पार में, सफलीभूत प्रवाह
सफलीभूत प्रवाह, करे यह पूरन जीना
जबतक जीवन साथ, गांठ यह सुखकर जीना
कह परफुल कविराय, गहे ये तत्वम प्राणी
दोनो पूरक तत्व, भाव मित सह कल्याणी

२८ करुणा सागर तैरिए, बुद्ध धर्म ले सीख
मानवता कराह रही, मांग दया की भीख
मांग दया की भीख, धम्म के प्रेमिल रसना
करुण-प्रेम तब जाग, त्याग जब स्वारथ तृष्णा
कह परफुल कविराय, चक्र तब घूमा सरना
मोह लोभ भव त्याग, बुद्ध जब तैरे करुणा

२९ मुदिता ब्रम्ह बिहार में, एक सबल आधार
हर्ष हृदय में लाइए, तज के द्वेष विकार
तज के द्वेष विकार, दया से मिश्रित खुशियाँ
घृणा डाह सब त्याग, करुणा से प्रेरित खुशियाँ
कह परफुल कविराय, हर्ष में उर वर फबता
दया प्रेम ले हर्ष, अतुल यह मधुरम मुदिता

३० स्थिरता चित पाइए, शांत परक जब चित्त
मस्तिक ऐसा चाहिए, संतुल मनसा वृत्त
संतुल मनसा वृत्त, तभी चित्त स्थिर भावे
निर्विकार मन शान्त, दशा चित अदभुत लावे
कह कवि परफुल राय, उपेक्खा मन स्थिरता
यही वृति अनमोल गहो नर चित स्थिरता

३१ वैसा धीरज चाहिए, सह तुम सकल प्रहार
भूल अन्य की जान भी, चोट करो स्वीकार
चोट करो स्वीकार, बिना ले कलुष हृदय में
अपराधी का नेक, सदा ले अपने मन में
कह कवि परफुल राय, लखो सब सुन्दर ऐसा
सब चीजें निष्पाप, गहो तब धीरज वैसा

३२ सच्चाई को मानिए, जैसे यह धन मूल
सत्य प्रिय को मान धरें, मन में पूर्ण समूल
मन में पूर्ण समूल, कभी भी सत्य न त्यागें
जो भी हो परिणाम, सत्य से दूर न भागें
कह परफुल नंद राय, मिले तो तब फल अच्छाई
झूठ जभी परित्याग, गहे तब नर सच्चाई

२

३३ समुत्पाद: प्रतीत्य कहें, द्वादस मूल निदान
सबके सब आधार ले, कारण करे प्रदान
कारण करे प्रदान, यही भव चक्र कहावे
एक एक सब बद्ध, भुवन नर बांध फसावे
कह परफुल कविराय, यही सच कारण दुतिया
कड़ी कड़ी सब बाँध, दुक्ख की बांधे गठिया

३४ जरा मरण हो जाति से, भवकर जाति प्रदान
भव को एक वृत्ति जने, जिसको कह उपदान
जिसको कह उपदान, इसे तृष्णा गढ़ लावे
वेदना जेहि मूल, जिसे स्पर्श जगावे
षड़ अयतन फिर मूल, नाम-रूप जो उगावे
विज्ञानम संस्कार, जिहि अविद्या, जन्मावे

३५ शास्ता शब्दम अर्थ है, शिक्षक के उपदेश
चक्षुमान वह नाम, है, नयना सच परिवेश
नयना सच परिवेश, तथागत सत्यम गाता
अमृत है वह ज्ञान, इसीसे अमृत कहाता
कह परफुल कविराय, बुद्धजो सत्यम चुगता
अनु अनु सब खोल, भुवन को कहता शास्ता

३६ कल्याणी गुण धम्म का, मानवहित स्वीकार
सब के हित ले विश्व में, कर उचित व्यवहार
कर उचित व्यवहार, धम्म यह कष्ट मिटावे
अंधकार भव व्याप्त; त्राणहित [illegible] दुखावे
कह कवि परफुल राय, सुनोनर जो अज्ञानी
मिट लो सब अज्ञान, गहो जब धम्म कल्याणी



कवि-भाष्यकार—

डा० पी० सी० राय 'हर्षेन्दु'

अगला काव्य प्रकाशन :-

पुरुषोत्तम बुद्ध